# व्याकरण प्रभा

नौवीं-दसवीं श्रेणी की पाठ्यपुस्तक

माध्यमिक शिक्षा विभाग, असम सरकार

# व्याकरण प्रभा

## प्रथम भाषा-हिंदी

(नौवीं-दसवीं श्रेणी की पाठ्यपुस्तक)

डॉ. ताराकांत झा

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी

Approved by the Board of Secondary Education, Assam, Guwahati, for Classes IX & X, Vide No. SEBA/EU/TXB/HN/127. Dated 28/2/74. ***FREE TEXTBOOK***

*प्रकाशक :*

**असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति**

गुवाहाटी-32

© सर्वस्वत्व प्रकाशकाधीन

प्रथम प्रकाशन : 1974

ग्यारहवाँ संस्करण : 2016

पुनर्मुद्रण : 2017

पुनर्मुद्रण : 2018

पुनर्मुद्रण : 2019

पुनर्मुद्रण : 2021

पुनर्मुद्रण : 2022

पुनर्मुद्रण : 2023

**असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु पाठ्यपुस्तक**

*(टैक्स्ट पेपर 70 जी.एस.एम. और कवर पेपर 165 जी.एस.एम. पर मुद्रित)*

**मुद्रक :** चंद्रकांत प्रेस
तरुण नगर, गुवाहाटी-5

**डॉ. रनोज पेगु,** एम.बी.बी.एस.
**मंत्री,** असम

शिक्षा, मैदानी जनजाति और
पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

# संदेश

विद्यालयीन शिक्षा का आवश्यक हिस्सा है – पाठ्यपुस्तक। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते हैं। विद्यार्थी ही हमारे राज्य व देश के भविष्य के वास्तविक संसाधन हैं। मानव सभ्यता की धारा शिक्षा द्वारा ही गतिमान होती है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में हमारी सरकार ने शिक्षा क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व दिया है।

मौजूदा राज्य सरकार ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक सफलता दिलाने के साथ-साथ उनके जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति तथा राज्य के कल्याण के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाओं को लागू किया है। **प्रज्ञान भारती** के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत **क वर्ग** से **द्वादश वर्ग** तक के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक अविराम रूप से दी जा रही है। सन् 2020 से हमारी सरकार ने इस योजना को स्नातक वर्ग तक विस्तारित किया है। समूचे राज्य में उच्चतर माध्यमिक और स्नातक वर्गों में नामांकन शुल्क की माफी की घोषणा होने से एक सकारात्मक पहल की शुरुआत हुई है।

समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के शिक्षार्थियों को मैट्रिक एवं उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के शुल्कों को माफ करने की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों की पोशाकों (यूनीफॉर्म) की आपूर्ति के लिए सरकार ने आवश्यक व्यवस्था की है। **आनंदराम बरुवा योजना** के जरिए मैट्रिक पास मेधावी छात्र-छात्राओं को **लैपटॉप** या उसके बदले में आर्थिक अनुदान देने की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के शिक्षण-मार्ग को सुगम बनाने के महान उद्देश्य से कार्यान्वित **प्रज्ञान भारती** योजना के तहत नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण जैसे पवित्र कार्यों के निष्पादन में योगदान दे रहे राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद तथा असम राज्यिक पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम एवं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को मैं धन्यवाद देता हूँ। ज्ञानार्जन की दिशा में हमारे विद्यार्थी निरंतर परिश्रम करते हुए राष्ट्र के संसाधन के रूप में अपने आप को निर्मित करने में सक्षम होंगे। इसी आशा के साथ मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

**(डॉ. रनोज पेगु)**
शिक्षा मंत्री, असम

# दो शब्द

निरक्षरता ही किसी राष्ट्र तथा समाज के विकास में रुकावट डालती है। समाज के लिए यह एक अभिशाप है। भारतवर्ष से पूर्णरूपेण निरक्षरता-उन्मूलन के उद्देश्य से केंद्रीय सरकार ने पूरे देश में 'शिक्षा का अधिकार कानून, 2009' लागू किया है। इसके अनुसार देश के विद्यालयों के कैरिकुलम और पाठ्यक्रमों में भी नवीनता लाई गयी है। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने नवीन पाठ्यक्रम के अनुरूप बच्चों को आकर्षित करनेवाली हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया है।

मुद्रण और प्रकाशन के क्षेत्र में शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक प्रकाशित कर यथासमय छात्र-छात्राओं तक पहुंचाना ही समिति का मुख्य उद्देश्य है। मूलत: इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए असम सरकार की ओर से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरित करने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की अनुकंपा से और भारत रत्न लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जी के नेतृत्व में सन् 1938 में संस्थापित असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का मुख्य लक्ष्य है-भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संचालित करना। इन कार्यक्रमों में हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन अन्यतम है। उल्लेखनीय है कि असम सरकार के निर्देशानुसार शैक्षिक वर्ष 1974 से ही समिति हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करती आई है। परवर्ती समय में केंद्र सरकार की सहायता से असम सरकार ने सन् 1986 से नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित की है।

सन् 2011 से राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के अनुसार नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें केंद्रीय रूप से राज्य के प्रत्येक शिक्षा खंड तक निर्धारित समयसीमा के अंदर सफलतापूर्वक पहुंचायी जा रही हैं। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन के चलते असम सरकार ने शिक्षावर्ष जनवरी के बदले अप्रैल महीने तक बढ़ा दिया है। वर्तमान परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखते हुए इस वर्ष भी असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने हिंदी पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति हेतु सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ हाथों ली हैं।

असम के शिक्षा क्षेत्र के आमूलचूल परिवर्तन और विकास के जरिए देश के भीतर एक उत्कृष्ट राज्य के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए असम सरकार ने विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाएँ चला रही हैं। वर्तमान में सरकार ने नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना को 12वीं कक्षा तक विस्तारित की है। इसके अतिरिक्त सरकार की ओर से मध्याह्न भोजन, पोशाक वितरण, गरीब परिवार के बच्चों का शुल्क माफी, गुणोत्सव कार्यक्रम के साथ-साथ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रा-छात्राओं को अनुदान राशि दी जा रही है। इसके अंतर्गत 'क' श्रेणी से 12वीं कक्षा तक नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण की यह प्रशंसनीय और शिक्षार्थी केंद्रित योजना है। सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को सफल बनाने में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पूरी निष्ठा व तत्परता के साथ काम करने के लिए संकल्पबद्ध है।

**डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया**
मंत्री
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

# प्रकाशकीय

वर्तमान शिक्षा-वर्ष से असम राज्य के हिंदी तथा अहिंदीभाषी स्कूलों की सभी हिंदी पुस्तकों के प्रणयन व प्रकाशन का भार राज्य सरकार ने असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पर सौंपा है। सरकार ने समिति पर जो अनुकंपा दिखायी है, इसके लिए समिति कृतज्ञ है।

पाठ्यपुस्तक रचना जहाँ पाठ्यक्रम के सुचारु अनुसरण की मांग करती है, वहीं उसमें विद्यार्थियों के स्तर के अनुकूल भाषा-शैली और शिक्षा-प्रणाली व पाठ्य-सामग्री की अधुनातन जानकारी भी अपेक्षित होती है । इसलिए पाठ्यपुस्तक लेखन का दायित्व दुहरा है ।

प्रस्तुत पुस्तक **व्याकरण प्रभा** राज्य के हिंदीभाषी स्कूलों के नवें-दसवें वर्गों की प्रथम भाषा की पाठ्यपुस्तक है। लेखक डॉ. ताराकांत झा ने बहुत ही कम समय में परिश्रमपूर्वक पुस्तक की रचना की है। सेल सदस्यों तथा जाँचक ने शीघ्रता से अपने अमूल्य सुझाव सहित इसकी जाँच कर दी है। माध्यमिक शिक्षा परिषद् की स्वीकृति के बाद अब इसे प्रकाशित किया जा रहा है।

कृपालु लेखक, सेल सदस्यों, जाँचक तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद् को समिति धन्यवाद देती है।

पुस्तक की भूल-त्रुटि के लिए सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

**राष्ट्रभाषा भवन**
गुवाहाटी
मार्च-1974

**महेश्वर महंत**
साहित्य सचिव

# विषय सूची


| अध्याय | | विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|---|---|
| पहला अध्याय | : | विषय प्रवेश | 1 |
| दूसरा अध्याय | : | वर्ण विचार | 4 |
| तीसरा अध्याय | : | शब्द विचार | 14 |
| चौथा अध्याय | : | पद-परिचय | 83 |
| पाँचवाँ अध्याय | : | सन्धि | 86 |
| छठा अध्याय | : | समास | 95 |
| सातवाँ अध्याय | : | उपसर्ग और प्रत्यय | 102 |
| आठवाँ अध्याय | : | वाक्य विचार | 107 |
| नौवाँ अध्याय | : | रस | 128 |

## पहला अध्याय

# विषय-प्रवेश

भाषा यह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है तथा दूसरों के विचार स्वयं ग्रहण करता है।

व्यापक दृष्टि से भाषा के तीन भेद किये जा सकते हैं-

(1) सांकेतिक भाषा (2) भाषित और (3) लिखित।

**( 1 ) सांकेतिक भाषा**- पशुओं, पक्षियों, गूँगों आदि की भाषाएँ सांकेतिक भाषा कही जाती है। यह भाषा अपने आप में पूर्ण नहीं होती; अत: व्याकरण में इनका विचार नहीं किया जाता।

**( 2 ) भाषित भाषा**- जब हम लिखकर विचार व्यक्त करते हैं, तो वह लिखित भाषा कहलाती है।

साधारणत: नजदीक के लोगों के लिए हम भाषित भाषा का प्रयोग करते हैं तथा जो हमारे सामने नहीं हैं, उनके लिए हम लिखित भाषा का प्रयोग करते हैं।

'भाषा' शब्द का निर्माण- भाष्+अ+टाप् से हुआ है। इसका अर्थ है- 'बोली या वाणी'।

भाषा परिवर्तनशील है। इसका विकास और अविकास राष्ट्र से संबंधित है। परिस्थिति के अनुसार इसमें परिवर्तन होता रहता है।

भाषा के संबंध में निम्नलिखित बातें स्मरणीय हैं-

(1) भाषा कोई पैतृक सम्पत्ति नहीं होती।

(2) यह एक अर्जित संपति है। समाज में रहकर प्राप्त की जा सकती है।

(3)भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।

(4) यह परिवर्तनशील है।

(5) साधारणत: यह कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर होती है, कारण, मनुष्य सरलता की ओर अधिक झुके हुए हैं।

## व्याकरण

'व्याकरण' शब्द का अर्थ है- शब्दों के शुद्ध रूपों का विवेचन। यह 'वि' और 'आ' उपसर्ग की 'क' धातु में 'स्युट्' प्रत्यय लगने से बनता है। संस्कृत में इसका विश्लेषण इस प्रकार किया गया है-

'व्याक्रियन्ते व्युत्पादन्ते शब्दा: वेत तत्।'

अर्थात् जिसके द्वारा शब्दों का व्युत्पादन किया जाय, उसे व्याकरण कहते हैं।

(वि+आ+करण)

**अर्थात्**- ''व्याकरण वह आत्मा है, जो भाषा के स्वरूप-सम्बन्धी नियमों का ज्ञान कराए।''

''व्याकरण भाषा की रचना या संघटन का परिचायक है। जैसे वास्तुशास्त्र मकान बनाने के नियम या ढंग बनाता है, उसी प्रकार व्याकरण भी भाषा का निर्माण बताता है।''

## व्याकरण का महत्व

भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण की आवश्यकता होती है। व्याकरण भाषा पर नियंत्रण रखता है, किन्तु वह उसके स्वच्छंद विकास में बाधा नहीं देता। भाषा पहले आती है और उसके आधार पर व्याकरण की रचना होती है। भाषा की प्रगति के अनुसार व्याकरण को अपने नियमों में परिवर्तन करना पड़ता है; फिर भी भाषा के लिखने और बोलने की अव्यवस्था को दूर करने के लिए तथा एक सर्वमान्य रूप स्थिर करने के लिए एक सर्वमान्य व्याकरण की आवश्यकता होती है। अत: भाषा तथा व्याकरण का अभिन्न सम्बन्ध है।

## व्याकरण का उद्देश्य

**व्याकरण का उद्देश्य है**- भाषा को विकृत होने से बचाना। व्याकरण की सहायता से हम वाक्यों, शब्दों तथा वर्णों की शुद्धता का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इससे हममें आत्मविश्वास आता है और हम शीघ्रता से भाषा सीख सकते हैं। व्याकरण की सहायता से हमारी बोलने तथा लिखने की क्षमता में वृद्धि होती है और भाषा का शुद्ध स्वरूप सामने आता है । यही कारण है कि जो लोग व्याकरण पढ़ने में अभिरुचि नहीं रखते, उन्हें भाषा का उचित ज्ञान नहीं हो पाता।

किसी भाषा के अर्थ का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए शब्द और वाक्य का ज्ञान अनिवार्य है। अत: व्याकरण का प्रयोजन का अध्ययन प्रधानत: निम्नलिखित तीन भागों में किया जाता है-

(1) वर्ण विचार। (2) शब्द विचार। (3) वाक्य विचार।

**( 1 ) वर्ण विचार**- व्याकरण का वह भाग है, जिसके अन्तर्गत वर्णों या अक्षरों के आकार, भेद, उच्चारण और उनके मिलाने की रीति बतायी जाती है।

**( 2 ) शब्द विचार**- व्याकरण का वह भाग है, जिसमें शब्द के भेद व्यवस्था और व्युत्पत्ति आदि का वर्णन हो।

**( 3 ) वाक्य विचार**- व्याकरण का वह भाग है, जिसमें वाक्यों के भेद वाक्य बनाने और अलग करने की रीति तथा विराम चिह्नों का वर्णन हो।

## अभ्यास

(1) भाषा किसे कहते हैं?

(2) व्याकरण की परिभाषा देते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालो।

(3) भाषा और व्याकरण में क्या सम्बन्ध है?

(4) हिन्दी व्याकरण के कितने भाग है? उन सबका वर्णन करो।

## दूसरा अध्याय

# वर्ण विचार

**वर्ण**- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंडन हो सके। जैसे- अ,इ, क्,म्। भाषा में वाक्य होते हैं। वाक्यों में शब्द होते हैं, और शब्दों में वर्ण होते हैं। जैसे- महेश आया। 'महेश' में 'म्+अ+ह+ए+श्+अ= छ: वर्ण तथा 'आया' में- आ+य्+आ=तीन वर्ण हैं।

**वर्णमाला**- वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

**वर्णों के भेद**

वर्णों के दो भेद हैं- (1) स्वर और (2) व्यंजन।

(1) **स्वर वर्ण**- स्वर वर्ण उन्हें कहते हैं जिनका उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से (स्वतंत्र रूप से) होता है। जैसे- अ, आ, इ, ई, उ,ऊ,ऋ, ए, ऐ, ओ, औ- ये बारह स्वर हैं।

**टिप्पणी**- आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ को उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार वर्ण कहने में बाधा भी हो सकती है। क्योंकि इनके टुकड़े भी हो सकते हैं। जैसे- अ+अ=आ, इ+ई=ई इत्यादि। फिर भी परम्परा से ये वर्ण कहलाते हैं, अत: इन्हें भी स्वर वर्ण कहा जाता है।

**व्यंजन**- क्, ख्, ग्, घ्, ङ, च्, छ, ज्, झ्, ञ इत्यादि् व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। शुद्ध व्यंजन वर्ण का उच्चारण बिना स्वरों की सहायता से नहीं हो सकता ।

व्यंजन वर्णों की संख्या तैंतीस हैं, जो इस प्रकार है-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |

त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श
ष स ह

## स्वरों के भेद

स्वर दो प्रकार के होते हैं-

(1) ह्रस्व स्वर। (2) दीर्घ स्वर।

**( 1 ) ह्रस्व स्वर**- ह्रस्व स्वर के उच्चारण में समय कम लगता है। जैसे- अ, इ, उ, ऋ इत्यादि । इनका नाम 'मूल स्वर' भी है; क्योंकि ये स्वर दूसरे स्वर के मेल से नहीं बने है।

**( 2 ) दीर्घ स्वर**- दीर्घ स्वर वे स्वर है, जिनके उच्चारण में मूल स्वर से दुगुना समय लगता है। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ औ। इन्हें 'संयुक्त स्वर' भी कहते हैं, क्योंकि इनमें दो स्वर मिले रहते हैं। जैसे-

आ = अ + अ
ई = इ + इ
ऊ = उ + उ
ए = अ + इ
ऐ = अ + ए
ओ = अ + उ
औ = अ + ओ।

जैसे- हे राम!!! इधर आओ। हे प्रभो!!! अरे मोहन!!!

**मात्राकाल**- किसी स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे मात्राकाल कहते हैं। ह्रस्व स्वर में एक मात्राकाल लगता है दीर्घ स्वर में दो मात्राकाल।

## मात्राएँ

मात्रा- जब किसी स्वर को किसी व्यंजन में मिलाया जाता है तो उसका रूप छोटा हो जाता है। स्वर के उस छोटे रूप या चिह्न को मात्रा कहते हैं। जैसे-

| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ा | ि | ी | ु | ू | ृ | े | ै | ो | ौ |

अ की पृथक मात्रा नहीं होती। व्यंजन का हलन्त होना ही इसका बोधक होता है। तात्पर्य यह कि प्रत्येक व्यंजन कम-से-कम अ से युक्त होकर ही उच्चारित होता है। जैसे-

च छ ज आदि

## उच्चारण के अनुसार स्वरों के भेद

उच्चारण के आधार पर स्वरों के दो भेद होते हैं- (1) अनुनासिक और (2) निरनुनासिक।

**( 1 ) अनुनासिक**- जब स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका से होता है, तब वे अनुनासिक कहलाते हैं। अनुनासिक स्वर के ऊपर चन्द्रबिन्दु ( ँ ) लगाया जाता है। जसे- माँ, चाँद, दाँत आदि।

**( 2 ) निरनुनासिक**- जब स्वरों का उच्चारण केवल मुख से होता, तब वे निरनुनासक कहलाते हैं। इनके ऊपर चन्द्रबिन्दु ( ँ ) नहीं लगता। जैसे- अ, आ, इ, ई इत्यादि।

## व्यंजनों के मुख्य भेद

व्यंजनों के मुख्य तीन भेद हैं-

(1) स्पर्श (2) अन्तस्थ (3) ऊष्म

**( 1 ) स्पर्श**- वर्णमाला के पच्चीस वर्ण अर्थात् 'क' से 'म' तक स्पर्श माने जाते हैं, जैसे-

कवर्ग - क् ख् ग् घ् ङ्

चवर्ग – च् छ् ज् झ् ञ
टवर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्
तवर्ग – त् थ् द्, ध्, न्
पवर्ग – प् फ् ब् भ् म्

**( 2 ) अन्तःस्थ**- य् र्, ल् व्

**( 3 ) ऊष्म**- श् ष् स् ह

क् से म् तक के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों पर स्पर्श करती है। अत: इन वर्णों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

य् र् ल् व् स्वर और व्यंजन के मध्य स्थित हैं, इनके उच्चारण में जिह्वा का पूरा स्पर्श मुख से किसी विशेष भाग से नहीं होता; इसलिए ये वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।

श् ष् स् ह् के उच्चारण में श्वास की प्रबलता रहती है और बोलते समय एक विशेष ध्वनि निकलती है, इसलिए इन वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

स्वर और व्यंजन के अतिरिक्त वर्णों का एक अन्य भेद भी है, जिसे अयोगवाह भी कहते हैं। ये तीन प्रकार के हैं-

(1) अनुस्वार ( ं )
(2) चन्द्रबिन्दु अथवा अनुनासिक ( ँ )
(3) विगर्स ( : )

अनुस्वार के उच्चारण के समय श्वास नाक के द्वारा निकाला जाता है; परंतु चन्द्रबिन्दु का उच्चारण मुख तथा नाक दोनों से होता है। जहाँ अनुस्वार का पूरा उच्चारण हो, वहाँ ( ं ) का प्रयोग होता है। जैसे कंस । किन्तु, जहाँ अनुस्वार आधा या हल्का बोला जाए वहाँ चन्द्रबिन्दु ( ँ ) का प्रयोग होता है। जैसे- हँसना।

क्ष, त्र, ज्ञ को कुछ विद्वान स्वतंत्र व्यंजन मानते हैं, किन्तु संयुक्त व्यंजन स्वतंत्र व्यंजन नहीं है। क्ष, त्र, ज्ञ दो-दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। जैसे-

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र्
ज्ञ = ज + ञ

## उच्चारण स्थान

मुख के जिस भाग से जिस अक्षर का उच्चारण होता है, उसे उस अक्षर का उच्चारण स्थान कहा जाता है। ये उच्चारण स्थान निम्न लिखित हैं- कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ और नासिक।

## उच्चारण - स्थान तालिका

| वर्ण | उच्चारण स्थान | नाम |
|---|---|---|
| अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, | कण्ठ | ये वर्ण कण्ठ्य कहलाते हैं। |
| इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श, | तालु | ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं। |
| ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष | मूर्द्धा | ये वर्ण मूर्द्धन्य कहलाते हैं। |
| त, ध, द, ध, न, ल, स | दन्त | ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं। |
| उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म, | ओष्ठ | ये वर्ण ओष्ठय कहलाते हैं। |
| प, ए | कण्ठ-तालु | ये वर्ण कण्ठतालव्य कहलाते हैं। |
| ओ, औ | कण्ठोष्ठ | ये वर्ण कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं। |
| य | दन्तोष्ठ | ये वर्ण दन्तोष्ठ्य कहलाते हैं। |
| अनुनासिक स्वर तथा वर्गों के पाँचेवें अक्षर ङ, ञ, ण, न, म | नासिका | ये वर्ण नासिक्य कहलाते हैं। |

## प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में होने वाले यत्न 'प्रयत्न' कहलाते हैं। प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं-

(1) आभ्यान्तर प्रयत्न और (2) बाह्य प्रयत्न।

(1) **आभ्यान्तर प्रयत्न**- ध्वनि उत्पन्न होने के पहले बागिन्द्रिय द्वारा जो प्रयत्न किया जाता, उसे आभ्यान्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके चार भेद हैं- (1) विवृत, (2) स्पृष्ट (3) ईषत्स्पृष्ट (4) इषद्विवृत।

(1) विवृत- सभी स्वर वर्णों का प्रयत्न विवृत प्रयत्न होता है। क्योंकि इसके उच्चारण से मुख पूर्ण रूप से विवृत (खुला) रहता है। जैसे- अ, आ, इ, ई आदि।

(2) स्पृष्ट- सभी स्पर्श वर्णों का (क से म) तक स्पृष्ट प्रयत्न होता है। क्योंकि उनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के भिन्न-भिन्न भागों- तालु आदि का स्पर्श करती है।

(3) ईषत्स्पृष्ट- अन्तस्थ वर्ण (य, र, ल, व) का प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न है, क्योंकि इनके उच्चारण के समय जिह्वा का उच्चारण स्थान से थोड़ा स्पर्श होता है।

(4) ईषद्विवृत- ऊष्म वर्णों का प्रयत्न (श, ष, स, ह) ईषद्विवृत प्रयत्न होता है; क्योंकि इनके उच्चारण में मुख थोड़ा (ईषत्) खुला रहता है।

बाह्य प्रयत्न के प्रधान चार भेद हैं-

(1) घोष (2) अघोष (3) अल्पप्राण (4) महाप्राण।

**( 1 ) घोष** - जिन वर्णों के उच्चारण में केवल नाद का प्रयोग होता है, वे घोष कहलाते हैं।

सभी स्वर तथा शेष व्यंजन घोष कहे जाते हैं; क्योंकि इनके उच्चारण में नाद का योग रहता है।

(2) **अघोष**- जिन वर्णों के उच्चारण केवल श्वास का प्रयोग होता है, वे अघोष कहलाते हैं।

वर्णों का प्रथम तथा द्वितीय वर्ण अर्थात् क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ तथा श, ष, स वर्ण अघोष होते हैं; क्योंकि इनके उच्चारण में केवल श्वास का प्रयोग होता है।

**(3) अल्पप्राण**- जिन वर्णों के उच्चारण में थोड़ा-सा श्वास लेना पड़ता है, वे अल्पप्राण कहलाते हैं। ये वर्ण निम्नलिखित हैं-

(क) - सारे स्वर।

(ख)- वर्णों के प्रथम, तृतीय तथा पंचम अक्षर।

(ग) - य, र, ल, व।

**महाप्राण**- जिन वर्णों के उच्चारण में अल्पप्राण की अपेक्षा अधिक श्वास लेना पड़ता है, वे वर्ण महाप्राण कहलाते हैं। ये निम्नलिखित हैं-

(क) - वर्गों के दूसरे और चौथे अक्षर।

(ख) - श, ष, स, ह।

(ग) - : विसर्ग।

## संयुक्ताक्षर

जब दो व्यंजनों के बीच कोई स्वर नहीं रहता, तब वे मिल जाते हैं, और संयुक्ताक्षर कहलाते हैं। जैसे- न्याय, कर्म, प्यारा।

**द्वित्व**- जब एक जैसे दो व्यंजन मिलते हैं, तो उस मेल को द्वित्व कहते हैं। जैसे- पन्ना, पक्का, रस्सा।

## संयुक्त करने की विधि

(क) जिन वर्णों के अन्त में खड़ी पाई ( ।) रहती है (जैसे– त, प, स, य आदि), तो उनके संयुक्त होने में अंतिम की खड़ी पाई ( ।) हट जाती है। जैसे– उत्सव, प्यार, भाग्य, भाज्य, कथ्य।

(2) जो वर्ण बिना खड़ी पाई ( ।) के होते हैं (जैसे ट, ठ, ड, ढ, द आदि), उन्हें साधारणतः दो तरह से संयुक्त किया जाता है। जैसे– (क) हलन्त ( ् ) लगाकर, जैसे– मिट्टी, चिट्ठी।

(ख) एक साथ मिलकर, जैसे– मिट्टी, चिट्ठी।

इसमें जो आधा वर्ण रहता है, उसी में पूर्ण वर्ण आकर मिल जाता है। जैसे– विद्या, अथवा विद्या।

(3) यदि 'र्' व्यंजन के पहले आये तो वह उस व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है। जैसे–

धर्म= धर्म ।          कर्म= कर्म।

(4) यदि 'र्' व्यंजन के बाद में आये तो वह इस प्रकार लिखा जाता है।

जैसे– चक्र= चक्र।          वज्र= वज्र।

विप्र = विप्र।

(5) ह् और र को जब मिलाकर लिखा जाता है, तो उसे इस प्रकार लिखा जाता है–

ह+र = ह्र= ह्रस्व।

(6) ट् ठ् ड् द् के नीचे र् को इस प्रकार मिलाते हैं–

ट्+र= ट्र= (ट्रंक)।

ड्+र= ड्र= (ड्राम)।

(7) कहीं-कहीं तो संयुक्त वर्णों का रूप ऐसा बदल जाता है कि उनमें मूल वर्णों के रूप का कुछ पता ही नहीं चलता। जैसे-

ज्+ञ= (ज्ञान, ज्ञापन)।

क्+ष= क्ष (क्षमा)।

त्+र= त्र (मित्र)

## स्वराघात

शब्दों का उच्चारण करते हुए किसी वर्ण पर विशेष बल देने को स्वराघात कहते हैं। संयुक्त वर्ण के पहले स्वर पर अधिक बल दिया जाता है। जैसे- सत्य, पथ्य आदि।

(1) साधारणत: अकारान्त शब्द के अंतिम वर्ण का उच्चारण अपूर्ण रहता है- यथा- राम, नर, कल, तेल आदि का उच्चारण क्रमश: राम्, नर्, कल्, तेल् जैसे होता है। ऐसी स्थिति में उससे पूर्व के वर्ण पर अधिक बल पड़ता है।

(2) संयुक्त वर्ण के पहले स्वर पर अधिक बल दिया जाता है। जैसे- पूज्य, तथ्य।

(3) अनुस्वार तथा विसर्ग सहित स्वर के उच्चारण में भी बल दिया जाता है। जैसे- दु:ख, अत:।

## अभ्यास

(1) 'वर्ण' कितने प्रकार के होते हैं? वर्ण और वर्णमाला में क्या भेद है।

(2) निम्नांकित शब्दों में कितने वर्ण हैं- कलम, लाभ, किताब।

(3) स्वर किसे कहते हैं? इसके भेद उदाहरण सहित बताओ।

(4) व्यंजन किसे कहते हैं। हिन्दी भाषा में कितने व्यंजन है?

(5) अंत:स्थ वर्ण कितने हैं ?

(6) अल्पप्राण और महाप्राण से क्या समझते हो ?

(7) स्पर्श व्यंजन कौन-कौन हैं ?

(8) उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ?

(9) निम्नलिखित वर्णों का उच्चारण स्थान बताओ-

क, ख, ङ, ज, झ, त, थ, द, फ, ब, य, म, र

(10) प्रयत्न से तुम क्या समझते हो ?

(11) स्वराघात किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाओ।

(12) क्ष, त्र, ज्ञ किन-किन अक्षरों के संयोग से बनते हैं ?

### तीसरा अध्याय

# शब्द विचार

**शब्द की परिभाषा** - एक या एक से अधिक वर्णों के योग से बनी हुई सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे- अ (आकाश), राम, गंगा, पहाड़, विद्यालय इत्यादि।

साधरणत: शब्द के दो भेद होते हैं- (1) सार्थक और (2) निरर्थक।

(1) जिन शब्दों का कुछ अर्थ होता है, वे सार्थक कहलाते हैं। जैसे-दूध, मकान, मीठा, पण्डित आदि।

(2) जिन शब्दों का कोई अर्थ न हो, वे निरर्थक कहलाते हैं। जैसे- चें-चें, चू-चू, हें-हें इत्यादि।

शब्दों का वर्गीकरण पाँच प्रकार के से किया जाता है।

(1) व्युत्पत्ति के अनुसार (2) उत्पत्ति के अनुसार (3) प्रयोग के अनुसार (4) रूपान्तर के अनुसार और (5) शब्दार्थ के अनुसार।

(1) व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं-(1) रूढ़

(2) यौगिक और (3) योगरूढ़।

**( 1 ) रूढ़**- उन शब्दों को रूढ़ कहते हैं, जिनका यौगिक अर्थ नहीं किया जा सकता। जैसे- घोड़ा, घड़ी इत्यादि। इनमें 'घो' तथा 'ड़ा' का अलग से कोई अर्थ नहीं होगा।

**( 2 ) यौगिक**- यौगिक उन शब्दों को कहते हैं, जो शब्द दूसरे शब्दों या प्रत्यय के योग से बनते हैं। जैसे- पाठशाला (पाठ+शाला), पुस्तकालय (पुस्तक+आलय)। इनके खण्ड सार्थक होते हैं।

**( 3 ) योगरूढ़**- योगरूढ़ उन शब्दों को कहते हैं जिनकी रचना तो यौगिक के शब्दार्थों के योग से हुई हो पर यौगिक अर्थ को छोड़कर केवल विशेष अर्थ ही प्रकट होते हों। जैसे- पंकज। पंकज का यौगिक अर्थ है- ''कीचड़ से जन्म लेने वाला''। कीचड़ से बहुत-सी चीजें उत्पन्न होती हैं किन्तु सभी को पंकज नहीं कहा जा सकता, इसका विशेष अर्थ है कमल। इसी प्रकार जलज, लम्बोदर आदि शब्द योगरूढ़ कहे जाते हैं।

उत्पत्ति के विचार से चार भेद हैं-(1) तत्सम, (2) तद्भव, (3)देशज, (4) विदेशी ।

**( 1 ) तत्सम**- तत्सम के शब्द हैं जो संस्कृत के हैं और बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- सत्य, अक्षर, अतिथि, अनन्त, मधु, घृत, माता आदि।

**( 2 ) तद्भव**- तद्भव वह शब्द है, जो जिनकी उत्पत्ति तो संस्कृत से हुई है, किन्तु हिन्दी में उनके रूप का कुछ परिवर्तन हो गया है। जैसे- कान, फूल, हाथ, भी आदि। वे शब्द क्रमशः संस्कृत के कर्ण, अग्नि, पुष्प, हस्त, घृत से बने हैं।

**( 3 ) देशज**- देशज वे शब्द हैं, जो संस्कृत के शब्दों कोई सम्बंध नहीं रखते । ये शब्द स्थानीय बोलियों से आए हुए होते हैं अथवा आवश्कतानुसार बना लिए जाते हैं। जैसे- झगड़ा, पगड़ी, लोटा, जूता आदि।

**( 4 ) विदेशी**- विदेशी भाषाओं के आये हुए शब्द जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, विदेशी कहलाते हैं। जैसे- रेल, स्टेशन,अखबार, कमर, तार इत्यादि।

हिन्दी में विदेशी शब्द अनेक भाषाओं से बने हैं, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं जैसे- चश्मा, ईमान, टेलीफोन, टिकट, नोटिस, थर्मामीटर इत्यादि।

**प्रयोग के विचार पर शब्द के आठ भेद हैं-**

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) विशेषण (4) क्रिया (5) क्रिया विशेषण (6) सम्बंधबोधक (7) समुच्चयबोधक (8) विस्मयादिबोधक।

**( 1 ) संज्ञा**- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, किताब, लम्बाई इत्यादि।

**( 2 ) सर्वनाम**- संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे-

मैं, तुम, वह इत्यादि।

**( 3 ) विशेषण**- संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे- लाल, काला, चतुर।

**( 4 ) क्रिया**- जिससे किसी काम का करना या होना ज्ञात हो, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-

उठना, बैठना, हँसना, देखना।

**( 5 ) क्रिया-विशेषण**- जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता प्रकट हो, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे-

धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, (धीरे-धीरे चलो)।

**( 6 ) सम्बन्धबोधक**- संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध बताने वाले शब्दों को 'सम्बन्ध बोधक' कहते हैं। जैसे-

पेड़ के नीचे कुछ लोग बैठे हैं। नदी के निकट एक वृक्ष है। इन दोनों वाक्यों में 'नीचे' और 'निकट' सम्बन्ध स्थापित करने वाले शब्द हैं, अत: ये सम्बन्ध बोधक शब्द है।

**( 7 ) समुच्चयबोधक**- जो अव्यय दो शब्दों या वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं। जैसे-

परंतु, लेकिन, क्योंकि, और।

राम घर जाता है, लेकिन मोहन नहीं जाता।

( 8 ) **विस्मयादिबोधक**- ये शब्द जिनसे (आकस्मिक) हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि मन में भाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसे-

हाय, आह, छिः, अरे, ओह इत्यादि।

(हाय मेरा सर्वनाश हो गया।)

रूपान्तर के अनुसार शब्दों के दो भेद होते हैं- (1) विकारी और (2) अविकारी।

( 1 ) **विकारी शब्द**- जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के अनुसार कोई विकार या परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। जैसे-

लड़का-लड़के, मोटा-मोटी।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

( 2 ) **अविकारी शब्द**- लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण जिन शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। ये शब्द अव्यय होते हैं। जैसे- धीरे-धीरे।

क्रिया-विशेषण, सम्बन्ध सूचक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक शब्द अविकारी है।

शब्दार्थ के विचार से शब्दों के तीन भेद हैं

(1) वाचक (2) लक्षक (3) व्यंजक।

( 1 ) **वाचक**- रूढ़ या लोक-प्रसिद्ध अर्थ को जताने वाले शब्दों को 'वाचक' कहते हैं। इनसे प्रकट होने वाले अर्थ, वाच्यार्थ कहलाता है। इनमें अभिधा शक्ति की प्रधानता रहती है। जैसे-

घोड़ा। 'घोड़ा' शब्द सुनते ही किसी विशेष पशु का बोध हो जाता है।

( 2 ) **लक्षक**- जब शब्द के मुख्य अर्थ से हटकर किसी प्रसिद्ध अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तब उस शब्द को 'लक्षक' और अर्थ को 'लक्ष्यार्थ' कहा जाता है। जैसे- तुम गदहा हो। यह कहने से 'गदहा' शब्द के मूर्ख अर्थ का बोध होता है। यहाँ 'गदहा' शब्द का मुख्य अर्थ छोड़कर अन्य विशेष अर्थ लिखा गया है। अत: 'गदहा' लक्षक शब्द हुआ।

( 3 ) **व्यंजक**- जिन शब्दों के अर्थबोध में वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त एक विशेष अर्थ को बोध हो, उस शब्द को 'व्यंजक तथा उसके अर्थ की 'व्यंग्यार्थ' कहा जाता है। जैसे-
सूर्य निकल आया। यदि वह वाक्य माता-पिता अपने सोते हुए लड़के के लिए प्रयोग करें तो इसका अर्थ सूर्य निकलना वाच्यार्थ के अतिरिक्त अब और अधिक सोने का समय नहीं अर्थ प्रकट होता है।

इस प्रकार 'सूर्यास्त हो गया' कहने से किसान समझेगा 'अब घर लौटना चाहिए।' विद्यार्थी समझेगा कि 'अब खेलना बंद करना चाहिए।' तथा तपस्वी समझेगा 'अब संध्याकालीन पूजा (संध्या वन्दना) का समय हो गया।' यहाँ व्यंग्यार्थ का चमत्कार है।

## अभ्यास

(1) शब्द किसे कहते हैं?

(2) शब्द के कितने भेद हैं?

(3) दस तत्सम शब्द लिखो।

(4) यौगिक तथा योगरूढ़ शब्द में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाओ।

(5) प्रयोग के विचार से शब्द के कितने भेद हैं? उदारहण सहित वर्णन करो।

(6) शब्दार्थ (अर्थ) के विचार से शब्द के कितने भेद हैं?

(7) विकारी तथा अविकारी का तात्पर्य समझाओ।

(8) उत्पत्ति के अनुसार शब्द के कितने भेद हैं?

(9) तद्भव और देशज शब्दों के तीन-तीन उदाहारण दो।

## संज्ञा

संज्ञा उस शब्द को कहते हैं, जिससे किसी वस्तु, स्थान, भाव, मनुष्य या गुण के नाम का बोध हो।

जैसे- राम, बुढ़ापा, घोड़ी, सज्जनता, दूध, बादाम।

अर्थ के अनुसार संज्ञा के 5 भेद हैं-

(1) व्यक्तिवाचक, (2) जातिवाचक, (3) द्रव्यवाचक, (4) भाववाचक और (5) समूहवाचक।

**(1) व्यक्तिवाचक**- जिस शब्द से एक ही व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे-
न्यूटन, अशोक, राम, दशरथ, कृष्ण, हिमालय, गंगा, ब्रह्मपुत्र आदि।

**(2) जातिवाचक**- जिस शब्द से एक वर्ग अथवा जाति के सब पदार्थों अथवा व्यक्तियों का एक जैसा बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- गाय, बैल, नदी, तोता, मनुष्य, पहाड़, वृक्ष, पुस्तक आदि।

**(3) द्रव्यवाचक**- जिस शब्द से किसी द्रव्य का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सोना, चाँदी, पानी, घी, खाँड़, दूध आदि।

**द्रष्टव्य**- अर्थानुसार एक ही संज्ञा जातिवाचक अथवा द्रव्यवाचक हो सकती है। जैसे-

**जातिवाचक**- आजकल बाजारों में कई प्रकार के घी बिकते हैं।

**द्रव्यवाचक**- जो घी खाता है, वह हृष्टपुष्ट हो जाता है।

**( 4 ) समूहवाचक**- जिस शब्दों से अनेक पदार्थों अथवा व्यक्तियों के समूह का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, झुंड, गुच्छा आदि।

**द्रष्टव्य**- समूहवाचक संज्ञा भी जातिवाचक संज्ञा ही है; क्योंकि अनेक सेनाएँ बहुत से झुंड और बहुत से गुच्छे भी होते हैं।

**( 5 ) भाववाचक संज्ञा**- जिस शब्द से किसी पदार्थ के स्वभाव या गुण अथवा उसकी अवस्था या क्रिया का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| स्वभाव | - | सरलता, नम्रता, क्रूरता। |
| गुण | - | वीरता, गर्मी, सर्दी। |
| अवस्था | - | निद्रा, स्वास्थ्य। |
| क्रिया | - | दौड़-धूप, चढ़ाव, बहाव। |

भाववाचक संज्ञा तीन प्रकार के शब्दों से बनायी जाती है-

(1) जातिवाचक संज्ञा से जैसे- बच्चा से बचपन, मीत से मिताई, दास से दासत्व।

(2) विशेषण से, जैसे-
ठंडा से ठंडक,
नम्र- नम्रता,
खट्टा- खटाई,
चालाक- चालाकी।

(3) धातु से, जैसे-
भर से भार,
बह से बहाव,
लड़ से लड़ाई।

**द्रष्टव्य**- सर्वनाम से भी भाववाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे-

अहं से अहंकार,

मम से ममत्व।

**द्रष्टव्य**- जातिवाचक को छोड़कर प्राय: सभी संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। जैसे-

व्यक्तिवाचक - राम आ रहा है।

द्रव्यवाचक - पाँच सेर घी, पाँच मन चना।

समूहवाचक - सेना आ गई।

भाववाचक - उससे झगड़ा हो गया।

जातिवाचक संज्ञायें दोनों वचनों में प्रयुक्त की जाती है। जैसे-

लड़का आ रहा है- लड़के आ रहे हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार कुछ लोग शब्द के भेद को भी संज्ञा के भेद ही मानते हैं।

इस दृष्टि से (व्युत्पत्ति के अनुसार) संज्ञा के तीन भेद होते हैं-

(1) रूढ़ि (2) यौगिक और (3) योगरूढ़ि।

(1) **रूढ़ि**- रूढ़ि शब्द वे हैं, जो परम्परा से किसी विशेष अर्थ में आते हैं और जिनका कोई खण्ड सार्थक नहीं होता । जैसे-

घोड़ा, घर, हाथी, धन आदि।

इसमें 'घो' और 'ड़ा' दोनों खण्ड अलग-अलग निरर्थक है। ये दोनों मिलकर घोड़ा शब्द बनाते हैं, जो रूढ़ि से एक प्रकार के चौपाये प्राणी के अर्थ में आता है।

(2) **यौगिक**- यौगिक शब्द वे हैं, जो दो शब्दों अथवा शब्द और प्रत्यय मिलकर बनते हैं। जैसे-

बालबोध, घासवाला, पाठक, जीवधारी आदि।

(3) **योगरूढ़ि**- यौगिक शब्द योगरूढ़ि कहलाते हैं, जो परम्परा से किसी विशेष सांकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं। जैसे- गणेश, लम्बोदर, गिरिधर।

ये अव्यवार्थ के अनुसार क्रम से समूह के स्वामी, लम्बे पेट वाले और पहाड़ रखने वाले के अर्थ में है; पर इनसे क्रम से गजानन, गणपति और श्रीकृष्ण का सांकेतिक अर्थ प्रकट होता है।

### अभ्यास

(1) संज्ञा किसे कहते हैं? संज्ञा के कितने भेद होते हैं? उदाहरण द्वारा समझाओ।
(2) जातिवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा में क्या अन्तर है? स्पष्ट करो।
(3) भाववाचक संज्ञाएँ किन-किन प्रकार के शब्दों से बनती है? उदाहरण सहित समझाओ।
(4) व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञा के कितने भेद हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।
(5) नीचे लिखे शब्दों में से संज्ञाओं के प्रकार चुनो-
कमल, अनिल, मनुष्य, सभा, सेना, घी, दही, घर, बुढ़ापा, पानी, नम्रता, गाय, मानव, लड़की, बगीचा।

## लिंग

**परिभाषा**- संज्ञा के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।

हिन्दी में दो लिंग होते हैं-

(1) **पुंलिंग** और (2) **स्त्रीलिंग।**

जबकि अनेक भाषाओं में तीन लिंग माने जाते हैं- पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक।

पुरुष जाति के बोध से पुंलिंग स्त्री जाति के बोध से 'स्त्रीलिंग' तथा जड़त्व के बोध से 'नपुंसक' शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् पुरुष जाति के नाम को पुलिंग, स्त्री जाति के नाम को स्त्रीलिंग तथा जो अचेतन पदार्थ हैं, उन्हें नपुंसक कहते हैं।

हिन्दी में केवल दो ही लिंग हैं। अत: अप्राणीवाचक शब्दों के लिंग-निर्णय में कुछ परेशानियाँ होती हैं। क्योंकि अप्राणीवाचक शब्द कुछ पुलिंग माने जाते हैं, तो कुछ स्त्रीलिंग। किन्तु इसके पूर्व वैज्ञानिक तथा ठोस नियम नहीं है। अत: ऐसे शब्दों के व्यवहार पर ध्यान देना पड़ता है। जैसे-

रास्ता पुलिंग है,किन्तु राह- स्त्रीलिंग। जबकि अर्थ दोनों का एक ही है।

हिन्दी में क्रिया कर्ता के लिंग से प्रभावित होती है। लिंग में परिवर्तन के कारण क्रिया के लिंग में भी परिवर्तन हो जाता है। जैसे- लड़का आता है। (पुलिंग)

लड़की आती है। (स्त्रीलिंग)

टिप्पणी- हिन्दी में कुछ शब्द दोनों ही लिंगों में होते हैं। जैसे- मंत्री, मित्र आदि।

प्राणीवाचक शब्दों के लिंग-निर्णय में कुछ कठिनता नहीं होती, अप्राणीवाचक शब्दों के लिंग-निर्णय के लिए यदि निम्नलिखित नियमों पर ध्यान दिया जाय तो सुविधा होगी।

नीचे लिखे अप्राणीवाचक शब्द पुलिंग होते हैं-

(1) **पहाडों के नाम**- जैसे- हिमालय, विन्धयाचल आदि।

(2) **वृक्षों के नाम**- आम, कटहल, पीपल आदि।

अपवाद- नीम, इमली, जामुन, खिरनी, ककड़ी, आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं।

(3) **ग्रहों के नाम**- सूर्य, चंद्र, मंगल बुध आदि।

अपवाद- पृथ्वी स्त्रीलिंग है।

(4) **दिन और महीनों के नाम**- रविवार, सोमवार, मंगलवार, चैत, वैशाख, जेठ आदि।

(5) **अनाजों के नाम**- धान, चावल, गेहूँ, चना आदि।

अपवाद- ज्वाार, दाल, अरहर, मटर, मूंग, आदि स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

(6) **धातुओं के नाम**- सोना, लोहा, ताँबा आदि।

अपवाद- चाँदी स्त्रीलिंग है।

(7) **रत्नों के नाम**- हीरा, मोती, मूंगा आदि।

अपवाद- मणि, चुन्नीं आदि स्त्रीलिंग हैं।

(8) वे भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में ना, आय, त्व, पन तथा पा हो। जैसे- गाना, बहाव, मनुष्यत्व, लड़कपन, बचपन, बुढ़ापा आदि।

(9) **आन अन्तवाला कृदन्त संज्ञाएँ**-

लगान, मिलान, नहान, खान-पान।

(10) **शरीर के अवयव**- सिर, मस्तक, मुँह, कान, गाल, नख आदि।

अपवाद- आँख, नाक, जीभ, जाँघ, खाल आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं।

(11) **आकारान्त शब्द**- कपड़ा, पैसा, पहिया, आटा, चमड़ा इत्यादि।

अपवाद-हवा, दवा, सजा, दुनिया, चिड़ियाँ, पुड़िया आदि।

(12) **द्रव्य पदार्थों के नाम**- घी, तेल, पानी, दही, शर्बत, सिरका आदि।

(13) **जल और स्थल के भागों के नाम**- देश, नगर, समुद्र, सरोवर, आकाश, पाताल आदि।

(14) **वर्णमाला के अक्षरों के नाम**- अ, आ, क, ख, प इत्यादि।

अपवाद- इ, ई ओर ऋ स्त्रीलिंग हैं।

**अपवाद**- इ, ई ओर ऋ स्त्रीलिंग हैं।

**स्त्रीलिंग शब्द**-

( 1 ) **ई कारान्त शब्द**- नदी, टोपी, विनती, रोटी, गाली इत्यादि।
अपवाद- पानी, घी, दही, जी, मोती शब्द पुंलिंग होते हैं।

( 2 ) **इ कारान्त शब्द**- रुचि, विधि, अग्नि, गति, मूर्ति।
जिन संज्ञाओं के अन्त में इया शब्द हो- खटिया, डिबिया, पुड़िया आदि।

( 3 ) **संस्कृत के आकारान्त शब्द**- आशा, कृपा, माला, प्रार्थना, क्षमा, शाला आदि।

( 4 ) **ऊ कारान्त शब्द**- बालू, लू आदि।
अपवाद- आँसू, टेसू, आदि शब्द पुंलिंग हैं।

( 5 ) **जिन भाववाचक संज्ञाओं** के अन्त में ता, वट, हट तथा ट हो- सुन्दरता, रुकावट, बनावट, घबराहट, आहट, झंझट आदि।

( 6 ) **त कारान्त तथा ट कारान्त शब्द**, छत, लात, छात, खात, हाट, बाट आदि।
अपवाद- पेट, घूँघट, जमघट, घाट, खेत, पाँत, गात आदि शब्द पुंलिंग है।

( 7 ) **नदियों के नाम**- गंगा, यमुना, कृष्णा, काबेरी आदि।
अपवाद- सिंधु, ब्रह्मपुत्र तथा सोन नदी के नाम पुंलिंग हैं।

( 8 ) **स कारान्त शब्द**- प्यास, मिठास, बास, साँस आदि।
अपवाद- निकास, काँस तथा रास पुंलिंग है।

( 9 ) **जिन संज्ञाओं के अन्त में ख हो**- ईख, भूख, राख, काँख, देख आदि।
अपवाद- रुख शब्द पुंलिंग है।

( 10 ) **कृदन्त न कारान्त संज्ञाएँ**- जलन, चलन, सूजन, पहचान, रहन आदि।

**( 11 ) तिथियों के नाम**– परिवा, दूज, तीज आदि।

**( 12 ) नक्षत्रों के नाम**– अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि।

**( 13 ) मसालों के नाम**– लौंग, इलायची, सुपारी आदि।

अपवाद : धनीया, जीरा, नमक, कपूर, केसर, आदि पुलिंग है।

**( 14 ) समूहवाचक संज्ञा**– भीड़, फौज, सभा, प्रजा आदि।

अपवाद– समूह, झुंड, परिवार, कुटुम्ब, दल आदि पुंलिंग है।

सामाजिक शब्दों का लिंग–निर्णय अंतिम पद के अनुसार होता है। जैसे– माँ–बाप (पुं.) धर्मशाला (स्त्री.) बैलगाड़ी (स्त्री.) रसोई घर (पुं.) आदि।

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो अर्थ होते हैं और अर्थ के अनुसार उनमें लिंग भेद होता है। जैसे–

| **शब्द** | **अर्थ** | **लिंग** |
|---|---|---|
| टीका | तिलक | पु. |
| टीका | टिप्पणी | स्त्री. |
| हार | माला | पु. |
| हार | पराजय | स्त्री. |
| धूप | सुगन्धित धुँआ | पु. |
| धूप | सूर्य का प्रकाश | स्त्री. |
| कोटि | करोड़ | पु. |
| कोटि | श्रेणी | स्त्री. |

इस प्रकार के अनेक शब्द हैं।

## पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

1. अकारान्त तथा आकारान्त शब्दों को ईकारान्त बना कर–

| **पु.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| देव | देवी |
| पुत्र | पुत्री |
| नगर | नगरी |
| बेटा | बेटी |
| घोड़ा | घोड़ी |
| बकरा | बकरी |
| दादा | दादी |
| नाना | नानी |

2. अकारान्त तथा आकारान्त के अन्तिम अ अथवा आ को इया में बदलकर–

| **पुं.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| खाट | खटिया |
| बन्दर | बन्दरिया |
| कुत्ता | कुत्तिया |
| लोटा | लुटिया |
| डिब्बा | डिबिया |

3. कुछ व्यवसाय वाचक शब्दों में 'इन' लगाकर–

| **पुं.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| तेली | तेलिन |
| सुनार | सुनारिन |
| बाघ | बाघिन |
| जुलाहा | जुलाहिन |
| मालिक | मालकिन् |
| धोबी | धोबिन |

4. कुछ शब्दों में 'नी' अथवा 'आनी' लगाकर–

| **पु.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| शेर | शेरनी |
| ऊँट | ऊँटनी |
| हाथी | हाथिनी |
| नौकर | नौकरानी |
| सेठ | सेठानी |

5. कुछ शब्दों में 'इका' लगाकर–

| **पुं.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| सेवक | सेविका |
| गायक | नायिका |
| याचक | याचिका |

6. कुछ उपाधिवाचक शब्दों में 'आइन' लगाकर–

| | |
|---|---|
| बाबू | बबुआइन |
| पंडा | पंडाइन |
| पंडित | पंडिताइन |
| ठाकुर | ठकुराइन |
| लाला | लालाइन |

7. कुछ पुंलिंग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप अलग प्रकार के होते हैं–

| **पु.** | **स्त्री.** |
|---|---|
| पति | पत्नी |
| बैल | गाय |
| बाप | माँ |

| पु. | स्त्री. |
|---|---|
| पुरुष | स्त्री |
| राजा | रानी |
| भाई | बहन |
| पिता | माता |
| मर्द | औरत |
| साहब | साहिबा |
| ससुर | सास |
| वर | वधू |
| भैंसा | भैंस |
| सुत | सुता |
| विद्वान | विदुषी |
| बालक | बालिका |
| प्रिय | प्रिया |
| स्वामी | स्वामिनी |
| विद्यार्थी | विद्यार्थिनी |
| सदस्य | सदस्या |
| महाशय | महाशया |
| पण्डित | पण्डिताइन |
| कवि | कवयित्री |
| बहनोई | बहन |
| ननदोई | ननद |

## अभ्यास

(1) लिंग किसे कहते हैं?

(2) हिन्दी में लिंग के कितने भेद हैं?

(3) पुंलिंग और स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम उदाहरण सहित लिखो?

(4) नीचे लिखे शब्दों से ऐसे वाक्य बनाओ जिससे उनका लिंग-निर्णय हो जाय-

मूंग, कुशल, लाल, छत, भात, गेंद, हीरा, मोती, घी, समाज, शर्बत, प्यास, आँख, रात, पहिया और न्याय।

## वचन

संज्ञा के जिस रूप में संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं-

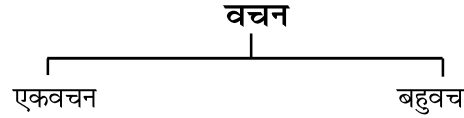


**1. एक वचन**- जिस शब्द से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे- लड़का, कलम, किताब आदि।

**2. बहुवचन**- जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे- लड़के, कलमें आदि।

आदर के लिए एक व्यक्ति के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे- यहाँ मुख्यमंत्री आ रहे हैं। रामचन्द्र जी अयोध्या के राजा थे।

**एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम**-

1. विभक्ति रहित आकारान्त पुंलिंग शब्दों को छोड़कर अन्य सभी शब्द एक ही रूप में दोनों वचनों में प्रयुक्त होते हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों के साथ यह बात नहीं है और साधारणत: उनके दोनों वचनों में दो रूप होते हैं।

1. एकवचन आकारान्त पुंलिंग शब्द बहुवचन में एकारान्त हो जाते हैं

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| घोड़ा | घोड़े |
| लड़का | लड़के |
| कपड़ा | कपड़े |
| बच्चा | बच्चे |
| पहिया | पहिये |

अपवाद- मामा, चाचा, दादा, नाना, राजा, दाता, वक्ता, अगुआ, दरिया, मियाँ, नेता तथा मुखिया दोनों ही वचनों में एक जैसे रहते हैं; उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

**स्त्रीलिंग शब्द**

2. (एकवचन) अकारान्त (स्त्री.) शब्दों को ऐं में बदल बहुवचन बनाया जाता है।

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| बहन | बहनें |
| आँख | आँखें |
| झील | झीलें |
| रात | रातें |
| गाय | गायें |

3. यदि स्त्री. संज्ञाएँ इकारान्त अथवा ईकारान्त हों, तो याँ लगाकर बहुवचन बनाते हैं, किन्तु याँ जोड़ने से पहले अन्तिम दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में परिवर्तित हो जाती है, तब 'याँ' लगाया जाता है-

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| रीति | रीतियाँ |
| तिथि | तिथियाँ |
| पंक्ति | पंक्तियाँ |
| लड़की | लड़कियाँ |
| नदी | नदियाँ |
| रानी | रानियाँ |

4. जिन (स्त्री.) संज्ञाओं के अन्त में 'या' हो तो उनके बहुवचन में अन्तिम या याँ में परिवर्तित हो जाता है-

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| बुढ़िया | बुढ़ियाँ |
| चिड़िया | चिड़ियाँ |
| बिटिया | बिटियाँ |

5. अन्य सभी (स्त्री.) संज्ञाओं के बहुवचन साधारणत: 'एँ' जोड़ने से बनते हैं-

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| यात्रा | यात्राएँ |
| सेना | सेनाएँ |
| वस्तु | वस्तुएँ |
| बहू | बहुएँ |
| लू | लुएँ |

**टिप्पणी**- दीर्घ ऊकारान्त संज्ञाओं को भी ह्रस्व उकारान्त में बदल दिया जाता है; तब बहुवचन बनाया जाता है। जैसे- 'बहू' शब्द का रूप।

6. कुछ फारसी तथा अरबी शब्दों के बहुवचन विशेष प्रकार से होते हैं-

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| साहब | साहबान |
| कागज | कागजात |
| ख्याल | ख्यालात |
| अमीर | उमरा |
| शराफ | अशराफ |
| हाल | अहवाल |
| तारीख | तबारीख |
| वक्त | औकात |
| मकान | मकानात |

7. विभक्ति सहित पुंलिंग तथा स्त्री. शब्दों के अन्त में 'ओ' लगा देते हैं-

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| बालक ने | बालकों ने |
| बहन ने | बहनों ने |

8. विभक्ति सहित दीर्घ ईकारान्त शब्दों को ह्रस्व इकारान्त बनाकर अन्त में 'यों' लगा देते हैं, किन्तु ह्रस्व इकारान्त में वैसे ही 'यों' जोड़ा जाता है।

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| लड़की ने | लड़कियों ने |
| मुनि ने | मुनियों ने |

9. दीर्घ ऊकारांत शब्दों को ह्रस्व उकारान्त बना कर अन्त में 'ओं' जोड़ दिया जाता है, किन्तु ह्रस्व उकारान्त शब्दों में परिवर्तन नहीं होता है-

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| बहू ने | बहुओं ने |
| साधु ने | साधुओं ने |

कभी-कभी एकवचन के शब्द बहुवचन का अर्थ बताते हैं- कई लाख रुपया (एकवचन) शादी में खर्च हो गया।

यहाँ 'रुपया' एकवचन में है, किन्तु इसका अर्थ बहुवचन 'रुपये' हैं उसी तरह-इसी आदमी को तीन महीने से (महीनों के अर्थ में) वेतन नहीं मिला।

10. निम्नलिखित शब्दों का व्यवहार बहुवचन में ही होता है- प्राण, दर्शन, होश तथा बाल।

    गोपाल ने मेरे प्राण बचाये।

    राम ने बालक बढ़ा रखे हैं।

    बहुत दिनों से आपके दर्शन नहीं हुए।

    बाघ को देखते ही उसके होश उड़ गये।

11. संज्ञा तथा विशेषण शब्दों के यदि दोबारा (दो बार) उच्चारण हों तो उससे भी बहुवचन का बोध होता है। जैसे-

    देश-देश में बुद्ध के उपकरण बन रहे हैं।

    बड़े-बड़े पंडित इससे सहमत हैं।

    घर-घर में दिया जल रही है।

12. प्रत्येक तथा, हर एक, के साथ एकवचन की संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। जैसे- हर एक लड़का आम खाता है।

13. साधारणतः जातिगत विशेषता बतलाने के लिए एकवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे- मनुष्य मरणशील है।

14. कभी-कभी एकवचन संज्ञा के साथ गण, वृन्द, लोग, समुदाय, जन, मण्डली आदि लगाकर भी बहुवचन बनाते हैं। जैसे- छात्रगण आ रहे हैं। साधु समुदाय भोजन करते हैं। दर्शक वृन्द शान्त है।
15. सम्बोधन के समय बहुवचन संज्ञाओं का अनुनासिक चिह्न हट जाता है; जैसे- भाइयों, इस बात पर ध्यान दें।
16. 'अनेक' 'सब' आदि शब्द बहुवचन को बोध कराने वाले हैं, अत: 'अनेकों','सबों' लिखना उचित नहीं है।

## अभ्यास

(1) वचन किसे कहते हैं?
(2) हिन्दी भाषा में कितने वचन होते हैं।
(3) एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम उदाहरण के साथ बताओ।
(4) सदा बहुवचन में रहने वाले पाँच शब्दों को बताओ।
(5) बहुवचन बनाओ- स्त्री, घोड़ा, रात, बात, रेखा, चिड़िया, बहू, गाय, रीति, लड़की।

## कारक

**परिभाषा :** संज्ञा या सर्वमान शब्द के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत के अनुसार क्रिया के साथ अन्य शब्दों का जो अन्वय कराता है, उसे कारक कहते हैं। इस दृष्टि से सम्बन्ध और सम्बोधन कारक का सम्बन्ध क्रिया के साथ नहीं होता; इसलिए छ: कारक ही माने जा सकते हैं। किन्तु परंपरा से आठ-कारक माने जाते हैं, अत: यहाँ भी आठ कारकों के वर्णन दिये जायेंगे।

कारक के आठ भेद इस प्रकार हैं।

| | कारक | | विभिक्तियाँ |
|---|---|---|---|
| (1) | कर्त्ता | – | 'ने' |
| (2) | कर्म | – | 'को' |
| (3) | करण | – | से के द्वारा |
| (4) | सम्प्रदान | – | को, के लिए, वास्ते |
| (5) | अपादान | – | से |
| (6) | सम्बन्ध | – | का, के, की, (रा, रे, री) |
| (7) | अधिकरण | – | में, पर, पै |
| (8) | सम्बोधन | – | हे, अरे, ओ आदि |

### 1. कर्त्ताकारक

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का पता लगता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे- राम पत्र लिखता है। इस वाक्य में क्रिया 'लिखता है' है। इसको करने वाला है, राम....। अतः राम, यहाँ कर्त्ता हुआ ।

कर्त्ता की विभक्ति 'ने' हैं। जैसे- राम ने पत्र लिखा।

जब कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया हो, तो उसे प्रधान कर्त्ताकारक कहते हैं तथा जब उसके लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया नहीं हो, तो उसे अप्रधान कर्त्ता कारक कहते हैं।

### 2. कर्मकारक

कर्मकारक की विभक्ति 'को' है। जिस पर कर्त्ता के काम का असर पड़े अथवा क्रिया के व्यापार का फल पड़े, उसे सूचित करने वाले शब्द को कर्म कारक कहते हैं। जैसे-

राम पुस्तक (को) पढ़ता है। पढ़ने का फल पुस्तक पर पड़ा है। इसलिए पुस्तक कर्मकारक है।

यह कारक भी विभक्ति रहित तथा विभक्ति सहित दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है। 'को' विभक्ति का प्रयोग साधारणत: प्राणीवाचक के साथ किया जाता है, किन्तु जहाँ जोर देकर कहा जाय वहाँ अप्राणीवाचक के साथ भी 'को' का प्रयोग होता है।

**कर्म के दो भेद हैं-**

(1) मुख्य कर्म और (2) गौण कर्म।

एक वाक्य में यदि दो कर्म हो तो निर्जीव कर्म मुख्य कर्म तथा सजीव कर्म गौण कर्म कहलाता है। जैसे- धोबी को कपड़े दो। यहाँ 'कपड़े' मुख्य कर्म तथा 'धोबी' गौण कर्म हुआ।

जब अकर्मण क्रिया के साथ उसी क्रिया से मिलता-जुलता कोई कर्म आये तो वह 'सजातीय कर्म' कहलाता है। जैसे- राम ने अच्छी लड़ाई लड़ी। यहाँ 'लड़ाई' सजातीय कर्म है।

### 3. करण कारण

संज्ञा के उस रूप को करण कारण कहते हैं, जिसके द्वारा काम किया जाता है। जैसे- राम ने उसे तीर से मार डाला। यहाँ 'तीर' से करण कारक है।

इस प्रयोग भी यदा-कदा विभक्ति रहित होता है तथा चिह्न सहित होने पर इसके साथ 'से' और 'द्वारा' चिह्न लगते हैं। जैसे-

(1) वह उसके हाथों मारा जायेगा। (विभक्ति रहित)

(2) वह हवाई जहाज से घर गया।( 'से' विभक्ति)

(3) राजा ने मंत्री के द्वारा यह काम करवाया।

### 4. सम्प्रदान कारक

जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिए कुछ किया जाय उसे बोध कराने वाली संज्ञा के रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान का अर्थ है देना। जैसे-

गुरु को दक्षिणा दो। यहाँ गुरु सम्प्रदान कारक है। इसके चिह्न हैं- को, के लिए, के वास्ते।

(1) मैंने राम को रुपये दिये। ('को' का प्रयोग)

(2) रमेश मोहन के लिए दूध लाता है। ('के लिए' का प्रयोग)

कभी-कभी हेतु निमित्त अर्थ अथवा के वास्ते भी 'को' के बदले व्यवहार में आते हैं।

### 5. अपादान कारक

संज्ञा के जिस रूप में किसी वस्तु का अलग होना पाया जाए, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे- आँखों से आँसू गिरते हैं। 'आँसू' आँखों से अलग होते हैं, अत: 'आँखों से' अपादान कारक हुआ। अपादान का अर्थ है- अलग होना।

इसका चिह्न 'से' है। पेड़ से फल गिर पड़े। ('से' का प्रयोग)

**टिप्पणी**-(1) जहाँ से क्रिया आरंभ की जाए वह भी अपादान कारक माना जाता है। जैसे- आज से स्कूल बंद है।

(2) तुलना प्रकट करने में जिसने तुलना की जाती है, वह अपादान कारक माना जाता है। जैसे-मोहन सोहन से छोटा है।

(3) जिसे पढ़ा जाए, जिससे लज्जा आये, जिससे उत्पत्ति हो, जिससे कुछ माँगा जाए तथा जिससे डरा जाए वह भी अपादान कारक माना जाता है। जैसे-

मोहन शिक्षक से पढ़ता है।

तुम मुझसे लजाते हो।

मैं तुमसे पुस्तक माँगता हूँ।

वह डाकू से डरता है।

## 6. सम्बन्ध कारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी दूसरी वस्तु से सम्बन्ध मालूम हो उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। जैसे- राम की पुस्तक मेरे पास है। यहाँ 'राम की' यह प्रकट करता है कि उसका पुस्तक से सम्बन्ध है। अत: 'राम की' सम्बन्ध कारक है।

इसकी विभक्तियाँ हैं- का, के, की, तथा रा, रे, री।

(अपवाद- इ, ई, और ऋ स्त्रीलिंग हैं।)

(1) महेश का लड़का- (सम्बन्धी जब पुंलिंग एकवचन रहे तो 'का' का प्रयोग होता है।)

(2) महेश के लड़के- (सम्बन्धी पुंलिंग बहुवचन रहे तो 'के' का प्रयोग होता है।)

(3) महेश की लड़की- (सम्बन्धी स्त्री एकवचन का अथवा बहुवचन रहे तो 'की' का प्रयोग होता है।)

(4) महेश की लड़कियाँ

यदि पुंलिंग एकवचन संज्ञा के साथ दूसरी कारक-विभक्ति का प्रयोग किया जाय, तो 'का' के बदले 'के' का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे- राम के हाथ से कलम ले लो।

यहाँ 'हाथ' के बाद 'से' कारक-विभक्ति है। अत: का के बदले 'राम के' का व्यवहार किया गया है।

यदि आकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं के साथ कोई भी विभक्ति प्रयोग में आये तो वे एकारान्त हो जाते हैं। जैसे-

बेटा + का = बेटा का

लड़का + से = लड़के से

रा, रे तथा री का प्रयोग केवल मैं, तू, तुम, हम सर्वमान शब्दों के साथ होता है। जैसे- 'रा'- मेरा घोड़ा; 'री'- मेरी घोड़ी अथवा घोड़ियाँ, 'रे'- मेरे घोड़े; तेरे बच्चे। तुम्हारे लड़के, हमारा बच्चा, हमारी बच्ची।

### 7. अधिकरण कारक

संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे- घर में कोई नहीं है। इस कारक का चिह्न हैं- में और पर (पै)। **अधिकरण कारक के तीन भेद हैं-**

**( 1 ) कालाधिकरण**- इससे काल का बोध होता है। जैसे- वह चार दिनों में जाएगा।

**( 2 ) स्थानाधिकरण**- इससे स्थान का बोध होता है। जैसे- बच्चे पलंग पर हैं।

**( 3 ) भावाधिकरण**- जिससे भाव में क्रिया का आधार प्रकट हो। जैसे- यहाँ आने में क्या लाभ है?

'में' तथा 'पर' का प्रयोग-

में- जेब में घड़ी है।

पर- मेज पर पुस्तक है।

कभी-कभी 'में' तथा 'पर' का प्रयोग नहीं भी होता। जैसे-

उस बच्चे का जन्म धोबी के घर (में) हुआ।

मैं आपके पाँव (पर) पड़ता हूँ।

8. **सम्बोधन कारक** - संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारना या अपनी ओर आकर्षित करना सूचित होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जैसे-

हे ईश्वर! मेरी रक्षा कौन करेगा?

इसके चिह्न- हे, अरे अजी, ओ, रे आदि हैं। जैसे-

अरे लड़के! उधर मत जा।

ओ प्यारे बच्चो! जरा इधर आना।

हे राम! तुम क्यों उदास हो?

**टिप्पणी**- एक ही वाक्य में आठों कारकों के चिह्न इस प्रकार हो सकते हैं-

हे छात्रों! राम ने सोने की लंका में सीता के लिए रावण को रथ से बाण के द्वारा (से) मारा।

(1) कर्ता- राम ने (2) कर्म- रावण को, (3) करण- बाण से (के द्वारा), (4) सम्प्रदान- सीता के लिए, (5) अपादान रथ से, (6) सम्बन्ध- सोने की (7)अधिकरण- लंका में, (8) सम्बोधन- हे छात्रों!।

## विभक्तियों के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें

(क) संस्कृत में विभक्तियाँ शब्दों से संयुक्त रहती है; पर हिन्दी में इन्हें शब्दों से अलग ही लिखा जाता है, केवल सर्वनाम शब्दों के साथ विभक्तियाँ मिली रहती है। जैसे-

(1) राम ने कहा। ('ने' अलग है)

(2) मैंने पत्र लिखा । ('ने' मैं के साथ है)

(ख) विभक्तियाँ कारक-चिह्न हैं।'का' को छोड़कर किसी अन्य विभक्ति का रूप नहीं बदलता।

(ग) विभक्तियाँ चरम प्रत्यय कहलाती है। इनके बाद दूसरे प्रत्यय नहीं आते। जैसे-

मेरा वाला घोड़ा।

मोहन के ही कारण।

इन वाक्यों में 'वाला' तथा 'ही' प्रत्ययों का प्रयोग गलत है, क्योंकि ये चरम-प्रत्यय-विभक्ति के बाद आये हैं। इनका शुद्ध रूप होगा- 'मेरा घोड़ा और मोहन के कारण।'

(घ) कभी-कभी एक विभक्ति के बाद दूसरी विभक्ति का प्रयोग हो जाता है, जैसे- इन बच्चों में से तुम्हारा भाई कौन है।

(ङ) कर्त्ता कारक के अर्थ में 'को' चिह्न का प्रयोग भी कभी-कभी होता है। जैसे- राम को जाना है। लोगों को यह बात मालूम है।

(च) अधिकरण कारक में समय सूचक शब्दों के साथ 'को' का भी व्यवहार होता है। जैसे- मोहन रात को वहाँ आया था।

(छ) कुछ अव्यय शब्दों के आगे भी विभक्तियों का प्रयोग होता है। जैसे- यहाँ से, वहाँ से, यहाँ पर, कब का.... इत्यादि।

(ज) कारकों को स्पष्ट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के आगे ने, को, से, के लिए आदि चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हीं चिह्नों को कारक विभक्ति या उपसर्ग कहते हैं।

## 'ने' विभक्ति का प्रयोग

(1) 'ने' का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं के सामान्य आसन्न, पूर्ण तथा संदिग्ध भूल कालों में कर्त्ता के आगे होता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| सीता ने यह पत्र लिखा। | (सामान्य भूत) |
| सीता ने यह पत्र लिखा है। | (आसन्न भूत) |
| उसने पत्र लिखा था । | (पूर्ण भूत) |
| उसने पुस्तक पढ़ी होगी। | (संदिग्ध भूत) |

अपवाद- बोलना, लाना, भूलना, जानना, सकना, बकना, चुकना आदि क्रियाओं के साथ कर्त्ता के आगे 'ने' का प्रयोग नहीं होता है।

(2) अकर्मक क्रियाओं के साथ कर्त्ता के आगे 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

**अपवाद**- नहाना, छींकना, थूँकना, खाँसना आदि क्रियाओं के साथ कर्त्ता के आगे 'ने' का प्रयोग किया जाता है।

(3) वर्तमान तथा भविष्यत् काल में भी 'ने' का प्रयोग नहीं होता है।

(4) समझना, पुकारना, जानना आदि क्रियाओं के साथ कर्त्ता के आगे ने का प्रयोग विकल्प से होता है। जैसे- उसने कुछ नहीं समझा। तुम क्या समझे ?

(5) अकर्मक क्रियाओं का अंतिम खंड 'डालना' हो, तो ऊपर के चारों भूत कालों की क्रियाओं में कर्त्ता के साथ 'ने' चिह्न लगता है। जैसे- उसने मेरी पुस्तक फाड़ डाली।

(6) सजातीय क्रिया के साथ कर्त्ता के आगे 'ने' का प्रयोग हो भी सकता है अथवा नहीं भी हो सकता है । जैसे- उसने कई लड़ाइयाँ लड़ी। वह कई लड़ाइयाँ लड़ा।

(7) 'ने' का प्रयोग अपूर्ण अथवा तात्कालिक तथा हेतुहेतुमत् भूतकाल में नहीं होता है। जैसे-
वह दवा खाता था।
राम नाच रहा था।
यदि तुम पढ़ते तो परीक्षा में पास कर जाते।

## संज्ञाओं की कारक रचना

आठों कारकों में संज्ञाओं के रूप, लिंग और वचन के अनुसार बदलते रहते हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं-

### अकारान्त पुंलिंग 'देव' शब्द

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | देव, देव ने, | देव, देवों ने |
| कर्म | देव को | देवों को |
| करण | देव से, देव के द्वारा | देवों से, देवों के द्वारा |
| सम्प्रदान | देव को, के लिए | देवों को, के लिए |
| सम्बन्ध | देव का, के, की | देवों का, के, की |
| अपादान | देव से | देवों से |
| अधिकरण | देव में, पर | देवों में, पर |
| सम्बोधन | हे देव! | हे देवि! |

इसी प्रकार अन्य अकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप भी बनते हैं।

## आकारान्त पुंलिंग शब्द 'घोड़ा'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | घोड़ा, घोड़े ने | घोड़े, घोड़ों ने |
| कर्म | घोड़े को | घोड़ों को |
| करण | घोड़े से | घोड़ों से |
| सम्प्रदान | घोड़े को, के लिए | घोड़ों को, के लिए |
| अपादान | घोड़े से | घोड़ों से |
| सम्बन्ध | घोड़े का, के, की | घोड़ों का, के, की |
| अधिकरण | घोड़े में, पै, पर | घोड़ों में, पै, पर |
| सम्बोधन | हे घोड़ा! हे घोड़े! | हे घोड़ों! |

इसी प्रकार अन्य आकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप भी बनते हैं।

## इकारान्त पुंलिंग शब्द 'मुनि'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | मुनि, मुनि ने | मुनि, मुनियों ने |
| कर्म | मुनि को | मुनियों को |
| करण | मुनि से, के द्वारा | मुनियों से, मुनियों के द्वारा |
| सम्प्रदान | मुनि को, के लिए | मुनियों को, के लिए |
| अपादान | मुनि से | मुनियों से |
| सम्बन्ध | मुनि का, के, की | मुनियों का, के, की |
| अधिकरण | मुनि में, पै, पर | मुनियों में, पै, पर |
| सम्बोधन | हे मुनि ! | हे मुनियों ! |

## ईकारान्त पुंलिंग शब्द 'धोबी'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | धोबी, धोबी ने | धोबी, धोबियों ने |
| कर्म | धोबी को | धोबियों को |
| करण | धोबी से | धोबियों से |
| सम्प्रदान | धोबी को, के लिए | धोबियों को, के लिए |
| अपादान | धोबी से | धोबियों से |
| सम्बन्ध | धोबी का, के, की | धोबियों का, के, की |
| अधिकरण | धोबी में, पै, पर | धोबियों में, पै, पर |
| सम्बोधन | हे धोबी ! | हे धोबियों ! |

## उकारान्त पुंलिंग शब्द 'गुरु'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | गुरु, गुरु ने | गुरु, गुरुओं ने |
| कर्म | गुरु को | गुरुओं को |
| करण | गुरु से, के द्वारा | गुरुओं से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | गुरु को, के लिए | गुरुओं को, के लिए |
| अपादान | गुरु से | गुरुओं से |
| सम्बन्ध | गुरु का, के, की | गुरुओं का, के, की |
| अधिकरण | गुरु में, पै, पर | गुरुओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | हे गुरु! | हे गुरुओं ! |

इसी प्रकार अन्य उकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप भी बनते हैं।

## ऊकारान्त पुंलिंग शब्द- 'डाकू'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | डाकू, डाकू ने | डाकू, डाकुओं ने |
| कर्म | डाकू को | डाकुओं को |
| करण | डाकू से, के द्वारा | डाकुओं से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | डाकू को, के लिए | डाकुओं के लिए |
| अपादान | डाकू से, | डाकुओं से |
| सम्बन्ध | डाकू का, के, की | डाकुओं का, के, की |
| अधिकरण | डाकू में, पर | डाकुओं में, पर |
| सम्बोधन | हे डाकू! | हे डाकुओं! |

इसी प्रकार अन्य ऊकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप भी होंगे।

## आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'माता'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | माता, माता ने | माता, माताओं ने |
| कर्म | माता को | माताओं को |
| करण | माता से | माताओं से |
| सम्प्रदान | माता को, के लिए | माताओं को, के लिए |
| अपादान | माता से | माताओं से |
| सम्बन्ध | माता का, के, की | माताओं का, के, की |
| अधिकरण | माता में ,(पै) पर | माताओं में, (पै) पर |
| सम्बोधन | हे माता! | हे माताओं! |

अन्य स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द के रूप भी प्रायः इसी तरह होंगे।

## इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'मति'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | मति, मति ने | मतियाँ, मतियों ने |
| कर्म | मति को | मतियों को |
| करण | मति से, के द्वारा | मतियों से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | मति को, के लिए | मतियों को, के लिए |
| अपादान | मति से | मतियों से |
| सम्बन्ध | मति का, के, की | मतियों का, के, की |
| अधिकरण | मति में, पर | मतियों में, पर |
| सम्बोधन | हे मति! | हे मतियों! |

## ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'नदी'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | नदी, नदी ने | नदियाँ, नदियों ने |
| कर्म | नदी को | नदियों को |
| करण | नदी से, के द्वारा | नदियों से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | नदी को, के लिए | नदियों को, के लिए |
| अपादान | नदी से | नदियों से |
| सम्बन्ध | नदी का, के, की | नदियों का, के, की |
| अधिकरण | नदी में, पर | नदियों में, पर |
| सम्बोधन | हे नदी! | हे नदियों! |

## उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'वस्तु'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | वस्तु, वस्तु ने | वस्तुएँ, वस्तुओं ने |
| कर्म | वस्तु को | वस्तुओं को |
| करण | वस्तु से, के द्वारा | वस्तुओं से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | वस्तु को, के लिए | वस्तुओं को, के लिए |

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| अपादान | वस्तु से, | वस्तुओं से, |
| सम्बन्ध | वस्तु का, के, की | वस्तुओं का, के, की |
| अधिकरण | वस्तु में, पर | वस्तुओं में, पर |
| सम्बोधन | हे वस्तु! | हे वस्तुओं! |

इसी प्रकार अन्य उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप भी होंगे।

### ऊकारान्त स्त्री शब्द 'बहू'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | बहू, बहू ने | बहुएँ, बहुओं ने |
| कर्म | बहू को | बहुओं को |
| करण | बहू से, के द्वारा | बहुओं से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | बहू को, के लिए | बहुओं को, के लिए |
| अपादान | बहू से | बहुओं से |
| सम्बन्ध | बहू का, के, की | बहुओं का, के, की |
| अधिकरण | बहू में, पर | बहुओं में, पर |
| सम्बोधन | हे बहू! | हे बहुओं! |

इसी प्रकार अन्य स्त्रीलिंग ऊकारान्त शब्दों के रूप भी बनते हैं।

### औकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'गौ'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | गौ, गौ ने | गौएँ, गौओं ने |
| कर्म | गौ को | गौओं को |
| करण | गौ से, के द्वारा | गौओं से, के द्वारा |
| सम्प्रदान | गौ को, के लिए | गौओं को, के लिए |
| अपादान | गौ से | गौओं से |
| सम्बन्ध | गौ का, के, की | गौओं का, के, की |
| अधिकरण | गौ में, पर | गौओं में, पर |
| सम्बोधन | हे गौ! | हे गौओं! |

## अभ्यास

1. कारक किसे कहते हैं?
2. हिन्दी में कितने कारक हैं? उदाहरण सहित उनके नाम बताओ।
3. करण और अपादान कारक में क्या भेद है?
4. अधिकरण के भेदों की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।
5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द कौन से कारक हैं?
   (क) रमेश दूध पी रहा है।
   (ख) वह बच्चे के लिए पुस्तक लाएगा।
   (ग) वे लोग पाठशाला जाते हैं।
   (घ) वृक्ष से फल गिरता है।
   (ङ) वह कलम से पत्र लिखता है।
   (च) आलमारी में पुस्तक थी।
   (छ) हे राम! मेरी रक्षा करो।
6. विभक्ति किसे कहते हैं? सभी कारकों की विभक्तियाँ लिखिए।
7. 'ने' का प्रयोग किन-किन अवस्थाओं में होता है?
8. निम्नलिखित शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में लिखिए-
   बालक, घोड़ा, नारी, गाड़ी, कवि, मति, बहू तथा गौ।
9. नीचे लिखे वाक्यों की पूर्ति शुद्ध कारकों के लिए कीजिए-
   (क) राम..... लड़का पढ़ता है।
   (ख) धोबी..... कपड़ा दो।
   (ग) हवाई जहाज..... कलकत्ता जाओ
   (घ) उसके ..... काम करो।
   (ङ) घर .....कुछ नहीं है।

## सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम है। यह संज्ञा की भांति वाक्य रचना में आता है, किन्तु किसी व्यक्ति या पदार्थ के नाम के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकता।

प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के निम्न सात भेद है-

(1) पुरुषवाचक -- मैं, तुम, आप।
(2) निश्चयवाचक -- वह, यह।
(3) अनिश्चयवाचक -- कोई, कुछ।
(4) प्रश्नवाचक -- कौन, क्या।
(5) संबंधवाचक -- जो।
(6) सह-सम्बन्धवाचक -- तो (यह)
(7) निजवाचक -- आप, स्वयं।

**(1) पुरुषवाचक**-- हिन्दी व्याकरण में पुरुष तीन हैं- उत्तम, मध्यम और अन्य।

उत्तम पुरुष में वक्ता मध्यम पुरुष में श्रोता और अन्य पुरुष में वक्ता द्वारा कोई अन्य व्यक्ति होता है। उत्तम पुरुष में 'मैं' मध्यम पुरुष में 'तुम' तथा आप (आदरार्थ) एवं अन्य पुरुष में 'आप' एवं निश्चयवाचक सर्वनाम 'वह' आते हैं।

### सर्वनाम शब्दों के रूप

### उत्तम पुरुष- मैं

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | मैं, मैंने | हम,हमने |
| कर्म | मुझको, मुझे | हमको,हमें |
| करण | मुझसे,मेरे द्वारा | हमसे,हमारे द्वारा |
| सम्प्रदान | मुझको,मेरे लिए,मुझे | हमको,हमारे लिए,हमें |
| अपादान | मुझसे | हमसे |
| सम्बंध | मेरा,मेरे,मेरी | हमारा,हमारे,हमारी |
| अधिकरण | मुझमें,पै,पर | हममें,पै,पर |

## मध्यम पुरुष 'तू'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | तू, तूने | तुम, तुमने |
| कर्म | तुझको, तुझे | तुमको, तुम्हें |
| करण | तुझसे, तेरे द्वारा | तुमसे, तुम्हारे द्वारा |
| सम्प्रदान | तुझको, तुझे,तेरे लिए | तुमको, तुम्हें, तुम्हारे लिए |
| अपादान | तुझसे | तुमसे |
| सम्बन्ध | तेरा, तेरे, तेरी | तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी |
| अधिकरण | तुझमें-पै-पर | तुममें-पै-पर |

## अन्य पुरुष 'वह'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | वह, उसने | वे,उन्होंने |
| कर्म | उसको,उसे | उनको, उन्हें |
| करण | उससे, उसके द्वारा | उनसे, उनके द्वारा |
| सम्प्रदान | उसको, उसे, उसके लिए | उनको, उन्हें, उनके लिए |
| अपादान | उससे | उनसे |
| सम्बन्ध | उसका-के-की | उनका-के-की |
| अधिकरण | उसमें-पै-पर | उनमें-पै-पर |

## आदरसूचक- 'आप'

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | आप,आपने | आप, आप सब, आप लोग, आपने, आप सबने,आप लोगों ने। |
| कर्म | आपको | आपको,आप सबको, आप लोगों को। |

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| करण | आपसे,आपके द्वारा | आप से,आप के द्वारा, आप सबके द्वारा, आप लोगों से, आप लोगों के द्वारा। |
| सम्प्रदान | आपको, आप के लिए | आपको, आप के लिए, आप सब के लिए, आप लोगों को, आप लोगों के लिए। |
| अपादान | आपसे | आपसे, आप सब से, आप लोगों से। |
| सम्बन्ध | आपका-के-की | आपका-के-की, आप लोगों का-के-की। |
| अधिकरण | आप-में-पै-पर | आप-में-पै-पर, आप सब में-पर-पै, आप लोगों में- पै-पर। |

( 2 ) **निजवाचक**- निजवाचक सर्वनाम 'आप' है। इसका अर्थ स्वयं, स्वतः या खुद है, और इसी अर्थ में इसका तीन पुरुषों में प्रयोग होता है।

( 3 ) **निश्चयवाचक**- निश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं, जिनसे निश्चित पदार्थों का बोध हौता है,. जैसे-'वह', 'यह', और 'सो'।

( 4 ) **अनिश्चयवाचक**- अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे है, जिनसे निश्चित पदार्थों का बोध नहीं होता, जैसे-'कोई' और 'कुछ'।

( 5 ) **सम्बन्धवाचक**- सम्बन्धवाचक सर्वनाम वह है जिससे किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ सम्बन्ध प्रकट होता है। सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो' है। यह सजीव और निर्जीव दोनों पदार्थों के लिए आता है।

( 6 ) **सह-सम्बन्धवाचक**- सह-सम्बन्धवाचक सर्वनाम वह है, जो 'सो' (वह) का अर्थ प्रकट करता है।

( 7 ) **प्रश्नवाचक**- प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं, जिससे प्रश्न का बोध होता। ऐसे सर्वनाम 'कौन' और 'क्या' है। जब किसी संज्ञा का उल्लेख नहीं रहता, तो साधारणत: सजीव पदार्थ के लिए 'कौन' और निर्जीव पदार्थ के लिए 'क्या' आता है; जैसे- तुम्हारे कमरे में कौन है ? तुम्हारे हाथ में क्या है ?

**द्रष्टव्य**- पुरुषवाचक को छोड़ कर अन्य सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण के समान भी होता है। जैसे- यह आदमी, कौन प्राणी, कुछ वस्तु आदि।

## अभ्यास

(1) सर्वनाम से क्या समझते हो ? कुछ सर्वनामों के उदाहरण दो।

(2) संज्ञा और सर्वनाम में क्या अन्तर होता है ? उदाहरण सहित समझाओ।

(3) सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं और कौन-कौन ? प्रत्येक के पाँच-पाँच उदाहरण दो।

(4) पुरुषवाचक सर्वमान के विभिन्न रूपों को लिखो।

(5) 'आप' शब्द का रूप सभी कारकों एवं दोनों वचनों में लिखो।

# विशेषण

विशेषण वह शब्द है, जिससे किसी संज्ञा या सर्वनाम की कोई विशेषता प्रकट होती है। जिस संज्ञा की विशेषता सूचित होती है, वह विशेषण है।

विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है, एक संज्ञा के पहले और दूसरा संज्ञा के बाद क्रिया के साथ; जैसे- सच बात बोलो; यह बात सच है। पहले को सामान्य विशेषण और दूसरे को विधेय विशेषण कहते हैं।

कभी-कभी विशेषण की तरह संज्ञा का भी प्रयोग होता है। जैसे- वह स्कूल में शिक्षक है; आजकल सब चीजों का दाम आग हो गया है।

(1) गुणवाचक, (2) संख्याचाचक,

(3) परिमाणवाचक और (4) सर्वनामवाचक।

**( 1 ) गुणवाचक**- गुणवाचक विशेषण उसे कहते हैं, जिससे पदार्थ के गुण, दोष, दशा, रूप, स्थान, रंग आदि का बोध होता है; जैसे- अच्छा, बुरा, बदमाश, शैतान, दुष्ट, सूखा, गीला, सुन्दर, गोल, टेढ़ा, बाहरी, भीतरी, पीला आदि।

**( 2 ) संख्यावाचक**- संख्यावाचक विशेषण उसे कहते हैं, जिससे पदार्थों की संख्या का बोध हो। जैसे- चार, सब, बहुत, कुछ आदि।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं-

(1) निश्चित संख्यावाचक और

(2) अनिश्चित संख्यावाचक

निश्चित संख्यावाचक विशेषण से निश्चित संख्या जानी जाती है। ये पाँच प्रकार के होते हैं-

**( 1 ) गणनाबोधक**- एक, दो, तीन, चार आदि।

**( 2 ) क्रमबोधक**- पहला, दूसरा, तीसरा आदि।

**( 3 ) आवृत्तिबोधक**- दूना, तिगुना, चौगुना आदि।

**( 4 ) समुदायबोधक**- दोनों, पाँचों, चालीसों आदि ।

**( 5 ) प्रत्येकवाचक**- हरएक, प्रत्येक, प्रति, हर आदि।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण से कोई निश्चित संख्या नहीं जानी जाती। जैसे-

कोई, अन्य, अनेक, बहुत, थोड़ा, कम, कुछ आदि।

**( 3 ) परिमाणवाचक**- परिमाणवाचक विशेष उसे कहते हैं, जिससे किसी पदार्थ के परिमाण, नाप-तौल का बोध होता है। जैसे-

सब, अधिक, ज्यादा, बहुत, बहूतेरा, थोड़ा, कम, अल्प, किंचित, इतना, उतना, जितना आदि।

**( 4 ) सर्वनामवाचक**– सर्वनामवाचक विशेषण ये सर्वनाम है, जो अपने साथ, आने वाली संज्ञा का गुण प्रकट करते हैं। पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सर्वनामों के बाद संज्ञा का भी प्रयोग होता है और तब से सर्वनाम विशेषण हो जाते हैं। जैसे–

यह लड़का, वह लड़की, कोई चीज, कुछ काम, जो मनुष्य, कौन आदमी आदि।

'निज' और 'पराया' शब्द भी सार्वजनिक विशेषण है। जिन का अर्थ अपना और पराया का अर्थ दूसरा है। जैसे–

निज काम, परायी चीज, निज देश, निज भाषा आदि।

विशेषण संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय और क्रिया आदि से बनते हैं।

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **विशेषण** |
|---|---|---|
| पहाड़ | ई | पहाड़ी |
| किताब | ई | किताबी |
| जंगल | ई | जंगली |
| ठण्ड | आ | ठण्डा |
| प्यास | आ | प्यासा |
| भूख | आ | भूखा |
| ऊन | ई | ऊनी |
| भार | ई | भारी |
| धन | ई | धनी |
| कलकत्ता | इया | कलकतिया |
| दूध | इया | दुधिया |

| शब्द | प्रत्यय | विशेषण |
|---|---|---|
| भीख | आरी | भिखारी |
| पूज | आरी | पुजारी |
| जुआ | आरी | जुआरी |
| खेल | आरी | खेलाड़ी |
| धर | आऊ | धराऊ |
| लाज | आऊ | लजाऊ |
| झगड़ा | आलू | झगड़ालू |
| लाज | आलू | लजालू |
| घर | एलू | घरेलू |
| लाज | ईला | लजीला |
| साज | ईला | सजीला |
| दाढ़ी | इयल | दाढ़ीयल |
| लत | इयल | लतियल |
| दया | वन्त | दयावन्त |
| समझ | दार | समझदार |
| बूटा | दार | बूटेदार |
| मिलन | सार | मिलनसार |
| लोक | इक | लौकिक |
| संसार | इक | सांसारिक |
| कोच | वान | कोचवान |
| रथ | वान | रथवान |
| श्री | मान् | श्रीमान् |
| भक्ति | मान् | भक्तिमान् |

### सर्वनाम से बनने वाले विशेषण

| | | |
|---|---|---|
| यह | से | ऐसा (इतना) |
| ओ | से | जैसा |

### क्रिया से बनने वाले विशेषण

| | | |
|---|---|---|
| गाना | इया | गवैया |
| लिखना | या | लिखवैया |
| खाना | या | खवैया |
| बिकना | ऊ | बिकाऊ |
| टिकना | ऊ | टिकाऊ |
| घूमना | अक्कर | घुमक्कड़ |

### अव्यय से बनने वाले विशेषण

| | | |
|---|---|---|
| ऊपर | ई | ऊपरी |
| भीतर | ई | भीतरी |

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति या वस्तुओं के गुणों या अवगुणों की तुलना की जाती है, तो इसे ही विशेषण की तुलना कहते हैं।

तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ है-

(1) मूलावस्था (Positive Degree)

(2) उत्तरावस्था (Comparative Degree)

(3) उत्तमावस्था (Superlative Degree)

**(1) मूलावस्था**- इस विशेषण के द्वारा किसी की तुलना नहीं व्यक्त होती हो, मात्र सामान्य रूप से विशेषता बतायी जाती है। जैसे- सीता सुन्दर है। राम एक अच्छा लड़का है।

**(2) उत्तरावस्था**- यह विशेषण की वह अवस्था है, जिसके द्वारा किसी दो प्राणीवाचक या अप्राणीवाचक शब्दों में तुलना करके एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है। जैसे- राम श्याम से अधिक बुद्धिमान है। इस वाक्य में राम की बुद्धिमत्ता श्याम से अधिक

बतायी गयी है। उसी तरह मोहन सोहन से चुतर है। इस वाक्य में मोहन को सोहन से अधिक चतुर बताया गया है। इस विशेषण में साधारणत: से, तम की अपेक्षा, की बनिस्बत आदि प्रयत्नों का प्रयोग होता है।

**( 3 ) उत्तमावस्था**- जब दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं में तुलना करके एक को सबसे अधिक या न्यून बताया जाता है, तो उत्तमावस्था विशेषण होता है। जैसे-

(1) इस गाँव में राम सबसे अधिक बुद्धिमान है।

(2) मोहन सब लड़कों में चतुरतन है।

उत्तमावस्था में 'सबसे' या 'सब में' का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी 'सर्वश्रेष्ठ', 'अति', 'अत्यन्त' या 'बहुत' का भी प्रयोग होता है। विशेषण के अन्त में 'तम' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे-

(1) कलकत्ता सबसे वृहत्तम शहर है।

(2) यह मधुरतम पदार्थ है।

(3) भारत में श्रेष्ठतम महापुरुष पैदा हुए हैं।

कभी-कभी आवृत्ति से भी उत्तमावस्था व्यक्त की जाती है। जैसे- अच्छा से अच्छा काम करो।

**विशेषत:** 'तर' और 'तम' प्रत्यय तत्सम शब्दों के साथ ही लगते हैं।

**टिप्पणी**- विशेषण के लिंग, वचन और कारक वही होते हैं, जो विशेष्य के। जैसे- अच्छा लड़का, अच्छे लड़के, अच्छी लड़की। किन्तु संस्कृत विशेषणों का रूप हिन्दी में विशेष्य के अनुसार कभी बदलता है और कभी-कभी नहीं भी बदलता । जैसे-

सुन्दर बालिका।

सुशीला कन्या।

हिन्दी में आकारान्त विशेषण को छोड़कर अन्य विशेषण में साधारणत: परिवर्तन नहीं होता।

## अभ्यास

(1) विशेषण से क्या समझते हो। उदाहरण द्वारा समझाओ।

(2) विशेषण कितने प्रकार के होते हैं और कौन-कौन? प्रत्येक का उदाहरण दो।

(3) गुणवाचक विशेषणों के अन्दर कौन-कौन से गुण लिये जाते हैं? प्रत्येक के तीन-तीन उदाहरण दो।

(4) संख्यावाचक विशेषण के कितने भेद है? उदाहरण सहित समझाओ।

(5) सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाओ।

(6) नीचे लिखे शब्दों से विशेषण बनाओ- साहित्य, सूर्य, स्त्री, पूजा, प्रणाम, काम, पात्र, प्यास, जंगल, पहाड़, भूख, धन, कलकत्ता, दूध, पूजा, दाढ़ी, समय, दिन, सप्ताह, वर्ष।

(7) विशेषण की तीन अवस्थाएँ कौन-कौन सी होती है? प्रत्येक अवस्था के दो-दो उदाहरण दो।

## क्रिया

क्रिया उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय। जैसे-

करना, खाना, होना, जाना आदि।

क्रिया के मूल को धातु कहते हैं। जैसे-

'करना', का 'कर', 'होना' का 'हो' 'खाना' का 'खा' आदि धातुएँ हैं।

क्रिया दो प्रकार की होती है-

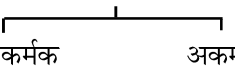

**( 1 ) सकर्मक**- जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्त्ता से निकल कर किसी दूसरे पदार्थ पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे-

राम यह बात जानता है।

उसने यह बात कही थी।

पहले वाक्य में 'जानना' और दूसरे में 'कहना' सकर्मक क्रियाएँ है, क्योंकि इसके व्यापार का फल कर्त्ता से निकल कर 'बात' कर्म पर पड़ता है।

**( 2 ) अकर्मक**- जिस क्रिया का व्यापार और उसका फल दोनों कर्त्ता ही में मिले उसे अकर्मक कहते हैं। क्रिया के व्यापार का फल भी कर्त्ता ही पर पड़ता है; इसलिए अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता। जैसे- राम जाता है। वह बैठा था।

**द्रष्टव्य**- कुछ क्रियायें ऐसी है, जो प्रयोग के अनुसार सकर्मक और अकर्मक दोनों होती है। जैसे- घबड़ाना, लजाना, खुजलाना, बदलना, भूलना, गाना आदि।

| | | |
|---|---|---|
| (1) | जी घबड़ाता है। | (अकर्मक) |
| | उसकी बीमारी मुझे बहुत घबड़ाती है। | (सकर्मक) |
| (2) | वह लजाता है। | (अकर्मक) |
| | वह मुझसे लजाता है। | (सकर्मक) |
| (3) | मेरा बायाँ हाथ खुजलाता है। | (अकर्मक) |
| | नौकर मेरा पीठ खुजलाता था । | (सकर्मक) |
| (4) | समय बदल गया। | (अकर्मक) |
| | अपनी बात मत बदलो। | (सकर्मक) |

**अकर्मक क्रिया के भेद**

(1) पूर्ण (2) अपूर्ण

**1. पूर्ण अकर्मक**- जिस अकर्मक क्रिया के द्वारा पूर्ण अर्थ मालूम हो। जैसे- लड़की दौड़ती है।

**2. अपूर्ण अकर्मक**- जिस अकर्मक द्वारा पूर्ण अर्थ न हो यानी जिसका अर्थ जानने के लिए संज्ञा या विशेषण की जरूरत पड़े। जैसे- लड़की शरारती है।

**सकर्मक क्रिया के भेद**

(1) पूर्ण (2) अपूर्ण

**( 1 ) पूर्ण सकर्मक**- जिनका पूर्ण अर्थ एक ही कर्म से मालूम हो। जैसे शांति गीता पढ़ती है।

**( 2 ) अपूर्ण सकर्मक**- जिनका आशय एक कर्म रखने से प्रकट न हो। जैसे- राधा ने पुस्तक दी।

**( 3 ) द्विकर्मक क्रिया**- ये वे क्रियाएँ है, जो अपना अर्थ पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए दो क्रियाएँ लेती हैं। जैसे- शिक्षक छात्र को गणित पढ़ाते हैं।

मैंने अर्जुन को पुस्तक दी।

मैं मोहन को मिठाई देता हूँ।

**( 4 ) प्रेरणार्थक क्रिया**- जिस क्रिया का कर्त्ता स्वयं कार्य न करके अपनी प्रेरणा से दूसरों से व्यापार करता है, उस क्रिया को प्रेरणार्थाक क्रिया कहते है। जैसे-

रमेश ने गुण्डों से दिनेश को पिटवाया।

राम मजदूरों से मकान बनवाता है।

सेठ जी ज्योतिषी के हाथ दिखलाते हैं।

**द्रष्टव्य**- प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है।

**( 5 ) सहायक क्रिया**- कुछ क्रियाएँ अन्य क्रियाओं के साथ सहायक शब्दों की भाँति करती है और उसके द्वारा सूचित कार्य की प्रकृति या स्वरूप को पूरा करती है। जैसे-

खा लेना (खाना)

सो जाना (सोना)

रो पड़ना (रोना)

गा पड़ना (गाना)

उछल पड़ना (उछलना) आदि।

## सजातीय कर्म और सजातीय क्रिया

**सजातीय कर्म**- कभी-कभी अकर्मक क्रिया अपने धातु से बने हुए कर्म के साथ व्यवहृत होने पर सकर्मक हो जाती है। इस अवस्था में उस क्रिया का कर्म सजातीय होता है। जैसे-

मेरे साथ चाल मत चलो।

यह लम्बी दौड़ दौड़ा।

**सजातीय क्रिया**- जब अकर्मक क्रिया अपने धातु से बने हुए कर्म के साथ प्रयुक्त होती है, तो वह सकर्मक हो जाती है, एवं सजातीय क्रिया कहलाती है। जैसे-

वह खेल खेलता है।

वह दौड़ दौड़ता है।

**नाम धातु**- नाम धातुएँ शब्दों से बनती हैं। प्रायः संज्ञा या विशेषण के आगे 'आ' प्रत्यय लगाकर वे वस्तुएँ बनायी जाती है। इस धातु को नाम धातु कहते हैं। जैसे-

लिख + आ = लिखा

पढ़ + आ = पढ़ा

दौड़ + आ = दौड़ा

इस तरह हम देखते हैं कि व्युत्पति ही क्रिया की प्राण शक्ति होती है।

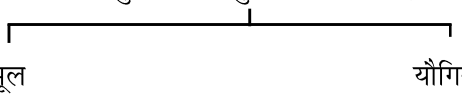


**मूल**- जो क्रिया स्वाधीन रूप में वर्तमान रहती है तथा जिसमें किसी प्रत्यय का संयोग नहीं होता उसे मूल क्रिया कहते हैं। जैसे- चल, पढ़, खा, लिख आदि।

**यौगिक**- जो क्रिया किसी वस्तु या प्रत्यय से बनती है, उसे यौगिक क्रिया कहते हैं। जैसे-

उछलना, पढ़ना, टहलना, उठाना, लेना- उठा लेना आदि।

यौगिक की क्रियायें तीन प्रकार की होती है-

(1) प्रेरणार्थक (2) संयुक्त और (3) नाम धातु।

इन यौगिक क्रियाओं की चर्चा की जा चुकी है।

अवस्था, काल, वाच्य, पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार क्रियाओं के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं।

## अभ्यास

(1) क्रिया किसे कहते हैं? क्रिया के कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित समझाओ।

(2) द्विकर्मक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और सहायक क्रियाओं को उदाहरण द्वारा समझाओ।

(3) सजातीय कर्म और सजातीय क्रिया में क्या अन्तर होता है ? उदाहरण द्वारा समझाओ।

(4) व्युत्पत्ति के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं ? प्रत्येक के उदाहरण दो।

(5) यौगिक क्रियाएँ कितने प्रकार की होती है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

## वाच्य

वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं, जिससे जाना जाता है कि वाक्य में क्रिया द्वारा किये गये विधान (कही गयी बात) का विषय कर्त्ता है, अथवा कर्म है, या भाव है।

**वाच्य तीन प्रकार के होते हैं**

(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

**(1) कर्तृवाच्य**- जहाँ क्रिया में कर्त्ता की प्रधानता होती है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है। जैसे-

मोहन पत्र लिखता है।

इस वाक्य में 'लिखता है' क्रिया, कर्त्ता 'मोहन' के अनुसार है। अर्थात् यहाँ कर्त्ता की प्रधानता है। कर्तृवाच्य में क्रिया के लिए और वचन मुख्यतया कर्त्ता के अनुसार होते हैं। इस वाच्य में क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों ही हो सकती है।

**(2) कर्मवाच्य**- जहाँ क्रिया में कर्म की प्रधानता रहती है, वहाँ कर्मवाच्य होता है। जैसे-

मोहन के द्वारा पत्र लिखा जाता है।

इस वाक्य में क्रिया 'लिखा जाता है' के लिंग, वचन पुरुष आदि कर्म

'पत्र' के अनुसार है। अर्थात् यहाँ कर्म की प्रधानता है। इस वाक्य में क्रिया सकर्मक होती है। कर्त्ता के उपस्थित होने पर उसे करण कारक में रखा जाता है तथा उसके साथ साधारणत: 'से' द्वारा चिह्न लगाये जाते हैं।

**( 3 ) भाववाच्य**- जहाँ क्रिया में केवल क्रिया की प्रधानता होती है, वहाँ भाववाच्य होता है। इसमें कर्त्ता अथवा कर्म की प्रधानता नहीं होती। भाववाच्य में क्रिया अकर्मक, एकवचन, पुंलिंग तथा अन्य पुरुष में होती है। जैसे-राम से सोया नहीं जाता। इस वाक्य में न तो कर्त्ता की प्रधानता है और न कर्म की, अपितु भाव की प्रधानता है; अत: यह भाववाच्य हुआ।

## वाच्य परिवर्तन

| **कर्तृवाच्य** | **कर्मवाच्य** |
|---|---|
| (1) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ | मुझसे पुस्तक पढ़ी जाती है। |
| (2) राम नहीं लिखता | राम से लिखा नहीं जाता। |
| (3) मैंने किताब पढ़ी | मुझसे किताब पढ़ी गयी। |

| **कर्तृवाच्य** | **भाववाच्य** |
|---|---|
| (1) मोहन दौड़ता है | मोहन से दौड़ा जाता है। |
| (2) वह नहीं टहलता | उससे टहला नहीं जाता। |
| (3) वह बैठता है | उससे बैठा जाता है। |

(1) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय प्रधान क्रिया को भूतकालिक क्रिया में बदला जाता है तथा कर्मवाच्य में कर्म को कर्त्ता में तथा कर्त्ता को करण कारक में बदला जाता है। इस वाच्य में क्रिया और कर्म के लिंग, वचन एक से होते हैं।

(2) कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाते समय कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूत के रूप में लाया जाता है।
भाववाच्य की क्रिया सदा अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन में आती है। इसमें क्रिया का मेल न तो कर्त्ता से रहता है और न कर्म से।

## क्रिया के प्रयोग

प्रयोग के अनुसार क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है-

**( 1 ) कर्त्तरि प्रयोग**- इसमें क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्त्ता के अनुसार होते हैं। जैसे-

राम रोटी खाता है। सीता पढ़ती है।

सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं का कर्त्तरि प्रयोग होता है।

**कर्मणि प्रयोग**- इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे-

सीता ने पत्र लिखा। मोहन ने रोटी खायी। मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता।

ऐसे वाक्य में कर्त्ता के साथ आवश्यकतानुसार 'ने' चिह्न लगा रहता है, किन्तु कर्म के साथ चिह्न (को) नहीं लगा रहता।

**( 3 ) भावे प्रयोग**- इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष न तो कर्त्ता के अनुसार होते हैं और न कर्म के अनुसार, अपितु क्रिया सदा अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन में रहती है। जैसे- सीता ने घोड़े को पकड़ा। मुझसे हँसा जाता है।

भाव वाच्य की सारी क्रियाएँ 'भावे प्रयोग' में आती है।

## काल

क्रिया में जिन रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते है-

(1) भूत काल (2) वर्तमान काल (3) भविष्यत् काल

( 1 ) **भूत काल**- क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो उसे भूत काल कहते हैं। जैसे - वह चला गया।

( 2 ) **वर्तमान काल**- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाय, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

( 3 ) **भविष्यत् काल**- क्रिया के जिस रूप से उसके कार्य या व्यापार का आगे आने वाले समय में होना मालूम हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे- वह दिल्ली जाएगा।

## भूत काल के भेद

भूत काल के छह भेद हैं-

(1) सामान्य भूत (2) आसन्न भूत (3) पूर्ण भूत

(4) अपूर्ण भूत (5) संदिग्ध भूत (6) हेतु-हेतुमद भूत।

( 1 ) **सामान्य भूत**- क्रिया के जिस रूप से धातु काल की सामान्यता प्रकट हो, उसे सामान्य भूत कहते हैं। जैसे- राम ने पाठ पढ़ा।

( 2 ) **आसन्न भूत**- क्रिया के जिस रूप से उसके पूरा होने का समय निकट में ही जाना जाय, उसे आसन्न भूत कहते हैं। जैसे- सीता ने पत्र लिखा है।

( 3 ) **पूर्ण भूत**- क्रिया के जिस रूप से सुदूर भूत में काम के पूरा हो जाने की सूचना मिलती हो, उसे पूर्ण भूत कहते हैं। जैसे- राम ने पत्र लिखा था।

( 4 ) **अपूर्ण भूत**- क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि कार्य भूत काल में हो रहा है किन्तु समाप्त नहीं हुआ हो, तो उसे अपूर्ण भूत कहते हैं। जैसे- राम ने पत्र पढ़ रहा था।

( 5 ) **संदिग्ध भूत**- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि भूत काल में कार्य के होने में सन्देह हो उसे संदिग्ध भूत कहते है। जैसे- तुमने गाना गाया होगा।

**( 6 ) हेतु-हेतुमद भूत**- इस काल में क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है। जैसे- यदि तुम परिश्रम करते, तो जरूर सफल होते।

## वर्तमान काल के भेद

वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं-

(1) सामान्य वर्तमान (2) अपूर्ण वर्तमान (3) संदिग्ध वर्तमान

**( 1 ) सामान्य वर्तमान**- सामान्य वर्तमान काल क्रिया का वह रूप है, जो किसी कार्य का साधारण रूप से वर्तमान काल में होना प्रकट करे। जैसे - वह खाता है।

**( 2 ) अपूर्ण वर्तमान**- अपूर्ण वर्तमान वह काल है, जिससे यह प्रकट होता है कि क्रिया का व्यापार अभी समाप्त नहीं हुआ है, वरन् वर्तमान काल में चल रहा है। जैसे- राम खा रहा है।

**( 3 ) संदिग्ध वर्तमान काल**- काल के जिस रूप से उससे वर्तमान काल में होने संदेह होता है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे- राम खाता होगा।

## भविष्यत् काल के भेद

भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं-

(1) सामान्य भविष्यत्

(2) सम्भाव्य भविष्यत्।

**( 1 ) सामान्य भविष्यत्** - क्रिया के जिस रूप से भविष्यत् काल में उसके व्यापार होने की सूचना मिले, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं।

जैसे - मोहन जाएगा।

**( 2 ) सम्भाव्य भविष्यत्**- क्रिया के जिस रूप से उसके आगामी काल (भविष्यत् काल) में होने की सम्भावना होती है, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं। जैसे - आप खाएँ। सीता जाए।

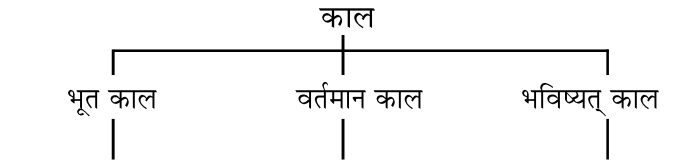


| | | |
|---|---|---|
| (1) सामान्य भूत | (1) सामान्य वर्तमान | (1)सामान्य भविष्यत् |
| (2) आसन्न भूत | (2) सन्दिग्ध वर्तमान | (2) सम्भाव्य भविष्यत् |
| (3) पूर्ण भूत | (3) अपूर्ण वर्तमान | |
| (4) अपूर्ण भूत | | |
| (5) संदिग्ध भूत | | |
| (6) हेतु-हेतुमद् भूत | | |

## क्रिया के प्रकार (Moods)

क्रिया के जिस रूप से उसके विधान, रीति, आज्ञा आदि का बोध होता है उसे 'क्रिया क प्रकार' कहते हैं।

### प्रकार के तीन भेद होते हैं-

(1) साधारण या निश्चयार्थक प्रकार-
(Indicative Mood)

(2) सम्भाव्य या सम्भावनार्थक प्रकार-
(Subjunctive Mood)

(3) आज्ञार्थक या विधि प्रकार-
(Imperative Mood)

(1) **साधारण प्रकार**- क्रिया के जिस रूप से साधारणत: क्रिया का होने का निर्देश पाया जाय, उसे साधारण या निश्चयार्थक प्रकार कहते हैं। जैसे- वह खाता है। राम पत्र लिखेगा। मैं वहाँ गया। सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान, सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण तथा अपूर्ण भूत और सामान्य भविष्यत् की क्रियाएं इस ''प्रकार'' के अन्तर्गत आती है।

(2) **सम्भाव्य प्रकार**- क्रिया के जिस रूप से सम्भावना, अनुमान, सन्देह आदि का बोध हो, उसे सम्भाव्य प्रकार कहते हैं। जैसे- काले-काले बादल दिखायी पड़ रहे हैं, सम्भव है वर्षा हो। संदिग्ध भूत, संदिग्ध वर्तमान तथा सम्भाव्य भविष्यत् काल की क्रियाएँ इस प्रकार के अर्न्तगत आती है।

(3) **आज्ञार्थक या विधि प्रकार**- जिस प्रकार से प्रर्थना आज्ञा, उपदेश, निषेध आदि का बोध हो, आज्ञार्थक या विधि प्रकार कहते हैं। जैसे- घर जाओ। मेरी सहायता करो। मैं अन्दर आ जाऊँ ?

**इसके दो भेद**

(क) सामान्य विधि

(ख) परोक्ष विधि

**( क ) सामान्य विधि**- सामान्य विधि वाली क्रिया से आज्ञा, प्रार्थना, आदि का सामान्य रूप से बोध होता है। जैसे-

तुम जाओ। आप इधर आइये।

प्राय: इसकी क्रिया वर्तमान काम में होती है।

**( ख ) परोक्ष विधि**- परोक्ष विधि की क्रिया से आज्ञा आदि का पालन भविष्यत् (आगे) में होने का संकेत किया जाता है। इसके क्रिया प्राय: भविष्यत काल में होती है। जैसे-

हम कभी-कभी आते रहेंगे।

तुम्हें ध्यान से पढ़ना चाहिए।

## काल के अनुसार क्रियाओं की रूप-रचना

भिन्न-भिन्न कालों में पुरुष, वचन के आधार पर क्रियाओं के रूप में परिवर्तन होते रहते हैं। इसी को क्रिया की रूप-रचना कहते हैं। पथ-प्रदर्शन के लिए कुछ काल-भेदों में क्रिया से कुछ रूप यहाँ दिये जाते हैं : अन्य धातुओं के भी रूप इन्हीं की भांति होंगे।

### देख धातु ( सकर्मक क्रिया कर्तृवाच्य )

#### वर्तमान काल

#### सामान्य वर्तमान (पुंलिंग )

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखता हूँ । | हम देखते हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू देखता है। | तुम देखते हो। |
| अन्य पुरुष | वह देखता है । | वे देखते हैं। |

#### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखती हूँ। | हम देखती हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू देखती है। | तुम देखती हो। |
| अन्य पुरुष | वह देखती है। | वे देखती है। |

#### अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देख रहा हूँ । | हम देख रहे हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू देख रहा है। | तुम देख रहे हो। |
| अन्य पुरुष | वह देख रहा है। | वे देख रहे हैं। |

#### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देख रही हूँ। | हम देख रही हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू देख रही है । | तुम देख रही हो। |
| अन्य पुरुष | वह देख रही है। | वे देख रही हैं। |

## संदिग्ध वर्तमान ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखता हूँगा। | हम देखते होंगे। |
| मध्यम पुरुष | तू देखता होगा। | तुम देखते होंगे। |
| अन्य पुरुष | वह देखता होगा। | वे देखते होंगे। |

## स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखती हूँगी। | हम देखती होंगी। |
| मध्यम पुरुष | तुम देखती होगी। | तुम देखती होगी। |
| अन्य पुरुष | वह देखती होगी। | वे देखती होंगी। |

## भूत काल ( सामान्य भूत )

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने देखा । | हमने देखा। |
| मध्यम पुरुष | तूने देखा । | तुमने देखा। |
| अन्य पुरुष | उसने देखा। | उन्होंने देखा। |

**नोट :** कर्त्ता स्त्रीलिंग होने पर भी कर्म न रहे तो सकर्मक क्रिया का रूप पुंलिंग जैसा होता है। कर्म रहने पर क्रिया का रूप कर्म के अनुसार बदल जाता है।

## आसन्न भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने देखा हूँ । | हमने देखा है। |
| मध्यम पुरुष | तूने देखा है। | तुमने देखा है। |
| अन्य पुरुष | उसने देखा है। | उन्होंने देखा है। |

**नोट**- स्त्रीलिंग के नियम सामान्य भूत जैसे ही हैं।

## पूर्ण भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने देखा था। | हमने देखा था। |
| मध्यम पुरुष | तूने देखा था। | तुमने देखा था। |
| अन्य पुरुष | उसने देखा था। | उन्होंने देखा था। |

**नोट**- स्त्रीलिंग के नियम सामान्य भूत जैसे ही है।

## संदिग्ध भूत ( पुंलिंग )

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने देखा होगा। | हमने देखा होगा। |
| मध्यम पुरुष | तूने देखा होगा। | तुमने देखा होगा। |
| अन्य पुरुष | उसने देखा होगा। | उन्होंने देखा होगा। |

**नोट :** स्त्रीलिंग के नियम सामान्य भूत जैसे ही है।

## अपूर्ण भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देख रहा था। | हम देख रहे थे। |
| मध्यम पुरुष | तू देख रहा था। | तुम देख रहे थे। |
| अन्य पुरुष | वह देख रहा था। | वे देख रहे थे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देख रही थी। | हम देख रही थी। |
| मध्यम पुरुष | तू देख रही थी। | तुम देख रही थी। |
| अन्य पुरुष | वह देख रही थी। | वे देख रही थी। |

## हेतु-हेतुमद् भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखता। | हम देखते। |
| मध्यम पुरुष | तू देखता। | तुम देखते। |
| अन्य पुरुष | वह देखता। | वे देखते। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखती। | हम देखती । |
| मध्यम पुरुष | तू देखती । | तुम देखती। |
| अन्य पुरुष | वह देखती । | वे देखती। |

## भविष्यत् काल

### सामान्य भविष्यत् ( पुंलिंग )

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं देखूँगा । | हम देखेंगे। |
| मध्यम पुरुष | तू देखेगा। | तुम देखोगे। |
| अन्य पुरुष | वह देखेगा। | वे देखेंगे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं लिखूँगी। | हम लिखेंगी। |
| मध्यम पुरुष | तू लिखेगी। | तुम लिखोगी। |
| अन्य पुरुष | वह लिखेगी। | वे लिखेंगी। |

### सम्भाव्य भविष्यत् ( पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं लिखूँ । | हम लिखें। |
| मध्यम पुरुष | तू लिखे। | तुम लिखो। |
| अन्य पुरुष | वह लिखे। | वे लिखें। |

## 'हँस' धातु ( अकर्मक ) कर्तृवाच्य

### वर्तमान काल

### सामान्य वर्तमान काल ( पुंलिंग )

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसता हूँ। | हम हँसते हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसता है। | तुम हँसते हो। |
| अन्य पुरुष | वह हँसता है। | वे हँसते हैं। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसती हूँ। | हम हँसती हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसती है। | तुम हँसती हो। |
| अन्य पुरुष | वह हँसती है। | वे हँसते हैं। |

### अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँस रहा था। | हम हँस रहे थे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँस रहा था। | तुम हँस रहे थे। |
| अन्य पुरुष | वह हँस रहा था। | वे हँस रहे थे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँस रही थी। | हम हँस रही थी । |
| मध्यम पुरुष | तू हँस रही थी। | तुम हँस रही थी। |
| अन्य पुरुष | वह हँस रही थी। | वे हँस रही थीं। |

### संदिग्ध वर्तमान ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसता हूँगा। | हम हँसते होंगे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसता होगा। | तुम हँसते होंगे। |
| अन्य पुरुष | वह हँसता होगा। | वे हँसते होंगे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसती हूँगी। | हम हँसती होंगी। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसती होगी। | तुम हँसती होगी। |
| अन्य पुरुष | वह हँसती होगी । | वे हँसती होंगी। |

### भूत काल

### सामान्य भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसा। | हम हँसे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसा। | तुम हँसे। |
| अन्य पुरुष | वह हँसा। | वे हँसे। |

**स्त्रीलिंग**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसी । | हम हँसी। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसी । | तू हँसी। |
| अन्य पुरुष | वह हँसी। | वे हँसी। |

**आसन्न भूत ( पुंलिंग )**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसा हूँ। | हम हँसे हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसा है। | तुम हँसे हो। |
| अन्य पुरुष | वह हँसा है । | वे हँसे हैं। |

**स्त्रीलिंग**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसी हूँ। | हम हँसी हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसी है। | तुम हँसी हो। |
| अन्य पुरुष | वह हँसी है। | वे हँसी हैं। |

**अपूर्ण भूत ( पुंलिंग )**

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँस रहा था। | हम हँस रहे थे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँस रहा था। | तुम हँस रहे थे। |
| अन्य पुरुष | वह हँस रहा था। | वे हँस रहे थे। |

**स्त्रीलिंग**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँस रही थी। | हम हँस रही थीं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँस रही थी। | तुम हँस रही थीं। |
| अन्य पुरुष | वह हँस रही थी। | वे हँस रही थीं। |

**पूर्ण भूत ( पुंलिंग )**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसा था। | हम हँसे थे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसा था। | तुम हँसे थे। |
| अन्य पुरुष | वह हँसा था। | वे हँसे थे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसी थी। | हम हँसी थीं। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसी थी। | तुम हँसी थीं। |
| अन्य पुरुष | वह हँसी थी। | वे हँसी थीं। |

### संदिग्ध भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसा हूँगा। | हम हँसे होंगे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसा होगा। | तुम हँसे होंगे। |
| अन्य पुरुष | वह हँसा होगा। | वे हँसे होंगे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसी हूँगी। | हम हँसी होंगी। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसी होगी। | तुम हँसी होगी। |
| अन्य पुरुष | वह हँसी होगी। | वे हँसी होंगी। |

### हेतु-हेतुमद् भूत ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसता । | हम हँसते। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसता। | तुम हँसते। |
| अन्य पुरुष | वह हँसता। | वे हँसते। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसती । | हम हँसतीं |
| मध्यम पुरुष | तू हँसती। | तुम हँसती। |
| अन्य पुरुष | वह हँसती। | वे हँसतीं। |

## भविष्यत् काल

### सामान्य भविष्यत् ( पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसूँगा। | हम हँसेंगे। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसेगा। | तुम हँसोगे। |
| अन्य पुरुष | वह हँसेगा। | वे हँसेंगे। |

### स्त्रीलिंग

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसूँगी । | हम हँसेंगी। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसेगी। | तुम हँसोगी। |
| अन्य पुरुष | वह हँसेगी। | वे हँसेंगी। |

### सम्भाव्य भविष्यत ( स्त्रीलिंग और पुंलिंग )

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं हँसूँ। | हम हँसें। |
| मध्यम पुरुष | तू हँसे। | तुम हँसें। |
| अन्य पुरुष | वह हँसे। | वे हँसें। |

## अभ्यास

(1) वाच्य किसे कहते हैं? उसके भेदों को उदाहरण सहित लिखो।

(2) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने की रीति बताओ।

(3) 'सीता ने पत्र लिखा'- किस वाच्य का वाक्य है?

(4) काल किसे कहते हैं? वर्तमान काल की परिभाषा देते हुए उसके भेद लिखो।

(5) भूत काल की परिभाषा देते हुए उसके भेद लिखो।

(6) भविष्यत काल की परिभाषा देते हुए उसके भेद लिखो।

(7) नीचे लिखी हुई क्रियाओं के काल स्पष्ट करो-

(क) जा रहा था।

(ख) दरभंगा जायेगा।

(ग) पत्र पढ़ चुका है।

(घ) पटना जा रहा है।

(8) भूत काल में वाक्य बनाओ-

(क) उत्सव मना रहा है।

(ख) हमें यह काम करना है।

(ग) मोहन सिनेमा देखता होगा।

(घ) वह पत्र लिखता है।

(9) 'प्रयोग' किसे कहते हैं? हिन्दी में क्रियाओं के कितने प्रयोग हैं? उदाहरण दो।

(10) 'लिखना' क्रिया के रूप वर्तमान काल के सभी भेदों में लिखो।

(11) 'पढ़ना' क्रिया के रूप भूत काल के सभी भेदों में लिखो।

(12) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाओ-

(क) मैं पत्र लिखता हूँ।

(ख) सीता पुस्तक पढ़ती है।

(ग) लड़के आम खायेंगे।

(घ) उसने पुस्तक पढ़ी।

(ङ) मोहन कलम खरीद रहा है।

## क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण वह शब्द है, जो क्रिया की विशेषता प्रकट करता है। जैसे संज्ञा से विशेषण का सम्बन्ध होता है। वैसे ही क्रिया विशेषण का क्रिया से होता है।

क्रिया-विशेषण एक अव्यय है। अव्यय, यानी जिसका रूप ज्यों-का-त्यों बना रहता है।

क्रिया-विशेषण केवल क्रिया की ही विशेषता प्रकट नहीं करता। अपितु विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण की भी विशेषता प्रकट करता है।

कभी-कभी तो यह वाक्य अथवा वाक्यांश की विशेषता ही प्रकट करता है। यह ढंग, परिमाण, देश, काल का भी बोध कराता है अथवा सन्देह, प्रश्न आदि के नाम भी प्रकट करता है।

अर्थ भेद की दृष्टि से क्रिया-विशेषण कई प्रकार के हैं; उनमें से मुख्य ये हैं-

**( 1 ) कालवाचक** - आज, कल, जब, कब, तब, झट, आजकल, सदा, नित्य, पल-पल, घड़ी-घड़ी, बार-बार, पुनःपुनः आदि।

**( 2 ) स्थानवाचक** - यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, पास, आसपास, सर्वत्र, इधर, उधर, जिधर, किधर, उस ओर, परे, दूर।

**( 3 ) परिमाणवाचक** - अत्यन्त, अति, बहुत ही, थोड़ा, तनिक, जरा, कुछ, कम, काफी, ठीक, और, थोड़ा-थोड़ा, यथाक्रम, तिल-तिल आदि।

**( 4 ) रीतिबोधक** - जैसे, कैसे, ऐसे, वैसे, यों, ज्यों, त्यों।

**( 5 ) क्रमबोधक** - पहले तो, फिर, पीछे, निदान।

**( 6 ) हेतुबोधक** - क्यों।

**( 7 ) संशय बोधक** - कदाचित, शायद, बहुत कर के।

प्रयोग के आधार पर क्रिया-विशेषण तीन प्रकार के होते हैं-

(1) साधारण, (2) संयोजक और (3) अनुबद्ध।

**( 1 ) साधारण**- जो क्रिया-विशेषण वाक्य में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होते हैं, उन्हें साधारण क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे, वह शीघ्र लौट आया। दिन जल्दी-जल्दी ढलता है। राम कहाँ चला गया? वह कब आएगा?

( 2 ) **संयोजक**- यह क्रिया विशेषण विशेषता भी प्रकट करता है और वाक्यों को मिलाता भी है। जैसे- जब सब चले गये, तब उसने सारी राम कहानी मुझसे कही।

( 3 ) **अनुबद्ध**- वे क्रिया-विशेषण जो किसी दूसरे शब्द के साथ प्रयुक्त होते हैं, अनुबद्ध क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

बुद्धू की दशा भी अपनी ही-सी बनाऊँगा।

व्युत्पति के अनुसार क्रिया-विशेषण दो प्रकार के हैं।

(1) मूल और (2) साधित।

( 1 ) **मूल**- जो क्रिया-विशेषण स्वयं सिद्ध हैं अर्थात् किसी और शब्द से नहीं निकले, वे मूल क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

पीछे, तो, न, आज, कल, पास, दूर, ऊपर, नीचे, आगे आदि।

( 2 ) **साधित**- जो क्रिया-विशेषण दूसरे शब्दों से बनाये जाते हैं, वे साधित क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

ऐसे, कैसे, वैसे, यहाँ, वहाँ, कहाँ आदि।

**ध्यातव्य**- कभी दो अथवा अधिक शब्दों का वाक्यांश ही क्रिया-विशेषण के सामने प्रयुक्त होता है। जैसे- झट से, अभी-अभी, एक बार, बहुतों करके, बहुत पहले, कभी न कभी, कुछ न कुछ, ऊपर को, एक साथ आते हैं।

( 2 ) **सम्बन्ध सूचक**- अव्यय का दूसरा रूप सम्बन्ध सूचक है, जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द से बताते हैं, उन्हें सम्बन्धवाचक अव्यय कहते हैं। जैसे-

साथ, आसपास, लगभग, ऊपर, बदले आदि।

( 3 ) **समुच्चयबोधक**- जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के आशय को एक दूसरे के साथ जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- और, कि, किन्तु आदि।

**( 4 ) विस्मयादिबोधक**- जो अव्यय हर्ष, विस्मय, शोक, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं और जिनका वाक्य के अन्य अंगों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहता है, वे विस्मायदिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- वाह, हाय, अहा, ओह, छी:, धिक आदि।

## अभ्यास

(1) क्रिया-विशेषण से क्या समझते हो ?

(2) अर्थ के अनुसार क्रिया-विशेषण के कौन-कौन से भेद हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

(3) सम्बन्धवाचक अव्यय क्या है ? उदाहरण द्वारा समझाओ।

(4) समुच्चयबोधक अव्यय से क्या समझते हो ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

(5) व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया-विशेषण के कितने भेद हैं ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

(6) प्रयोग के आधार पर क्रिया-विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

## चौथा अध्याय

# पद-परिचय ( शब्द-परिचय )

किसी वाक्य के लिंग, वचन, कारक, काल आदि का परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। पद-परिचय को ही पदान्वय या पद-व्याख्या कहते हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों से पद-परिचय के विषय में स्पष्ट बोध होता है।

(1) मोहन ने एक सुंदर ग्रंथ खरीदा।

**पद परिचय-**

मोहन- व्यक्तिवाचक संज्ञा, एक वचन, पुंलिंग, कर्त्ता कारक, 'खरीदा' क्रिया का 'कर्त्ता' है।

'ने' कर्त्ता की विभक्ति।

एक- विशेषण, संख्यावाचक, एकवचन, पुंलिंग, इसका विशेष्य 'ग्रंथ' है।

सुन्दर- विशेषण, गुणवाचक, एकवचन, पुंलिंग, इसका विशेष्य ग्रंथ है।

ग्रंथ- जातिवाचक संज्ञा, एक वचन, पुंलिंग, कर्म कारक, 'खरीदा' क्रिया का कर्म है।

'खरीदा' क्रिया, सकर्मक, एकवचन, पुंलिंग, भूत काल, कर्तृवाच्य, इसका कर्त्ता 'उसने' और कर्म 'ग्रंथ' है।

उदाहरण- (2) जो अपने वचन को नहीं पालता, वह विश्वास के योग्य नहीं है।

जो- सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'पालता' क्रिया का कर्त्ता।

अपने- निजवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, सम्बन्ध कारक, सम्बन्धी शब्द 'वचन' ।

वचन का- जातिवाचक, संज्ञा, एकवचन, पुंलिंग, कर्म कारक 'पालता' क्रिया का कर्म।

वह- निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'है' क्रिया का कर्त्ता।

विश्वास के- भाववाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, सम्बन्ध कारक, सम्बन्धी शब्द 'योग्य'।

योग्य- विशेषण, गुणवाचक, पुंलिंग, एकवचन, इसका विशेष्य 'वह' है।

नहीं- अव्यय, क्रिया-विशेषण, निषेधवाचक, इसका विशेष्य 'है' है।

है- क्रिया अपूर्ण, अकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान काल, अन्य पुरुष, पुंलिंग, एकवचन, इसका कर्त्ता 'वह' है।

उदाहरण-

(3) राम ने रावण को मारा।

पद-परिचय-

राम- व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'मारा' क्रिया का कर्त्ता ।

रावण- व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।

मारा- सकर्मक क्रिया, सामान्य भूत, एकवचन, इनका कर्त्ता 'राम' है।

सम्बन्ध वाचक का पद-परिचय- सीता के बिना राम रो रहे थे।

बिना- सम्बन्धवाचक अव्यय, सम्बन्धी 'सीता'।

(4) समुच्यबोधक का पद परिचय-

(क) मोहन और श्याम जाते हैं।

(ख) करो या मरो।

और- समुच्चयबोधक अव्यय संयोजक, 'मोहन' और 'श्याम' शब्दों को जोड़ता है।

या- समुच्चय बोधक अव्यय, 'करो' तथा 'मरो' शब्दों का विभाजन करता है।

(5) विस्मयादिबोधक का पद-परिचय-

(1) वाह! कितना सुन्दर है।

वाह- विस्मयादिबोधक, आश्चर्य प्रकट करता है।

## अभ्यास

**पद-परिचय करो-**

(1) राम को वहाँ जाना था, किन्तु वह नहीं गया।

(2) यह लड़का गाना गाता है।

(3) मैंने उससे फल लाने के लिए कहा।

(4) उसने दूध नहीं लिया।

(5) मंदिर के भीतर जाओ।

(6) ओह! जीवन कितना क्षणिक है।

(7) बाघ तेज दौड़ता है।

(8) वह आज आएगा।

## पाँचवाँ अध्याय

# सन्धि

सन्धि शब्द का अर्थ है 'मेल'। दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को सन्धि कहते हैं। जैसे-

देव + आलय = देवालय

रमा + ईश = रमेश

सु + आगत = स्वागत

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

(1) स्वर सन्धि

(2) व्यंजन सन्धि

(3) विसर्ग सन्धि

**( 1 ) स्वर सन्धि**- दो स्वरों के पास-पास आ जाने से जो सन्धि होती है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे- राम+ अवतार = रामावतार।

**( 2 ) व्यजन सन्धि**- व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से होने वाले विकार को व्यंजन सन्धि कहते हैं। जैसे- जगत+ ईश = जगदीश। सत् + आचार = सदाचार।

**( 3 ) विसर्ग सन्धि**- विसर्ग के साथ स्वर और व्यंजन के मेल से होने वाले विकार को विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे- निः + मल = निर्मल। निः + चल = निश्चल।

### स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के प्रधानतः पाँच भेद होते हैं-

(1) दीर्घ, (2) गुण, (3) वृद्धि, (4) यण, (5) अयादि।

**( 1 ) दीर्घ** - यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के पश्चात ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ ऋ आते हैं तो दोनों मिलकर दीर्घ बन जाते हैं।

इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं। जैसे–

| | |
|---|---|
| अ + अ = आ– | स्वर + अन्त = स्वरान्त |
| अ + आ = आ– | कुश + आसन = कुशासन |
| आ + अ = आ– | सेवा + अर्थ = सेवार्थ |
| आ + आ = आ– | विद्या + आयल = विद्यालय |
| इ + इ = ई– | प्रति + इति = प्रतीति |
| इ + ई = ई– | कवि + ईश्वर = कवीश्वर |
| ई + इ = ई– | शची + इन्द्र = शचीन्द्र |
| ई + ई = ई– | सती + ईश = सतीश |
| उ + उ = ऊ– | भानु + उदय = भानुदय |
| उ + ऊ = ई – | लघु + ऊर्मि = लघूर्मि |
| ऊ + उ =ई– | वधु + उत्सव = वधूत्सव |
| ऊ + ऊ = ई – | चमू + ऊष्म = चमूष्म |
| इ +ऋ = ऋ– | मातृ + ऋण = मातृण |

**( 2 ) गुण सन्धि**– यदि अ अथवा आ के आगे इ, ई, या उ, ऊ तथा ऋ हो तो क्रमशः 'ए', 'ओ', 'अर्' हो जाता है। इसे गुण सन्धि कहते हैं। जैसे–

| | |
|---|---|
| अ + इ = ए – | गज + इन्द्र = गजेन्द्र |
| अ + इ = ए – | देव + ईश = देवेश |
| आ + इ = ए – | महा + इन्द्र = महेन्द्र |
| आ + ई = ए – | महा + ईश = महेश |
| अ + उ = ओ – | वसन्त + उत्सव = वसन्तोत्सव |
| अ + ऊ = ओ – | जल + ऊमि = जलोर्मि |
| आ + उ = अ – | महा + उत्सव = महोत्सव |
| आ + ऊ = ओ – | गंगा + ऊमि = गंगोर्मि |
| अ + ऋ = अर् – | देव + ऋषि = देवर्षि |
| आ + ऋ = अर् – | महा + ऋषि = महर्षि |

**( 3 ) वृद्धि सन्धि** – अ अथवा आ के बाद यदि ए या ऐ और ओ या औ हो तो दोनों के स्थान में क्रम से ऐ और ओ हो जाते हैं। इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं। जैसे–

| | |
|---|---|
| अ + ए = ऐ – | एक + एक = एकैक |
| अ + ऐ = ऐ – | परम + ऐश्वर्य = परमेश्वर्य |
| आ + ए = ऐ – | तथा + एव = तथैव |
| आ + ऐ = ऐ – | महा + ऐश्वर्य = महेश्वर्य |
| अ + ओ = औ – | जल + ओकस = जलोकस |
| अ + औ + औ – | परम + औषधि = परमौषधि |
| आ + औ = औ – | महा + औदार्य = महौदार्य |

**( 4 ) यण् सन्धि**– यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के बाद कोई अन्य स्वर हो तो क्रम से ह्रस्व दीर्घ इ का य, उ का व और ऋ र् हो जाता है। इस सन्धि को यण् सन्धि कहते हैं। जैसे–

| | |
|---|---|
| इ + अ = य– | यदि +अपि = यद्यपि |
| इ + आ = य– | इति + आदि = इत्यादि |
| इ + उ = य– | प्रति + उपकार = प्रत्युपकार |
| इ + ऊ = य – | नि + ऊन = न्यून |
| इ + ए = य– | प्रति + एक = प्रत्येक |
| ई + अ = य – | देवी + अर्पण = देव्यर्पण |
| ई + आ = य– | सरस्वती+आगम= सरस्वत्यागम |
| ई + उ = य– | सखी + उचित = सख्युचित |
| ई + ऊ= य– | नदी + उर्मि = नद्यूर्मि |
| उ + अ= व– | मनु+ अन्तर = मनवन्तर |
| उ + अ = व– | सु + आगत= स्वागत |
| उ + इ = व– | अनु + इत= अन्वित |
| उ + ए = व– | अनु + एषण = अन्वेषण |
| ऋ + आ = र्– | मातृ + आनन्द = मात्रानन्द |
| ऋ + अ = र् – | पितृ + अनुमति = पित्रानुमति |

**( 5 ) अयादि सन्धि**– ए, ऐ, ओ और औ के बाद जब कोई भिन्न स्वर रहता है, तब उनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय, अव् और आव् हो जाते हैं। इसे अयादि सन्धि कहते हैं। जैसे–

| | |
|---|---|
| ए + अ = अय्– | ने +अन = नयन |
| ऐ + अ = आय्– | नै + अक = नायक |
| ओ + ई = अय्– | गो + ईश = गवीश |
| ओ + इ = अय्– | पो + इत्र = पवित्र |
| औ + अ = आव्– | पौ + अक् = पावक |
| औ + इ = आव– | नौ + इक = नाविक |
| औ + उ = आव– | भौ + उक = भावुक |

## व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि के मुख्य भेद–

(1) यदि वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद उसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण आये तो वर्ग के प्रथम वर्ण का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे–

दिक् + अम्बर = दिगम्बर
दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + जाल = वाग्जाल
वाक् + ईश = वागीश
कृत + अन्त = कृदन्त
भागवत् + गीता = भगवद्गीता
जगत् + ईश = जगदीश
अप् + ज = अब्ज

(2) यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद पाँचवाँ वर्ण आये तो प्रथम वर्ण के स्थान में पाँचवाँ वर्ग हो जाता है। जैसे–

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मास = षड्मास
जगत + नाथ = जगन्नाथ
सत् + मान = सम्मान
उत् + मत्त = उन्मत्त

(3) यदि त् के बाद वर्गों के प्रथम, द्वितीय और उष्म वर्णों को छोड़कर कोई दूसरा वर्ण या स्वर वर्ण आये तो 'त्' का 'द्' हो जाता है। जैसे–

जगत + आनन्द = जगदानन्द

उत् + गम = उद्गम

उत् + घाटन = उद्घाटन

सत + आचार = सदाचार

उत् + अय = उदय

उत् + भव = उद्भव

(4) भ् के बाद यदि क से म तक कोई वर्ण हो तो 'म्' का अनुस्वार अथवा बाद के वर्ण का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है जैसे–

अहम् + कार = अहंकार अथवा अहङ्कार

सम् + कल्प = संतोष अथवा सन्तोष

सम् + गम = संगम अथा सङ्गम

(5) यदि त् या द के आगे च अथवा छ हो तो त् या द् के स्थान पर च; ज झ का ज; ट, ठ का ट; ड, ढ का ह; और ल का ल् हो जाता है। जैसे–

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + चिन्न = उच्छिन्न

शरद + चन्द्र = शरच्चन्द्र

तत् + टीका = तट्टीका

(6) यदि 'म्' के बाद क् से म् तक के वर्णों को छोड़कर कोई और व्यंजन हो तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है। जैसे –

सम् + योग = संयोग

सम् + सार = संसार

सम् + वाद = संवाद

सम् + हार = संहार

सम् + शय = संशय

(7) यदि त् या द् के बाद ह हो तो त् का द् और ह का ध् हो जाता है। जैसे–

उद् + हार = उद्धार

तत् + हित = तद्धित

पद् + हति = पद्धति

(8) यदि स्वर के बाद छ हो तो छ का च्छ हो जाता है। जैसे–

आ + छादन = आच्छादन

परि + छेद = परिच्छेद

(9) ऋ, र् और ष् के बाद स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और य, व, ह में से कोई वर्ण बीच में आ जाने से न् ण् हो जाता है। जैसे–

प्र + मान = प्रमाण

ऋ + न = ऋण

मर् + अन = मरण

तृष + ना = तृष्णा

(10) (क) यदि च या ज् के बाद 'न' हो तो 'न' का 'ञ' हो जाता है। जैसे– यज् + न = यज्ञ

(11) (ख) यदि ष् के बाद 'त' या 'थ' आये तो क्रमशः 'ट' या 'ठ' हो जाता है। जैसे–

उत्कृष् + त = उत्कृष्ट

षष + ठ = षष्ठ

(12) यदि 'स' से पहले अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो तो स का ष् हो जाता है। जैसे–

अभि + सेक = अभिषेक

वि + सम = विषम

नि + सिद्ध = निषिद्ध

अपवाद–

अनु + सरण = अनुसरण

वि + स्मरण = विस्मरण

कुछ शब्दों की सन्धियाँ विशेष प्रकार की होती है-

अन्तर + राष्ट्रीय = अन्तर्राष्ट्रीय

स्त्री + उपयोगी = स्त्रियोपयोगी

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

## विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि के भेद-

(1) विसर्ग के बाद यदि त अथवा थ आवे तो विसर्ग का 'स' हो जाता है । जैसे-

वि: + तार = विस्तार

नि: + तेज = निस्तेज

मन: + ताप = मनस्ताप

(2) यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है। जैसे-

नि: + चल = निश्चल

नि: + छल = निश्छल

नि: + चय = निश्चय

(3) यदि विसर्ग के बाद ट अथवा ठ आये तो विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे-

धनु + ठंकार = धनुष्टंकार

नि: + ठा = निष्ठा

(4) यदि विसर्ग के आगे क, ख, या प, फ में से कोई अक्षर आवे और विसर्ग से पहले अक्षर में इ या उ हो तो विसर्ग का ष हो जाता है और यदि विसर्ग से पहले अ हो तो विसर्ग ही रहता है। जैसे-

नि : पाप = निष्पाप

## सन्धि

नि : + फल = निष्फल

दुस: + पाप = दुष्पाप

रज: + कण = रज:कण

प्रात: + काल = प्रात:काल

पय: + पान = पय:पान

अन्त: + करण = अन्त:करण

अपवाद–

नम: + कार = नमस्कार

पुर: + कार = पुरस्कार

(5) विसर्ग से पूर्व यदि अ, आ से भिन्न कोई स्वर हो और उसके बाद कोई स्वर या वर्ण का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है। जैसे–

दु: + उपयोग = दुरुपयोग

नि: + आधार = निराधार

दु: + गति = दुर्गति

नि: + धन = निर्धन

नि: + बल = निर्बल

नि: + झर = निर्झर

नि: + गुण = निर्गुण

(6) यदि विसर्ग के पहले ह्रस्व स्वर हो और विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और (विसर्ग से पहले) ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है । जैसे–

नि: + रस = निरस

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रव = नीरव

(7) यदि विसर्ग के पहले अ स्वर रहे और बाद में वर्णों का तृतीय, चतुर्थ, पंचम या य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण आये तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे-

मनः + हर = मनोहर
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + योग = मनयोग
वयः + वृद्ध + वयोवृद्ध
पयः + धर = पयोधर
यशः + धरा = यशोधरा
सरः + वर = सरोवर

(8) जब विसर्ग से पूर्व अ हो और बाद में भी अ हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है और आगे वाला अ अर्ध अ ऽ का रूप धारण कर लेता है। जैसे-

यशः + अभिलाषा = यशोऽभिलाषा
प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः।

## अभ्यास

(1) सन्धि किसे कहते हैं?
(2) सन्धि के कितने भेद हैं। उदाहरण सहित वर्णन करो।
(3) स्वर सन्धि के कितने भेद हैं? उदाहरण दो।
(4) सन्धि करो- हिम + आयल, राम + ईश, भानु + उदय, स्व + आगत, भौ + उफ, उत् + हार, जगत् + ईश, विपद् + जाल, सत्+चरित्र, स्वसः + वर, तेजः + मय, निः + कपट, निः + रस, दुः + चिन्ता, मनः + हरि, हरि + चन्द्र।
(5) सन्धि विच्छेद करो-
कामेश्वर, रमेश, महेश, महोत्सव, परमात्मा, नयन, यद्यपि, अन्वय, पावन, नायक, जगन्नाथ, जगदीश, सज्जन, संकल्प, वयोवृद्ध, दुर्गम, निरोग, दिग्गज, पयोधि, यशोदा, धर्मोपदेशक, निस्तेज, निष्फल, निर्झर, निश्चछ।

## छठा अध्याय

# समास

जब दो या दो से अधिक शब्द अपनी-अपनी विभक्तियों को छोड़कर एक जगह मिलते हैं, तब उस मेल को समास कहा जाता है। जैसे- राजा का मंत्री - राजमंत्री

मिले हुए शब्द को समस्त पद या समस्त शब्द कहते हैं। समस्त पद के खंड करके उनका परस्पर सम्बन्ध दिखाने की रीति को 'विग्रह' कहते हैं। जैसे- 'राजमंत्री' समस्त पद का विग्रह होगा 'राजा का मंत्री'। यहाँ समास होने पर 'का' विभक्ति का लोप हो गया।

समास की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) समास में दो या दो से अधिक शब्द मिलते हैं।

(2) वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते हैं।

(3) समास में समस्त होने वाले पदों की विभक्तियाँ समाप्त हो जाती है। जैसे- राजा का पुत्र = राजपुत्र।

(4) आवश्यकता होने पर समस्त पदों के बीच संधि हो सकती है।

(5) 'समास' शब्द का अर्थ है- संक्षेप में छोटा करना।

समास के मुख्य चार भेद हैं-

(1) अव्ययी भाव समास

(2) तत्पुरुष समास

(3) बहुब्रीहि समास

(4) द्वन्द्व समास

कर्मधारय, द्विगु तथा नञ समास तत्पुरुष समास के ही उपभेद माने जाते हैं।

**( 1 ) अव्ययी भाव समास**- जिस समस्त पद के प्रथम पद अव्यय हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं। इस समास में प्रथम पद की प्रधानता होती है। जैसे-

यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
यथाक्रम (क्रम के अनुसार)
प्रतिदिन (दिन-दिन)
आजन्म (जन्म तक)
अनुरूप (रूप के अनुसार)

इस समाज में पहला पद अव्यय होता है तथा दूसरा पद संज्ञा। समस्त पद बनने पर वह अव्यय हो जाता है अर्थात् इसमें लिंग, वचन आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

**( 2 ) तत्पुरुष**- जिस समस्त पद का दूसरा पद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे- गंगा का जल = गंगाजल

तत्पुरुष समास के दो भेद हैं-

(1) व्याधिकरण तत्पुरुष
(2) समानाधिकरण तत्पुरुष

**( 1 ) व्याधिकरण तत्पुरुष**- जब समस्त पदों के विग्रह करने पर भिन्न-भिन्न विभिक्तियों का प्रयोग हो तो व्याधिकरण तत्पुरुष होता है। असल अर्थ में तत्पुरुष समास यही कहलाता है। इसके निम्नलिखित भेद हैं-

(1) कर्म तत्पुरुष (2) करण तत्पुरुष (3) सम्प्रदान तत्पुरुष (4) अपादान तत्पुरुष (5) सम्बन्ध तत्पुरुष (6) अधिकरण तत्पुरुष।

**( 1 ) कर्म तत्पुरुष**- इसमें कर्म कारक की विभक्ति छिपी रहती है। जैसे- स्वर्ग प्राप्त (स्वर्ग को प्राप्त), चिड़ीमार (चिड़ियों को मारने वाला) माखनचोर (माखन को चुराने वाला), मुँहतोड़ (मुँह को तोड़ने वाला)

**( 2 ) करण तत्पुरुष**- इसमें करण कारक की विभक्ति छिपी रहती है। जैसे-

तुलसीकृत (तुलसी द्वारा कृत)
मेघाच्छन्न (मेघ से आच्छन्न)
शोकाकुल (शोक से व्याकुल)

**( 3 ) सम्प्रदान तत्पुरुष**- इस समास में सम्प्रदान कारक की विभक्ति सन्निहित रहती है। जैसे- देश भक्ति (देश के लिए भक्ति), कन्यादान (कन्या के लिए दान), विधान सभा (विधान के लिए सभा), रसोई घर (रसोई के लिए घर)।

**( 4 ) अपादान तत्पुरुष**- इसमें अपादान कारक की विभक्ति का लोप रहता है। जैसे-

पदच्युत (पद से च्युत)
जन्म रोगी (जन्म से रोगी)
जन्मान्ध (जन्म से अन्धा)

**( 5 ) सम्बन्ध तत्पुरुष**- इस समास में सम्बन्ध कारक की विभक्ति का लोप रहता है। जैसे-

राजपुत्र (राजा का पुत्र)
राजदूत (राजा का दूत)
सूर्योदय (सूर्य का उदय)
गुरु-सेवा (गुरु की सेवा)
जीवन दाता (जीवन का दाता)

**( 6 ) अधिकरण तत्पुरुष**- इस समास में अधिकरण कारक की विभक्ति का लोप रहता है। जैसे-

शरणागत (शरण में आगत)
गृह-प्रवेश (गृह में प्रवेश)
नगर-वास (नगर में वास)
भूमि-शयन (भूमि पर शयन)

**2. समानाधिकरण तत्पुरुष**- इसे कर्मधारय कारक भी कहते हैं। इस समास में विशेषण तथा विशेष्य अथवा उपमान और उपमेय का मेल रहता है। (इसके विग्रह करने पर दोनों खण्डों में एक कर्त्ता कारक की ही प्रथमा विभक्ति रहती है।) जैसे-

**( 1 ) विशेषण-विशेष्य**- नीलाम्बर = नीला अम्बर, नील गाय= नीली गाय, पीताम्बर = पीता अम्बर।

**( 2 ) उपमान उपमेय**- चन्द्रमुख = चन्द्रमा के समान मुख, चरण-कमल = कमल के समान चरण, प्राणप्रिय = प्राणों के समान प्रिय।

**द्विगु**- द्विगु कर्मधारय का एक भेद है। जिस कर्मधारय समास का पहला पद संख्यावाची हो और जिससे एक समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे- चतुर्मास (चार महीनों का समूह), सप्तलोक (सात लोकों का समूह), त्रिभुवन (तीन भुवनों का समाहार)।

इसी प्रकार चौमासा, नवग्रह, पंचपात्र, दोपहर, त्रिकाल, अठन्नी, चौमुहानी, आदि द्विगु समास है।

**नञ समास**- कहीं-कहीं निषेधार्थक अ और अन् (स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में) लगाकर भी शब्दों का निर्माण होता है। इसे अभावात्मक तत्पुरुष या नञ् समास कहते हैं । जैसे-

असभ्य (न सभ्य), अनन्त (न अंत), अनादि ( न आदि), अन्याय (न न्याय) आदि शब्द इसके उदाहरण हैं।

**3. बहुब्रीहि समास** - जो समास अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी भिन्न अर्थ का बोध करावे उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। इसमें कोई भी खण्ड प्रधान नहीं होता, अपितु बाहर से अर्थ लगाया जाता है। जैसे-

चक्रपाणि- चक्र है पाणि (हाथ) में जिसका (वह) - विष्णु।

चन्द्रशेखर- चन्द्र है शेखर (मस्तक) पर जिनके वह - महादेव।

दशानन- दस हैं आनन जिनके वह - रावण ।

पीताम्बर- पीला है अम्बर जिनका वह- कृष्ण।

चतुर्भुज - चार भुजाएँ हैं जिनकी वह - विष्णु।

**4. द्वन्द्व समास**- जिस समास के दोनों पद (या सभी पद) प्रधान हो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे-

सीताराम (सीता और राम)

दालभात (दाल और भात)

सुख-दुःख (सुख और दुःख)

रात-दिन (रात और दिन)

पाप-पुण्य (पाप और पुण्य)

हानि-लाभ (हानि और लाभ)

माता-पिता (माता और पिता)

**समास सम्बन्धी विशेष बातें**

(1) समासों का निर्णय बहुत कुछ उनके विग्रह पर आधारित होता है। क्योंकि एक ही समस्त पद में अनेक समास हो सकते हैं। जैसे-

पीताम्बर = पीला अम्बर = कर्मधारय

पीला है अम्बर जिसका वह- विष्णु, कृष्ण = बहुब्रीहि

त्रिनेत्र- तीन नेत्रों का समाहार = द्विगु

तीन नेत्र हैं जिनके वह- शिव= बहुब्रीहि

(2) द्वन्द्व समास से बने समस्त पद अधिकांशतः पुंलिंग हैं।

(3) कभी-कभी तत्पुरुष समास का प्रथम पद भी प्रधान होता है। जैसे- राजहंस (हंसों का राजा)

## कर्मधारय और बहुब्रीहि में अन्तर

कर्मधारय तथा बहुब्रीहि समास में यह अन्तर है कि कर्मधारय में पहला और पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है परंतु बहुब्रीहि के दोनों खण्डों में परस्पर विशेष्य-विशेषण भाव नहीं होता, बल्कि सारा पद किसी दूसरे पद का विशेषण होता है; जैसे- पीताम्बर का अर्थ यदि 'पीला वस्त्र' लगाया जाय तो वह कर्मधारय समास होगा और यदि इसका अर्थ 'पीला है वस्त्र जिसका' '(वह)' लगाया जाय तो वह बहुब्रीहि समास होगा।

## सन्धि और समास में अन्तर

(1) सन्धि दो वर्णों में होती है, समास दो शब्दों में होता है।

(2) सन्धि होने पर वर्णों में विकार उत्पन्न होता है; किन्तु समास में यह आवश्यक नहीं है।

(3) समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है, सन्धि में ऐसा नहीं होता।

(4) समास में विभक्ति चिह्नों का लोप होना आवश्यक है किन्तु सन्धि में विकार उत्पन्न होता है, विभक्ति का लोप नहीं होता।

(5) सन्धि का अर्थ है- संयोग; समास का अर्थ है- संक्षेप।

(6) सन्धि तोड़ने को विच्छेद कहते हैं और समास को तोड़ने को विग्रह कहा जाता है।

(7) समस्त पदों के बीच में सामासिक रेखा (-) का भी प्रयोग किया जाता है किन्तु सन्धि में यह नहीं होता।

## अभ्यास

(1) समास किसे कहते हैं?

(2) समास के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित समझाओ।

(3) तत्पुरुष के कौन-कौन से भेद हैं?

(4) 'समास पद' तथा विग्रह से तुम क्या समझते हो?

(5) कर्मधारय तथा बहुब्रीहि समास में क्या अन्तर है? सोदाहरण समझाओ।

(6) विग्रह सहित समास निर्धारण करो-

राजभवन, गृहप्रवेश, भरपेट, नवरत्न, पदच्युत, यथासम्भव, धनहीन, जेबखर्च, आमरण, त्रिभुवन, दिगम्बर, कामचोर, कपड़ालत्ता, रात-दिन, लोटा-खोरी, अक्षत, पशुपति, अगोचर, राष्ट्रपति, पीताम्बर, कमल-नयन, देश-भक्ति, गंगाजल, युधिष्ठिर, चौमासा।

(7) समास और सन्धि के अन्तर को सोदाहरण समझाओ।

(8) निम्नलिखित समास विग्रहों से समस्त पद बनाओ-

पद से च्युत, रण में कुशल, घोड़े का दौड़, लम्बा है उदर जिसका वह, प्राणों से प्यारा, कला में प्रवीण, यश के लिए शाला, शक्ति के अनुसार, आप पर बीती।

## सातवाँ अध्याय

# उपसर्ग और प्रत्यय

'उपसर्ग' उस शब्दांश को कहते हैं जो किसी शब्द के पूर्व जोड़ा जाता है और जिसके संयोग से नया शब्द बनता है। जैसे-
दुर्+जन=दुर्जन, प्र+बल=प्रबल, वि+हार=विहार,
वि+अव+हार=व्यवहार, सु+वि+अव +हार=सुव्यवहार।

**प्रत्यय** - ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अन्त में जोड़े जाते हैं और जिनमें यौगिक शब्द बनाये जाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण; क्रिया और अव्यय सभी प्रकार के शब्दों के साथ होता है। जैसे, मनुष्य+त्व=मनुष्यत्व, नगर+इक=नागरिक, लिख+वट=लिखावट, महान्+ता=महानता,आदि।

### संस्कृत के उपसर्ग

(1) प्र- अतिशय, उत्कर्ष, यश आदि के अर्थ में; जैसे-प्रख्यात, प्रताप, प्रचार, प्रबल, प्रसिद्ध आदि।

(2) परा- विपरीत, पीछे, अनादर आदि के अर्थ में; जैसे- पराजय, पराभव, पराधीन, परास्त आदि।

(3) अप- विरुद्ध, हीनता, अभाव आदि के अर्थ में; जैसे- अपयश, अपमान, अपवाद, अपकार, अपशब्द आदि।

(4) सं- साथ, पूर्ण आदि के अर्थ में; जैसे- संतोष, संवाद, संस्कृत, संग्रह आदि।

(5) अनु- सादृश्य, पीछे आदि के अर्थ में; जैसे- अनुरूप, अनुगामी, अनुचर आदि।

(6) अव- हीनता, अभाव आदि के अर्थ में; जैसे-अवज्ञा, अवगुण, अवनति, अवतार आदि।

(7) निर् (निस्)-निषेध, बाहर, वा रहित आदि के अर्थ में; जैसे- निराकार, निरपराध, निर्गुण, निर्धन आदि।

(8) दुर् - कठिनता, दुष्टता और बुरा आदि अर्थ प्रकट करने वाला; जैसे-दुराचार, दुर्गम, दुर्दशा, दुर्गुण, दुर्बुद्धि आदि।

(9) अभि- अधिकता और आदि के अर्थ में; जैसे- अभिमान, अभ्यागत, अभिमुख, अभिसार आदि।

(10) वि- निम्नता, हीनता आदि के अर्थ में; जैसे- विलाप, विवाद, वियोग आदि।

(11) अधि- प्रधानता, श्रेष्ठता आदि के अर्थ में; जैसे- अधिपति, अध्यात्म, अधिकार आदि।

(12) सु- उत्तमता, श्रेष्ठता आदि के अर्थ में; जैसे- सुजनता, सुगंध, शुयश आदि।

(13) उत्- उच्चता, श्रेष्ठता आदि के अर्थ में; जैसे- उत्कर्ष, उत्पत्ति, उल्लेख आदि।

(14) अति- अतिशय, ऊपर के अर्थ में; जैसे- अतिरिक्त, अतिकाल, अत्यन्त आदि।

(15) नि-बाहर, नीचे आदि के अर्थ में; जैसे-निपात, नियोग, निरोध, निवारण आदि।

(16) प्रति-विरोध , बराबरी आदि के अर्थ में; जैसे- प्रतिवाद, प्रत्युत्तर, प्रतिकुल, प्रतिदिन, प्रतिवर्ष आदि।

(17) परि- पूरा के अर्थ में; जैसे- परिपूर्ण, परितोष, परिजन, आदि।

(18) अपि- निश्चय या दुराव के अर्थ में; जैसे- अपिधान।

(19) उप- समानता, गौणता आदि के अर्थ में; जैसे-उपवन, उपजाति, उपस्थित, उपकार आदि।

(20) आ- विरोध, सीमा, चढ़ाव या खिंचाव आदि के अर्थ में; जैसे- आदान, आरोहण, आसमुद्र, आजन्म आदि।

## हिन्दी उपसर्ग

हिन्दी, उपसर्ग बहुधा संस्कृत-उपसर्गों के अपभ्रंश होते हैं।

(1) अ-निषेध और अभाव के अर्थ में, जैसे- अजान, अचेत., अपढ़ आदि।

(2) अन-अभाव, निषेध, वा विरोध आदि के अर्थ में, जैसे- अनजान, अनमोल आदि।

(3) नि- निषेध और अभाव आदि के अर्थ में, जैसे- निकाम, निडर आदि।

(4) भर- पूर्णता के अर्थ में, जैसे- भरसक, भरपेट, भरपूर आदि।

(5) दु-दीनता या बुरे के अर्थ में, जैसे- दुकान, दुबला आदि।

(6) बिन-निषेध वा अभाव के अर्थ में, जैसे- बिनजाने, बिनचाहा आदि।

(7) स- भले के अर्थ में, जैसे- सपूत।

(8) अध-आधा के अर्थ में, जैसे- अधकच्चा, अधफूला, अधखिली आदि।

(9) औ-हीनता या निषेध के अर्थ में, जैसे- औगुन, औखट आदि।

(10) सु-अच्छे अर्थ में, जैसे-सुडौल, सुजान, सुकाल आदि।

## प्रत्यय

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(1) वे जो धातु के बाद आते हैं और वे

(2) जो नाम के बाद आते हैं।

पहला कृत और दूसरा तद्धित कहलाता है। जैसे-

मित्र+तर=मित्रतर (तद्धित में)

देखना+वट=दिखावट (कृदन्त में)

कृत प्रत्यय 5 प्रकार के होते हैं

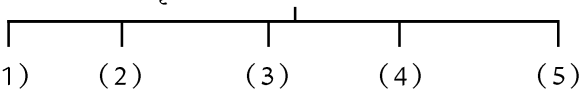


कर्तृवाचक कर्मवाचक करणवाचक भाववाचक क्रियाद्योतक

(1) कर्तृवाचक–वाला, हारा सार, आका आदि लगाने से; जैसे– दौड़नेवाला, पालनेवाला, लड़का आदि।

(2) कर्मवाचक–सकर्मक क्रिया के धातु में 'नी' प्रत्यय लगाने से; जैसे– ओढ़ (ना)+नी=ओढ़नी, रख (ना)+नी=रखनी आदि।

(3) करणवाचक– आ, ई, अन आदि लगाने से; जैसे–

भूल+आ=भूला

फाँस+ई=फाँसी

लख+अन=लखन आदि।

(4) भाववाचक–आ, ई, आई आदि लगाने से; जैसे–

घेर+आ=घेरा

हँस+ई=हँसी

लड़+आई=लड़ाई आदि

(5) क्रियाद्योतक–'या' प्रत्यय लगाने से; जैसे–

पी+या=पिया

जी+या=जिया

ला+या=लाया आदि।

तद्धित के भेद

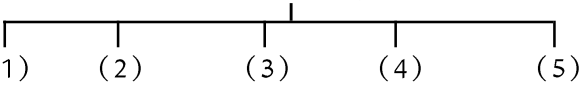


कर्तृवाचक भाववाचक अपत्यवाचक ऊनवाचक गुणवाचक

(1) कर्तृवाचक-आर, आरी इ या ई आदि लगाने से; जैसे-चमार, सोनार, पुजारी, खिलाड़ी, दुखिया आदि।

(2) भाववाचक- आ, आई, आका, आयत आदि लगाने से; जैसे- लड़ाई, बुढ़ापा, लड़कपन आदि।

(3) अपत्यवाचक- अ, इ,य, ऐ आदि लगाने से; जैसे- पांडव, राघव, दाशरथि, दैत्य आदि।

(4) ऊनवाचक- आ, क, री, ड़ी, ली आदि लगाने से; जैसे-पिलुवा, ढोलक, कटोरी आदि।

(5) गुणवाचक-आ, आलू, इक, ई आदि लगाने से; जैसे-भूखा, मैला, सैनिक, शारीरिक आदि।

## अभ्यास

(1) उपसर्ग और प्रत्यय से क्या समझते हो? सोदाहरण लिखो।

(2) संस्कृत के पाँच उपसर्गों से हिन्दी के बीस शब्दों का निर्माण करो।

(3) हिन्दी के किन्हीं पाँच उपसर्गों से पन्द्रह शब्द बनाओ।

(4) प्रत्यय के कितने प्रकार हैं और कौन-कौन? उदाहरण सहित समझाओ।

(5) कृत और तद्धित प्रत्यय में क्या अन्तर है?

(6) कृत एवं तद्धित के भेदों को उदाहरण के साथ समझाओ।

(7) नीचे लिखे उपसर्गों से शब्द रचना करो-
अति, अधि, अनि, प्र, प्रति, अप, आ, अव, स, सह, और अध।

(8) नीचे लिखे प्रत्ययों से शब्द रचना करो-
ता, नी, वान, इक, ओ, आ, ई, आइन, वह, इया, एरा, ना, हार आदि।

## आठवाँ अध्याय

# वाक्य-विचार

वाक्य सार्थक शब्दों के उस समूह को कहा जाता है जिससे वक्ता या लेखक का अभिप्राय जाना जा सके। इसलिए यह उचित है कि वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय का उचित मेल हो। प्रत्येक वाक्य में ये सभी शब्द हों, यह जरूरी नहीं हैं, किन्तु जो भी शब्द व्यवहृत हों उनका क्रम ठीक रहना चाहिए। अत: वाक्य रचना के लिए शब्दों के क्रम तथा शब्दों के मेल पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। तभी वाक्य शुद्ध, प्रभावशाली तथा स्पष्ट होगा।

### वाक्य-रचना के मुख्य नियम

(1) वाक्य में सर्वप्रथम कर्त्ता (उद्देश्य), उसके बाद कर्म या उसका पूरक और अन्त में क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे- राम रोटी खाता है। उसने पत्र लिखा।

(2) जिस वाक्य में क्रिया सकर्मक हों उसमें क्रिया के पहले कर्म को रखना चाहिए। द्विकर्मक क्रिया होने पर पहले गौण कर्म तब मुख्य कर्म रखा जाता है। जैसे- मैं धोबी को कपड़ा देता हूँ।

(3) सम्बोधन को वाक्य के प्रारम्भ में रखा जाता है। जैसे- ईश्वर! मुझे बचाओ।

(4) साधारणत: विशेषण विशेष्य के पहले आता है। जैसे- सुन्दर कमल लो।

(5) क्रिया-विशेषण क्रिया के पहले आता है। जैसे- धीरे-धीरे बोलो।

(6) सर्वनाम शब्दों के पूर्व विशेषण का प्रयोग नहीं होता, अपितु बाद में होता है। जैसे- राम बड़ा नटखट लड़का है।

(7) प्रश्नबोधक वाक्य अव्यय के प्रारम्भ में आता है। जैसे- किसने यह काम किया ?

(8) निषेधवाचक अव्यय क्रिया के ठीक पहले आता है। जैसे- उसने काम नहीं किया।

(9) यदि वाक्य में कई कारक हों तो वे कर्त्ता और क्रिया के मध्य में रखे जाते हैं।

(10) पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया के पहले आती है। जैसे- मैं पत्र पढ़ कर सो गया।

## कर्त्ता और क्रिया के अन्वय

(1) वाक्य में कर्त्ता यदि ('ने') चिह्न-रहित हो तो क्रिया के लिंग वचन आदि कर्त्ता के अनुसार होते हैं। जैसे-राम जाता है। सीता जाती है। मैं खाता हूँ। हम खाते हैं।

(2) यदि एक ही लिंग, वचन और पुरुष के अनेक चिह्न-रहित कर्त्ता हों तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होती है। जैसे-मोहन, सोहन और अशोक टहल रहे हैं।

(3) यदि दोनों लिंगों के एक वचन चिह्न-रहित अनेक कर्त्ता हो तो क्रिया साधारणतः पुंलिंग बहुवचन में होती है। जैसे- राजा-रानी टहल रहे थे। बाघ-बकरी एक घाट पर पानी पीते थे।

(4) जब किसी वाक्य में बहुवचनान्त या मिश्रित कई कर्त्ता हों तो क्रिया के लिंग, वचन आदि पुंलिंग बहुवचन में होंगे जैसे-

कुछ बालक, कुछ बालिकाएँ, कुछ पुरुष तथा कुछ महिलाएँ उपवन में घूम रहे थे।

अशुद्ध-कुछ बालक, कुछ बालिकाएँ, कुछ पुरुष तथा कुछ महिलाएँ उपवन में घूम रही थीं।

अशुद्ध–अब किशोर कुमार, बैजयन्ती माला, दिलीप कुमार, नरगिस आदि अभिनेता–अभिनेत्री रंगमंच पर आती हैं।
शुद्ध– जब किशोर कुमार.....आते हैं।

(5) आदर दिखाने के लिए एकवचन के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे–मेरे शिक्षक मुझे पढ़ा रहे हैं।

(6) यदि वाक्य में उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष तीनों पुरुष हों तो क्रिया उत्तम पुरुष में आती है। जैसे– हम, तुम और मोहन भोजन करेंगे।

(7) उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष के रहने पर क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष के रहने पर क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार होगी। जैसे– हम और तुम आज नाटक देखेंगे। वह और तुम क्या करते हो?

(8) विभक्ति–रहित कर्त्ताओं के साथ यदि समुदायवाचक शब्द हो तो क्रिया समुदायवाचक के अनुसार होगी। जैसे– लड़के–लड़कियों का झुण्ड आ रहा है।

(9) यदि एक ही पुरुष और लिंग की दो या दो से अधिक अप्राणिवाचक या भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में आयें तो क्रिया बहुधा एकवचन में ही रहती है। जैसे–आपकी बात से मुझे उत्साह और आनन्द हुआ।

(10) किसी भी वाक्य में यदि कर्त्ता के साथ 'ने' चिह्न हो परन्तु कर्म के आगे 'को' चिह्न न हो तो क्रिया कर्म के अनुसार होगी। जैसे– सीता ने भात खाया। राम ने रोटी खायी।

(11) यदि वाक्य में कर्ता चिह्न–रहित हो परन्तु कर्म का प्रयोग नहीं किया गया हो तो क्रिया एकवचन, पुंलिंग और अन्य पुरुष होगी। जैसे–सीता ने कहा।

## क्रिया और कर्म का अन्वय

(1) ऊपर कहा गया है कि कर्त्ता चिह्न-युक्त ('ने' से युक्त) हो तो क्रिया कर्म के अनुसार होगी। जैसे-सीता ने पत्र लिखा।

(2) यदि वाक्य में विभिन्न लिंग और वचनों के अनेक कारक-चिह्न रहित कर्म हों तो क्रिया कर्म के अनुसार होगी। जैसे-
राम ने गाय और बैल खरीदे।

## संज्ञा और सर्वनाम के अन्वय

(1) वाक्य में सर्वनाम के लिंग और वचन उस संज्ञा के लिंग और वचन के अनुसार होते हैं, जिसके बदले में सर्वनाम आता है। जैसे-सरिता कहती है कि मैं जाऊँगी।

(2) 'तू' का प्रयोग तुच्छ व्यक्ति के लिए अथवा आयु में छोटे व्यक्ति के लिए या कभी-कभी ईश्वर के लिए किया जाता है। जैसे-

अरे रामू! तू कितना बुद्धू है?

हे ईश्वर! तू कितना निर्दय है?

## सम्बन्ध और सम्बन्धी का अन्वय

(1) सम्बन्धी के अनुसार सम्बन्ध के लिंग और वचन होते हैं। जैसे-मोहन का लड़का।

मोहन के लड़के।

मोहन की लड़की।

(2) यदि एक ही सम्बन्ध के कई सम्बन्धी हों, तो सम्बन्ध का चिह्न पहले सम्बन्धी के अनुसार होगा। जैसे-राम की माता, भाई और बहन कहाँ हैं?

## विशेष्य और विशेषण का अन्वय

(1) विशेषण के लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं।

जैसे- अच्छा लड़का। अच्छी लड़की।

(2) यदि विशेष्य भिन्न-भिन्न लिंग के अनेक हो तो विशेषण पास वाले विशेषण के अनुसार होता है। जैसे-छोटे-छोटे लड़के तथा लड़कियाँ। बड़े-बड़े हाथी और हथनियाँ।

## अभ्यास

(1) कर्त्ता और क्रिया तथा कर्म और क्रिया के अन्वय पर उदाहरण के साथ प्रकाश डालो।

(2) सम्बन्ध और सम्बन्धी के अन्वय पर सोदाहरण प्रकाश डालो।

(3) विशेषण और विशेष्य के अन्वय पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखो।

(4) नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताते हुए शुद्ध करो।

सरिता ने लड्डू खायी। राम ने रोटी खाया। मोहन और सोहन घर जाएगा। सोहन की घोड़ा आता है। काला गाय दूध देती है। मेरा गाड़ी चलती है। लड़कों का झुण्ड निकली। राम तुम और मैं चलेगा। उसका माता-पिता आता है। सीता ने घोड़ा को पकड़ा। तुम्हारा स्कूल कहाँ है ? मेरे माता जी पाठ कर रहे हैं। रश्मि अच्छा लड़की है। नीलम का सब काम हो गया। सतीश का कलम कहाँ है।

## शुद्ध वाक्य-रचना

| | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|
| (1) | इस काम में बड़ा लाभ है। | इस काम में बहुत लाभ है। |
| (2) | वे बड़े भारी कवि थे। | वे बहुत बड़े कवि थे। |
| (3) | मृतात्मा की शान्ति के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें। | स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करें। |
| (4) | हम ताजमहल की सौंदर्यता पर मुग्ध हो गये। | हम ताजमहल के सौंदर्य पर मुग्ध हो गये। |
| (5) | हमने काशी जाना है। | हमें काशी जाना है। |
| (6) | मैं आरोग्य हो गया। | मैं नीरोग हो गया। |
| (7) | हम पढ़ने नहीं सकते। | हम पढ़ नहीं सकते । |
| (8) | वह विलाप करके रोने लगा। | वह विलाप करने लगा। |
| (9) | मेरा इसमें कुछ जिम्मेदारी नहीं। | मेरी इसमें कुछ जिम्मेदारी नहीं। |
| (10) | आपने राम का बड़ा उपकार किया। | आपने राम का बहुत उपकार किया। |
| (11) | कै बजे ? तीन बजा। | कितना बजा ? तीन बजे। |
| (12) | तुम्हारा सब काम गलत होता है। | तुम्हारे सब काम गलत होते हैं। |
| (13) | ये सब रीति अच्छी हैं। | ये सब रीतियाँ अच्छी हैं। |
| (14) | राम नीचा गिरा। | राम नीचे गिरा। |
| (15) | उसकी दो बहन हैं। | उसकी दो बहनें हैं। |
| (16) | वहाँ पुलिस खड़ा है। | वहाँ पुलिस खड़ी है। |
| (17) | हमारा संसद में अच्छे लोग बैठते हैं। | हमारी संसद में अच्छे लोग बैठते हैं। |

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| (18) कृपया करके यहाँ काम करिए। | कृपया यहाँ काम कीजिए। |
| (19) वह सकुशलता पूर्वक यहाँ पहुँचा। | वह कुशलतापूर्वक यहाँ पहुँचा। |
| (20) वह कल को आएगा। | वह कल आएगा। |
| (21) सबों ने इसकी प्रशंसा की। | सब ने इसकी प्रसंशा की। |
| (22) इसका रिपोर्ट निकल गया। | इसकी रिपोर्ट निकल गयी। |
| (23) शायद वह जरूर आएगा। | शायद वह आएगा।<br>अथवा- वह जरूर आएगा। |
| (24) सीता ने पत्र पढ़ी। | सीता ने पत्र पढ़ा। |
| (25) राम ने रोटी खाया। | राम ने रोटी खायी। |
| (26) हरेक आदमी यह चाहते है। | हरेक आदमी यह चाहता है। |
| (27) प्रत्येक व्यक्तियों का यह काम करना चाहिए। | प्रत्येक व्यक्ति को यह काम करना चाहिए। |
| (28) कृपया इस पर ध्यान देने की कृपा करें। | कृपया इस पर ध्यान दें।<br>अथवा-इस पर ध्यान देने की कृपा करें। |
| (29) उसकी सौभाग्यबती कन्या का विवाह होगा। | उसकी आयुष्मती कन्या का विवाह होगा। |
| (30) आप देरी न करें। | आप देर न करें। |
| (31) राम स्नान नहीं किया। | राम ने स्नान नहीं किया। |
| (32) इस समय आपकी आयु तीस वर्ष की है। | इस समय आपकी अवस्था(या उम्र) तीस वर्ष की है। |
| (33) राम ने मोहन को पुस्तक दिया। | राम ने मोहन को पुस्तक दी। |

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| (34) लड़का ने काम किया। | लड़के ने काम किया। |
| (35) सभी छात्र कहा। | सभी छात्रों ने कहा। |
| (36) सभी लड़कियों ने गयी। | सभी लड़कियाँ गयीं। |
| (37) मेरे को वहाँ जाना है। | मुझे वहाँ जाना है। |
| (38) वह सारी पुस्तक पढ़ डाला। | उसने सारी पुस्तक पढ़ डाली। |
| (39) आपका दर्शन कब होगा? | आपके दर्शन कब होंगे। |
| (40) उसका प्राण निकल गया। | उसके प्राण निकल गये। |
| (41) लड़की कही थी। | लड़की ने कहा था। |
| (42) उसने ज्वार खरीदा है। | उसने ज्वार खरीदी हैं। |
| (43) बच्चों के बिगड़ने का श्रेय माता-पिता को है। | बच्चों के बिगड़ने का दोष माता-पिता को है। |
| (44) इसमें भला-बुरा क्या हैं। | इसमें भला-बुरा क्या हैं? |
| (45) आप अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। | आप स्वार्थ सिद्ध करते हैं। |
| (46) तुम दण्ड देने योग्य हो। | तुम दण्ड पाने के योग्य हो। |
| (47) छात्रों ने अध्यापक को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया। | छात्रों ने अध्यापक को अभिनन्दन पत्र अर्पित किया। |
| (48) आपकी राय से यह कार्य ठीक है। | आपकी राय में यह कार्य ठीक है। |
| (49) सरिता अच्छी गाती है। | सरिता सुन्दर गाती है। |
| (50) सीता ने कहा कि वह मधेपुर जाएगी। | सीता ने कहा कि मैं मधेपुर जाऊँगी। |
| (51) उससे कहो कि जा। | उससे कहो कि जाए। |
| (52) तू जा तो। | तू जा तो सही। |

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| (53) वहाँ भारी भरकम भीड़ जमा है। | वहाँ भारी भीड़ जमा है। |
| (54) (क) मैं मेरा काम करता हूँ। | मैं अपना काम करता हूँ। |
| (ख) हम हमारा काम करते हैं। | हम अपना काम करते हैं। |
| (55) उपरोक्त गद्यांश का अर्थ लिखिए। | उपर्युक्त गद्यांश का अर्थ लिखिए। |
| (56) तुमने रात को खूब सोया। | तुम रात को खूब सोये। |
| (57) तुम बड़े निर्दयी हो। | तुम बड़े निर्दय हो। |
| (58) राम ने स्मरण दिलाया। | राम ने स्मरण कराया। |
| (59) तुमने मुझे निराशा दी। | तुमने मुझे निराशा किया। |
| (60) रश्मि ने हाथ जोड़ा। | रश्मि ने हाथ जोड़े। |

## अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें-

तुम काहे को यहाँ आया है। मैंने घर जाता है। मेरे को कुछ खिलाओ। मैंने पुस्तक देखा। फूल का माला सुन्दर है। कृपया करके आप अपना नाम बताइये। यदि राघव आता तो योगेन्द्र चले जाता। रश्मि का वाणी मिठास है। भरत का भाई आते हैं। शत्रुघ्न का बहन आती है। पवन यह बात सुना। मृत्युंजय के दोनों चाचे आये। नन्दिनी ने भात खायी। उस लड़का को बुलाओ। राधाकृष्ण को भेज कर अनील के पत्र लिखवाओ। सुनील और अरविन्द जा रहा है। नीलम यह काम को करने सकती है। भगवान का कृपा से तेरी को अब कष्ट नहीं होगी। ≺

## वाक्य-विग्रह

वाक्य के सभी खंडों को अलग-अलग करके उनके पारस्परिक सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया को वाक्य विग्रह कहते हैं। इसका दूसरा नाम वाक्य विश्लेषण भी हैं।

वाक्य के दो भाग होते हैं-

(1) उद्देश्य और (2) विधेय।

(1) उद्देश्य-उद्देश्य वाक्य का वह भाग है, जिसके विषय में कुछ कहा जाय। साधारणत: उद्देश्य कर्त्ता को कहा जाता है। जैसे-मोहन काम करता है।

इस वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है।

जब उद्देश्य के साथ विशेषण, सम्बन्ध कारक, समानाधिकरण शब्द वाक्यांश या क्रियाद्योयक शब्द रखे हैं तो उन्हें उद्देश्य का विस्तार कहा जाता है। जैसे-

स्वस्थ व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है।

यहाँ 'स्वस्थ' शब्द उद्देश्य का विस्तार है।

(2) विधेय-उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाय उसे विधेय कहते हैं। जैसे-

गाय घास चर रही। है।

यहाँ 'घास चर रही है' विधेय है।

उद्देश्य की तरह विधेय का भी विस्तार होता है। विधेय के विस्तार के लिए प्राय: कर्म पद, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, क्रिया-विशेषण, पूर्वकालिक क्रिया, वाक्यांश तथा पूरक पद आते हैं।

जैसे-वह पुस्तक पढ़ता है।

राम कलम से लिखता है।

वह धीरे-धीरे जाता है।

मोहन खाकर जाएगा।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द विधेय के विस्तार हैं।

## रचना के अनुसार वाक्य के भेद

रचना के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं-

(1) साधारण वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्रित वाक्य।

(1) **साधारण वाक्य**- जिस वाक्य में एक उद्देश्य तथा एक विधेय रहता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे-राम पत्र पढ़ता है।

(2) **संयुक्त वाक्य**- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक खंड वाक्य स्वतन्त्र रूप से योजक द्वारा मिले हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे-मैं कल दरभंगा जा रहा था किन्तु राम ने मुझे रोक लिया।

(3) **मिश्रित वाक्य**- जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो तथा अन्य खंड-वाक्य आश्रित होकर आयें, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे- वह आदमी कहाँ गया जो कल आया था।

इस वाक्य में वह आदमी कहाँ गया प्रधान वाक्य तथा 'जो कल आया था' आश्रित वाक्य है।

**उपवाक्य**-जब कोई वाक्य दो या दो से अधिक वाक्यों के योग से बनता है, जिनसे पूर्ण अर्थ प्रकट होता है तो उनमें से प्रत्येक को उपवाक्य कहते हैं। जैसे- मोहन कहता है कि मैं आज ही जाऊँगा। इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं-

(1) मोहन कहता है,

(2) कि मैं आज ही जाऊँगा।

उपवाक्य के तीन भेद हैं-

(1) स्वतंत्र (2) प्रधान (3) आश्रित।

(1) **स्वतंत्र उपवाक्य**-जो उपवाक्य किसी पर आश्रित न होकर अपने आप में स्वतंत्र होता है, उसे स्वतंत्र उपवाक्य कहते हैं। जैसे- उसे अपने मित्रों पर समान प्रेम था।

(2) **प्रधान उपवाक्य**-जिस उपवाक्य में मुख्य उद्देश्य तथा मुख्य विधेय होता है, उसे प्रधान उपवाक्य कहते हैं। जैसे-महेन्द्र ने कहा कि मैं यह कार्य करूँगा। इसमें 'महेन्द्र ने कहा' प्रधान उपवाक्य है।

(3) **आश्रित उपवाक्य**- उस उपवाक्य को, जो मुख्य उपवाक्य पर आश्रित होता है, आश्रित उपवाक्य कहते हैं। जैसे- परिश्रम करो, जिससे तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

इस वाक्य में ''जिससे तुम्हें सफलता प्राप्त हो''आश्रित उपवाक्य है।

## आश्रित उपवाक्य के भेद

(1) संज्ञा उपवाक्य

(2) विशेषण उपवाक्य

(3) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(1) **संज्ञा उपवाक्य**-संज्ञा उपवाक्य ऐसे आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम के बदले आते हैं। जैसे- उसने पूछा कि तुम्हारा घर कहाँ है? इस वाक्य में दूसरा उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है।

(2) **विशेषण उपवाक्य**- जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे-वह पुस्तक क्या हो गयी जिसे मैंने तुझे दिया था। यहाँ 'जिसे मैंने तुझे दिया था' विशेषण उपवाक्य है।

(3) **क्रिया-विशेषण उपवाक्य**- जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे-वह नहीं जाएगा क्योंकि उसका लड़का बीमार है। इस वाक्य में-'क्योंकि उसका लड़का बीमार है' क्रिया-विशेषण उपवाक्य है।

## साधारण वाक्यों का विग्रह

**वाक्य**-

(1) राम की गाय हरी घास खूब चरती है।

(2) महाराष्ट्र केसरी शिवाजी एक धर्म-रक्षक वीर थे।

(3) तुम बहुत सुन्दर लगते हो।

| उद्देश्य | | | | विधेय | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाक्य संख्या | कर्त्ता | उद्देश्य का विस्तार | कर्म | कर्म का विस्तार | पूरक | पूरक का विस्तार | क्रिया | क्रिया का विस्तार |
| 1 | गाय | राम की | घास | हरी | × | | चरती है | खूब |
| 2 | शिवाजी | महाराष्ट्र | × | × | वीर | धर्म- | थे | × |
| | | केसरी | | | | रक्षक | | |
| 3 | तुम | × | × | × | सुन्दर | बहुत | लगते हो | |

## संयुक्त वाक्य - विग्रह

**वाक्य**-

(1) मेरा मित्र रमेश कल यहाँ आया था और वह तुरन्त पटना चला गया।

(2) मोहन से बहुत परिश्रम किया परन्तु वह सफल नहीं हो सका।

| वाक्य संयुक्त | वाक्य के खंड | उद्देश्य | | | विधेय | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संयोजक | कर्त्ता | कर्त्ता का विस्तार | कर्म | कर्म का विस्तार | पूरक | पूरक का विस्तार | क्रिया | क्रिया का विस्तार |
| 1 (क) | मेरा मित्र रमेश कल यहाँ आया था। | | रमेश | मेरा मित्र | | | | | आया था | कल यहाँ |
| (ख) | और वह तुरन्त पटना चला गया। | और | वह | | | | | | चला गया | तुरन्त पटना |
| 2 (क) | मोहन ने बहुत परिश्रम किया | परन्तु | मोहन ने | | परिश्रम | बहुत | | | किया | |
| (ख) | वह सफल नहीं हो सका | | वह | | | सफल | | | हो सका | नहीं |

## मिश्रित वाक्य - विग्रह

**वाक्य**- (1) मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि राम का भाई मोहन एक योग्य व्यक्ति है।

(2) जब तुम चित्र देख रहे थे, तब मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा था।

| वाक्य संयुक्त | वाक्य के खंड | उद्देश्य | | | विधेय | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संयोजक | उद्देश्य | उद्देश्य का विस्तार | कर्म | कर्म का विस्तार | पूरक | पूरक का विस्तार | क्रिया | क्रिया का विस्तार |
| 1.(क) | मैं अच्छी तरह जानता हूँ | | मैं | | | | | | जानता हूँ | अच्छी तरह |
| (ख) | राम का भाई मोहन एक योग्य व्यक्ति है। | कि | मोहन | राम का भाई | | | व्यक्ति | एक योग्य | है | |
| 2.(क) | तब मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा था | | मैं | था | अपनी पुस्तक | | | पढ़ रहा | तब | |
| (ख) | जब तुम चित्र देख रहे थे | जब | तुम | | चित्र | | | | देख रहे थे | |

## अभ्यास

(1) वाक्य-विग्रह किसे कहते हैं ?

(2) उद्देश्य और विधेय की परिभाषा दो।

(3) रचना के अनुसार वाक्य के कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित परिभाषा दो।

(4) निम्नांकित वाक्यों के उद्देश्यों को 'उद्देश्य' शीर्षक के नीचे और विधेयों को 'विधेय' शीर्षक के नीचे लिखो-

(1) अशोक बहुत योग्य व्यक्ति है।

(2) आजकल खूब वर्षा होती है।

(3) स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमन्त्री थे।

(4) हमारा विकास हमारे परिश्रम पर निर्भर है।

(5) वाक्य-विश्लेषण करो-

**संयुक्त वाक्य** -

(क) राघव ने गति से घर में प्रवेश किया और पूछने लगा कि वह आदमी कहाँ गया जो यहाँ बैठा था।

(ख) जब तुम सो गये थे, मैं बाजार गया था और तुम्हारे लिए मीठे फल लाया हूँ।

(ग) हम गये और तुम आये।

**मिश्रित वाक्य** -

(क) हम सभी जानते हैं कि दिन में सूर्य तथा रात में चाँद निकलता है।

(ख) भरत ने कहा कि मैं पत्र लिखूँगा।

## विराम-चिह्न

विराम शब्द का अर्थ है ठहराव या विश्राम। ''जिन चिह्नों के द्वारा एक वाक्य को दूसरे वाक्य से, किसी वाक्यांश को दूसरे भाग से और एक अर्थ को दूसरे प्रकार के अर्थ से अलग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्नों की संज्ञा दी जाती है।'' प्रश्न, विस्मय, हर्ष आदि को प्रकट करने के लिए विभिन्न चिह्नों के प्रयोग किये जाते हैं। विराम-चिह्नों के प्रयोग से भाषा शुद्ध, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक होती है। इनका प्रयोग केवल लेखन-कला के लिए ही नहीं, अपितु भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि के लिए भी युक्तिसंगत माना जाता है। अत: अर्थ को सरलता से बोध कराने के लिए विराम-चिह्नों का ज्ञान आवश्यक है।

आजकल हिन्दी में मुख्य रूप से प्रयुक्त होने वाले विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं-

| | | |
|---|---|---|
| (1) | अल्प विराम- | (,) |
| (2) | अर्द्ध विराम- | (;) |
| (3) | पूर्ण विराम- | (।) |
| (4) | प्रश्नसूचक- | (?) |
| (5) | विस्मयादिबोधक- | (!) |
| (6) | निर्देशक-चिह्न- | (—) |
| (7) | उद्धरण-चिह्न- | (‘’) |
| (8) | कोष्ठक-चिह्न- | (()) |
| (9) | योजक-चिह्न- | (-) |
| (10) | विस्मृतबोधक-चिह्न- | ( ∧ ) |
| (11) | विवरण-चिह्न- | (:-) |
| (12) | स्थानपूरक-चिह्न- | (...) |
| (13) | पुनरुक्तिसूचक-चिह्न | (,,) |

(1) **अल्पविराम**- भाषा में पढ़ते समय जहाँ कम ठहराव हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग मुख्यतः निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है-

(क) एक ही स्थिति के कई शब्द अथवा वाक्यांश जब एक साथ आ जायें और उनके बीच समुच्चयबोधक का अभाव हो तो प्रत्येक के आगे अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे-मोहन, कृष्ण और रमेश यहाँ आ रहे हैं।

(ख) उद्धरण के पूर्व भी इसका प्रयोग होता है। जैसे-नेताजी ने कहा, ''कर्तव्य के पालन से अधिकार अपने आप आ जाता है।''

(ग) समान रूप से आने वाले कई छोटे-छोटे वाक्यों के पश्चात् भी अल्प विराम का प्रयोग होता है, जैसे-परिश्रम से बल बढ़ता है अंग पुष्ठ होते, क्षमता आती है और व्यक्तित्व निखरता है।

(घ) हाँ, वस्तुतः, अन्ततोगत्वा, अस्तु आदि शब्दों के बाद ; जैसे- वस्तुतः, परिश्रम से सब कुछ मिल सकता है।
अस्तु तुम अब आगे बढ़ो।

(ङ) विशेषण और क्रिया-विशेषण उपवाक्यों को अलग करने के लिए, जैसे- मोहन, जो आँख का विशेषज्ञ है, मेरा मित्र है।

(च) एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध में प्रयुक्त होने वाले अनेक विशेषण या वाक्यांशों के बाद- कामायनी के रचयिता, काव्याकाश के नक्षत्र, साहित्य महारथी प्रसाद को कौन नहीं जानता?

(1) **अर्द्ध विराम**- अल्प विराम से कुछ अधिक और पूर्ण विराम से कुछ कम ठहराव के लिए अर्द्ध विराम का प्रयोग होता है।

जैसे-हमारा कर्त्तव्य है कि उत्पादन बढ़ावें; परस्पर सहयोग करें; राष्ट्रीयता को पनपने दें।

एक साथ आने वाले असम्बद्ध संयुक्त वाक्य के दो प्रधान वाक्यों को अलग करने के लिए समुच्चयबोधक द्वारा अन्त में जुड़ने वाले वाक्यों के

अन्त में तथा प्रधान वाक्य पर आश्रित उपवाक्यों के अन्त में अर्द्ध विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

मैंने पाप किया; पर आज प्रायश्चित से पवित्र हो चुका हूँ।

घंटी बजी; छात्र आये; शिक्षक आये और पढ़ाई प्रारम्भ हो गयी।

जब तक हम यह नहीं जान लें कि भारत हमारा देश है; हमारी मातृभाषा हिन्दी है; तब तक देश का कल्याण नहीं होगा।

(3) **पूर्ण विराम**- जब वाक्य की पूर्णता होती है, तब पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे-मोहन अभी काम कर रहा है।

राम ने पत्र लिखा।

वह कलकत्ता चला गया।

(4) **प्रश्नसूचक**-प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में प्रश्नसूचक चिह्न प्रयोग किया जाता है। जैसे-आप किस वर्ग में पढ़ते हैं ?

(5) **विस्मयादिबोधक**- मनोविकार; हर्ष,शोक, घृणा, आश्चर्य आदि भावों को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-दीनबन्धु! अब तो कृपा करो। हाय! वह मारा गया। वाह! आप समय पर आए।

(6) **निर्देशक-चिह्न**- जब किसी बात की ओर निर्देश किया जाता है तब निर्देशक-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-मानसिक ने कहा- समय हो गया कार्य प्रारम्भ करो।

रचना या लेखक अथवा वक्ता के नाम से पूर्व भी इसका प्रयोग होता है। जैसे- 'उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखंड है''-भारत भारती।

बातचीत में रुकावट व्यक्त करने के लिए भी निर्देशक-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-हम-अब-सबसे अलग हो रहे हैं।

(7) **उद्धरण-चिह्न**-जब किसी उक्ति को बिना परिवर्तन ज्यों-का-त्यों रखा जाये तो वहाँ उद्धरण-चिह्न लगाया जाता है। जैसे-एक

महापुरुष का कथन है-''मैं सब कुछ त्याग दूँगा; परन्तु स्वतन्त्रता को हाथ से नहीं जाने दूँगा।''

(8) **कोष्ठक-चिह्न**-किसी भी विषय को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक-चिह्न का प्रयोग होता है। कभी-कभी किसी विषय को कई भागों में बाँटने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। जैसे- निरन्तर (लगातार) परिश्रम करने से सफलता मिल सकती है।

(2) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-

(क) विज्ञान की देन।

(ख) अनुशासन।

(ग) जीवन का लक्ष्य।

(9) **योजक-चिह्न**- सामासिक शब्दों में साधारणत: योजक चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे--माता-पिता, बन्धु-बांधव।

(10) **विस्मृतिबोधक चिह्न**-जब कोई शब्द भूल से छूट जाता है तो सुधार करने के समय विस्मृति-बोधक-चिह्न का प्रयोग

सोहन,

होता है। जैसे-मोहन, ∧ श्याम और राम आज आ रहे हैं।

(11) **विवरण-चिह्न**-जब किसी के सम्बन्ध में विस्तार से कुछ कहना होता है तो विवरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे:- नीचे लिखे शब्दों को अर्थ-सहित वाक्यों में प्रयोग करो- अन्वेषण, अशान्त, अग्रदूत तथा अद्वितीय।

(12) **स्थानपूरक-चिह्न**-जब किसी वाक्य में कुछ शब्दों को छोड़कर वाक्य पूरा किया जाता है तो स्थानपूरक-चिह्न का प्रयोग होता है। अधिकांशत: उस रिक्त स्थान को भरने के लिए कहा जाता है।

जैसे- प. नेहरू का जन्म... में हुआ था।

जब वह हँसती थी तो उसकी शोभा...।

(13) **पुनरुक्तिसूचक-चिह्न**-जब एक जैसे शब्द बार-बार लिखने की आवश्यकता होती है तो एक बार लिखने के बाद पुनरावृत्ति से बचने के लिए पुनरुक्तिसूचक-चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे-

श्री नरेश कुमार।
,, राघवेन्द्र।
,, भरत कुमार।
,, शत्रुघ्न कुमार।

## अभ्यास

(1) विराम-चिह्न किसे कहते हैं? उनकी आवश्यकता क्यों होती हैं?
(2) अल्प विराम तथा अर्द्ध विराम के प्रयोग कहाँ-कहाँ होते हैं?
(3) निम्नलिखित गद्यांशों में आवश्यक विराम-चिह्नों का प्रयोग करो-
(क) पशुत्व से देवत्व तक की जो दूरी है उसे मनुष्य कैसे तय करता है? क्या बुद्धि के लिए बल पर सभी देवता हो सकते हैं।
(ख) राम-हनुमान कहो न! क्या सीता को तुमने देखा।
(ग) मैं किसी को धोखा नहीं देता यदि मुझे कोई धोखा दे तो उससे मेरा कोई हानि नहीं हो सकती।
(घ) जो कभी आठ बजे से पहले नहीं जागता और नौ बजे से पूर्व ही सो जाता है-क्या वह आलसी नहीं है?
(ङ) अस्तु मुझे जो कुछ कहना था कह दिया आगे आप जाने।

## नवाँ अध्याय

# रस

रस का शाब्दिक अर्थ है आस्वाद का अनुभव। साहित्य में इसका अर्थ है अलौकिक या लोकोत्तर अनन्द। अत: कहा जा सकता है कि किसी रचना के पठन या श्रवण द्वारा जो अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है, उसे रस कहते हैं।

रस काव्य की आत्मा है। रस-निष्पत्ति किस प्रकार होती है, इस पर संस्कृत के आचार्यों ने बहुत अधिक विवेचन किया है। संक्षेप में कहा गया है कि विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस-निष्पत्ति होती है।

**स्थायी भाव**-हमारे हृदय में पहले से ही विद्यमान रहते हैं। ये बीज रूप में हमारे हृदय में छिपे रहते हैं तथा अनुकूल परिस्थिति पाकर प्रकट हो जाते हैं। स्थायी भाव जब विभाव अनुभाव और संचारी भावों द्वारा परिपक्व होकर सहृदय के हृदय में आनन्द उत्पन्न कराता है, तो उसे रस कहते हैं।

**विभाव**-स्थायी भावों को जगाने वाले उपकरण विभाव कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं- (1) आलम्बन तथा (2) उद्दीपन।

(1) **आलम्बन विभाव**-जो स्थायी भावों को जागृत करे, उसे आलम्बन विभाव कहते हैं।

(2) **उद्दीपन विभाव**- जिससे जगा हुआ भाव तीव्र हो, उसे उद्दीपन विभाव कहते हैं। उदाहरण-

सुनसान घोर जंगल में यदि बाघ दिखायी पड़े तो उसको देख कर भय का स्थायी भाव जागेगा। अत: यहाँ बाघ आलम्बन हुआ और घोर सुनसान जंगल उद्दीपन विभाव हुआ।

**अनुभाव**- किसी स्थायी भाव के जागने से जो शारीरिक प्रतिक्रिया होती हैं उसे अनुभाव कहते हैं। जैसे-भय से शरीर काँपना, पसीना जाना आदि अनुभाव हैं।

**संचारी अथवा व्यभिचारी भाव**-

जो भाव स्थायी भाव को पुष्ट करने के लिए आते हैं, उन्हें संचारी या व्यभिचारी भाव कहते हैं। ग्लानि, शंका, चिंता, मोह आदि तैंतीस संचारी भाव माने जाते हैं।

**आश्रय**-जिसके हृदय में स्थायी भाव जागृत होता है, उसे आश्रय भाव कहते हैं।

इस तरह रस निष्पत्ति के लिए उपर्युक्त आधारों की उपस्थिति अनिवार्य है।

रस दस माने गये है; इनके दस स्थायी भाव हैं, जो इस प्रकार हैं-

| रस | स्थायी भाव |
|---|---|
| 1. शृंगार | रति |
| 2. करुण | शोक |
| 3. वीर | उत्साह |
| 4. वीभत्स | जुगुप्सा (घृणा) |
| 5. हास्य | हास |
| 6. शान्त | वैराग्य |
| 7. भयानक | भय |
| 8. रौद्र | क्रोध |
| 9. अद्‌भुत | विस्मय |
| 10. वात्सल्य | स्नेह (वात्सल्य-प्रेम) |

## अभ्यास

(1) रस किसे कहते हैं ? किस रस का कौन-सा स्थायी भाव है ?
(2) विभाव, अनुभाव और संचारी भाव किसे कहते हैं ?
(3) आलम्बन और उद्दीपन किसे कहते हैं ?

## अलंकार

''शोभाकारक निबंध में जिस शब्द और अर्थ के रहने से रचना में विशेष चमत्कार मालूम हो उसे अलंकार कहते हैं।''

अलंकार के कारण रचना में चमत्कार आ जाता है। जिस प्रकार नारी अलंकार या आभूषण द्वारा सुशोभित हो जाती है, उसी प्रकार अलंकार द्वारा काव्य की शोभा बढ़ जाती है और उसमें एक प्रकार का चमत्कार आ जाता है।

अलंकार के मुख्य दो भेद है-

(1) शब्दालंकार और (2) अर्थालंकार।

(1) **शब्दालंकार**- शब्दों को चमत्कृत करने वाले अलंकारों को शब्दालंकार कहते हैं। जैसे-अनुप्रास, श्लेष, यमक आदि।

(2) **अर्थालंकार**-अर्थ को चमत्कृत करने वाले अलंकार को अर्थालंकार कहलाते हैं। जैसे - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि।

## शब्दालंकारों का विवेचन

(1) **अनुप्रास अलंकार**- स्वर-भेद होने पर भी व्यंजनों को अनेक बार आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं।

उदाहरण-

तरनि-तनजा-तट तमाल तरुवर बहु छाये।

यहाँ 'त' अक्षर कई बार आये हैं। अतः अनुप्रास अलंकार हुआ।

अन्य उदाहरण-

धरम-धरीन-धीर-नय नागर।
सत्य-स्नेह-शील-सुख-सागर॥

यहाँ ध , न तथा स वर्णों की आवृत्ति कई बार हुई है। अनुप्रास के पाँच भेद माने गये हैं- (1) छेकानुप्रास, (2) वृत्यानुप्रास, (3) अन्त्यनुप्रास, (4) लाटानुप्रास, (5) श्रुत्यानुप्रास।

(2) **यमक अलंकार**-यमक् का अर्थ 'दो' हैं। इस अलंकार में एक ही तरह के शब्दों की आवृत्ति होती है, किन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे-

कनक कनक तें सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
या पाये बौरात जग, वा खाये बौराय।

यहाँ 'कनक' शब्द दो बार आया है और दौ अर्थों की ओर संकेत भी है। पहले 'कनक' शब्द का अर्थ सोना और दूसरे का अर्थ 'धतूरा' है।

(3) **श्लेष अलंकार**-'श्लेष' शब्द का अर्थ है मिला हुआ। श्लेष अलंकार वाले शब्दों में कई अर्थ मिले रहते हैं। जैसे-

विपुल धन अनेकों रत्न हो साथ लाए,
प्रियतम, बतला दो लाल मेरा कहाँ है?

यहाँ 'लाल' शब्द के दो अर्थ हैं- (1) मणि तथा (2) पुत्र। पूरे पद से दो अर्थ निकलते हैं।

(4) **वक्रोक्ति अलंकार**-वक्रोक्ति का शाब्दिक अर्थ है टेढ़ी बात। (वक्र+उक्ति=वक्रोक्ति) किसी के कहे वाक्य का किसी दूसरे के द्वारा अन्य अर्थ की कल्पना किये जाने को वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं अर्थात् कही हुई बात का कुछ दूसरा अर्थ लगाना ही वक्रोक्ति है। यथा-

को तु? हौं घनश्याम प्रिय, तौ किन बरसौ जाय?
नहिं नहिं मन मोहन प्रिय! तौ किन पकरो पाय?

यहाँ घनश्याम का अर्थ कृष्ण है, किन्तु श्रोता के द्वारा इसका अर्थ काला बादल लगाया जाता है। उसी तरह मनमोहन का अर्थ- श्रीकृष्ण है, किन्तु दूसरे के द्वारा इसका अर्थ लगाया जाता हैं, मन को मोहने वाला। अर्थात् गोपी कृष्ण से कहती है कि यदि बादल हो तो जा कर कहीं बरसो और यदि मन को मोहने वाले हो तो मेरा पैर क्यों पकड़ते हो ? इस प्रकार यहाँ श्लेष के कारण चमत्कार पैदा किया गया है। इसे श्लेष वक्रोक्ति कहते हैं।

## अर्थालंकार

(1) **उपमा**- जहाँ उपमेय के साथ उपमान की, किसी समान धर्म को लेकर तुलना की जाये, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के चार अंग है-

(1) **उपमेय**- जिस वस्तु या पात्र की तुलना की जाय, उसे उपमेय कहते हैं। जैसे-मुँह।

(2) **उपमान**-जिस वस्तु या पात्र को तुलना की जाय, उसे उपमान कहते हैं। जैसे-चन्द्रमा।

(3) **साधारण धर्म**-जिस गुण की तुलना की जाय, उसे साधारण धर्म कहते हैं। जैसे-सुन्दरता आदि।

(4) **वाचक शब्द**-जिस शब्द के द्वारा तुलना की जाय, उसे वाचक शब्द कहते हैं। जैसे-समान, सदृश, आदि शब्द।

उदाहरण-आपका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। इस वाक्य में 'मुख' उपमेय, 'चन्द्रमा' उपमान, 'सुन्दर' साधारण धर्म तथा 'समान' वाचक शब्द है।

उपमा अलंकार के ये चारों अंग कभी उपस्थित रहते हैं और कभी एक या दो (अंग) के बिना भी काम चल जाता है। तो उसे लुप्तोपमा कहते हैं। जैसे-तुम्हारा मुख चन्द्रमा के समान है।

यहाँ 'मुख' उपमेय, 'चन्द्रमा' उपमान 'समान' वाचक शब्द है। इसमें साधारण धर्म सुन्दर का लोप हुआ है।

(2) **रूपक अलंकार**-रूपक का अर्थ है रूप धारण करना। अर्थात् उपमेय उपमान का रूप धारण कर लेता है। अत: जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। जैसे-

चरण-कमल बन्दौ हरिराई

इस उदाहरण में चरणों में कमल का आरोप किया गया है। अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

इस अलंकार में उपमेय तथा उपमान में अभेद दिखाया जाता है।

(3) **उत्प्रेक्षा अलंकार**-जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना अथवा कल्पना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे-

सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।
बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल॥

यहाँ श्री कृष्ण के हृदय पर जो गुंजन की माला है, वह मानोदावानल की ज्वाला है। गुंजन की माला में दावानल की कल्पना की गई है; अत: उत्प्रेक्षा अलंकार है।

साधारणत: इस अलंकार में मानों, मनु, मानहु, जनु, जानहु, जानो, इव, मनहु आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

(4) **भ्रांतिमान अलंकार**-जहाँ किसी वस्तु को देखकर किसी अन्य वस्तु का भ्रम हो जाय, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है। यथा-

नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रांति से;
देख कर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।

यहाँ अधर की कान्ति से नाक के मोती में दाड़िम का बीज होने का भ्रम है। एक तोता उसे दूसरा ही तोता समझ रहा है। यहाँ भ्रम है अत: भ्रान्तिमान अलंकार हुआ।

(5) **सन्देह अलंकार**–जहाँ सत्य–असत्य का ठीक से निश्चय न होने के कारण उपमेय का उपमान के रूप में वर्णन किया जाता है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है। यथा–

यह काया है या शेष उसी की छाया।
क्षण भर उनको कुछ नहीं समझ में आया॥

यहाँ 'काया' में 'काया और छाया' दोनों का निश्चित ज्ञान नहीं हो रहा है, अर्थात् ज्ञान अनिश्चित है। अत: सन्देह अलंकार हुआ। सन्देह और भ्रम में यही अन्तर है कि सन्देह में सन्देह बना ही रहता है, निश्चय नहीं हो पाता, किन्तु भ्रम में किसी एक वस्तु का निश्चय हो जाता है।

(6) **अतिशयोक्ति**–जहाँ लोक–सीमा का उल्लंघन करते हुए किसी वस्तु का बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे–

चली शिवा की सेना सुन कर,
बस मुगलों के प्राण चले।

इस उदाहरण में यह वर्णन किया गया है कि शिवाजी के आक्रमण की सूचना–भाव मिलते ही शत्रु मुगल–सैनिकों के प्राण निकलने लगे। अत: यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

(7) **अन्योक्ति**–जहाँ अप्रस्तुत के वर्णन से प्रस्तुत का बोध कराया जाता है, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। इस अलंकार की विशेषता यह है कि इसका सामान्य अर्थ कुछ और होता है और रचयिता का तात्पर्य कुछ और। अर्थात् बात कही जाती है किसी पर और लगती है किसी और उदाहरण–

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यों, आगे कौन हवाल॥

यह दोहा बिहारी ने महाराज जयसिंह के लिए बनाया था, किन्तु

कहा गया है भ्रमर को। अर्थात् भ्रमर के बहाने जयसिंह को उपदेश दिया गया है।

(8) **विरोधाभास**-जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास (विरोध-सा) दिखाई पड़े वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। जैसे-झुकने वाला सदा उठा करता है ऊपर।

यहाँ 'झुकने' तथा 'ऊपर' उठने में विरोध-सा लगता है, किन्तु कवि के उद्देश्य के अनुसार जरा भी विरोध नहीं है। क्योंकि जो झुकता है, अर्थात् विनम्र होता है, वही उन्नति करता है।

(9) **स्वभावोक्ति अलंकार**-जब स्वाभाविक विषय के वर्णन में चमत्कारपूर्ण वर्णन किये जाते हैं तब स्वभावोक्ति अलंकार होता है। जैसे-मैया कबहि बढ़ेगी चोटी।

किती बार मोहिं दूध पियत भइ यह अजहूँ है छोटी।

(10) **विभावना अलंकार**-यदि बिना कारण कोई कार्य हो जाय, तो विभावना अलंकार होता है। यथा,

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।

कर बिनु कर्म करै विधि नाना।

यहाँ बिना पद के चलना, बिना कान के सुनना और बिना कर के अनेक कर्म करना, कारण बिना कार्य का होना है, अत: विभावना अलंकार हुआ।

(11) **विशेषोक्ति अलंकार**-जब कारण रहते हुए भी कार्य नहीं हो, तब विशेषोक्ति अलंकार होता है। जैसे-

देखो दो-दो मेघ बरसते मैं प्यासी की प्यासी।

दोनों नेत्र मेघ के समान बरस रहे हैं फिर भी प्यास का न मिटना, कारण के रहते कार्य का न होना है; अत: यहाँ विशेषोक्ति अलंकार हुआ।

(12) **व्यतिरेकी अलंकार**–जहाँ उपमेय में उपमान की अपेक्षा विशेषता बतायी जाय वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है। जैसे–

मुख है अंबुज सों सही, मीठी बात विसेष

यहाँ मुख को अम्बुज के समान कह कर, मुख से निकली मीठी बोली को कमल से अधिक महत्वपूर्ण बतलाया गया है। कमल उपमान की मुख उपमेय से हीनता दिखायी गयी है; अत: व्यतिरेकी अलंकार हुआ।

## अभ्यास

(1) अलंकार किसे कहते हैं ? शब्दालंकार और अर्थालंकार से तुम क्या समझते हो ?

(2) निम्नलिखित अलंकारों की परिभाषा लिख कर उदाहरण दो– अनुप्रास, शेष, यमक उपमा, रूपक, विरोधाभास उत्प्रेक्षा।

(3) निम्नलिखित पद्यों में अलंकार बताओ–

(क) सत्य–स्नेह–सील–सुख–सागर।

(ख) रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सुन।

(ग) नील गगन–सा शांत हृदय था रो रहा।

(घ) राधा का मुख–कमल समझ कर।
अलिगण डस–डस जाते थे।

(ङ) वाण छूटने से पूर्व, छूटे प्राण अरियों के।

(च) उदित–सुधारक करत जनु,
सुधामयी वसुधाहि।

## छन्द

छन्द ऐसी शब्द-योजना है, जिसमें मात्राओं तथा वर्णों का नियमित क्रम होता है और उसमें विराम, गति आदि की व्यवस्था होती है।

पद्य और छन्द का घना सम्बन्ध है। छन्द के कारण रचना अधिक प्रभाव उत्पन्न करने वाली हो जाती है। एकलयता के कारण छन्दोबद्ध रचना सरस और सुमधुर हो जाती है; अतः इसे स्मरण रखने में सरलता होती है। जिस शास्त्र में छन्दों के नियमों का विवेचन किया जाता है, उसे छन्दशास्त्र कहते हैं। इसके आदि आचार्य पिंगल हैं। इसीलिये इसे पिंगल भी कहा जाता है।

छन्द के निम्नलिखित मुख्य अंग हैं-

(1) मात्रा (2) चरण या पाद (3) लघु (4) गुरु
(5) यति (6) गति (7) तुक (8) गण।

(1) **मात्रा**- एक मूल स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं। जैसे-अ, इ, उ, ऋ, ये एकमात्रिक स्वर हैं तथा आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ इन दीर्घ स्वरों में दो-दो मात्राएँ होती हैं।

(2) **चरण या पाद**- किसी छन्द के भाग को चरण या पाद कहा जाता है। साधारणतः छन्द के चार चरण या पाद होते हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप कहीं-कहीं इसकी संख्या इससे कम या अधिक भी हो सकती है।

(3) **लघु**- एक मात्रिक वर्ण (अ, इ, उ, ऋ) को लघु (ह्रस्व) कहते हैं। इसके उच्चारण में बहुत कम समय लगता है। चन्द्रबिन्दु तथा ह्रस्व स्वरों की मात्राओं से युक्त सभी व्यंजन लघु होते हैं। लघु का संक्षेप- ल और संकेत ( । ) है।

(4) **गुरु**-दीर्घ मात्रा वाले वर्ण को गुरु कहा जाता है। इसका संक्षेप 'गु' और संकेत (ऽ) है।

अनुस्वार विसर्ग सहित वर्ण तथा संयुक्त वर्ण से पहले के वर्ण गुरु होते हैं। हलन्त के पूर्व का वर्ण भी गुरु माना जाता है।

(5) **यति**-छन्दाबद्ध पदों को पढ़ते समय स्थान-स्थान पर जो विराम होता है, उसे यति कहते हैं।

(6) **गति**-कविता पढ़ते समय जो प्रवाह का अनुभव होता है, वही गति है।

(7) **तुक**-चरणों के अन्त में जब एक ही प्रकार का अक्षर आता है, तो अक्षर की उस समता को तुक कहते हैं।

(8) **गण**-तीन-तीन वर्णों का एक-एक गण होता है। सभी गण के वर्णों में से कभी कोई ह्रस्व और सभी दीर्घ होते हैं। गणों के नाम इस तरह हैं-

| | गण | रूप |
|---|---|---|
| 1. | यमण | ।ऽऽ |
| 2. | मगण | ऽऽऽ |
| 3. | तगण | ऽऽ। |
| 4. | रगण | ऽ।ऽ |
| 5. | जगण | ।ऽ। |
| 6. | भगण | ऽ।। |
| 7. | नगण | ।।। |
| 8. | सगण | ।।ऽ |

निम्न सूत्र याद कर लेने से, गणों की योजना स्पष्ट हो जाती है- ''यमाताराजभानसलगा।''

'य', 'मा', 'ता', 'रा' आदि क्रमशः यगण, मगण, तगण, रगण आदि गणों के सूचक हैं। अब यगण के लक्षण जानने के लिए ऊपर वाले सूत्र में से य को लेकर तीन अक्षर ले लिया जाय तो 'यमाता' शब्द होगा। 'य' लघु है तथा 'मा' और 'ता' दोनों गुरु हैं। अतः यगण में पहला वर्ण लघु तथा शेष दो गुरु हुए। इसी प्रकार दूसरे गण को भी लिया जा सकता है। यथा-मगण में तीन वर्ण होंगे 'मातारा'। 'मा' गुरु 'ता' और 'रा' गुरु है। इसका सूचक है- ऽऽऽ। इस प्रकार इसमें कुल आठ गण होते हैं।

## छन्दों के भेद

छन्दों के मुख्य रूप से दो भेद हैं-

(1) वर्णवृत्त और (2) मात्रिक वृत्त। इन्हें वार्णिक छन्द और मात्रिक छन्द भी कहा जाता है।

(1) **वर्णवृत्त**-जहाँ पर लघु गुरु वर्णों के क्रम से छन्द के चरण बराबर हों, वहाँ वर्णवृत्त होता है।

(2) **मात्रिकवृत**-जिन छन्दों के चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु का क्रम एक समान न हो; परन्तु मात्राओं की संख्या बराबर हो, वे मात्रिक वृत्त कहलाते हैं।

## कुछ मात्रिक छन्द

**दोहा**-इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दूसरे और चौथे चरण के अन्त में लघु होता है। पहले और तीसरे चरण के आदि में जगण ( ।ऽ।) नहीं होता। यह तुकान्त छन्द है।

उदाहरण-

ऽ। । । । । । ऽ । ऽ(13) । । । । ऽ। । ऽ । (11)

मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उरमाल

एहि बानिक मो मन बसौ सदा बिहारी लाल

। । ऽ । । ऽ । । । ऽ(13) । ऽ । ऽ ऽ ऽ । (11)

इस प्रकार चौपाई दोहा, सोरठा इत्यादि मात्रिक छन्द के अंतर्गत आते हैं।

(1) **इन्द्रवज्रा**-इस छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु होते हैं। यथा-

संसार है एक अरण्य भारी,
हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी,
जो कर्मरूपी न कुठार होगा,
तो कौन निष्कण्टक पार होगा।

इस प्रकार द्रुतबिलम्बित, मन्दाक्रान्ता, मत्तागयन्द इत्यादि छन्द वर्ग वृत्त के अन्तर्गत आते हैं।

## अभ्यास

(1) छन्द किसे कहते हैं ? यति, गति और तुक का क्या अभिप्राय है ?
(2) यगण, मगण तथा नगण के स्वरूप बताओ।

॥ समाप्त ॥

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु